तक़रीज़

हज़रत अक़्दस मुफ़्ती महमूद हसन साहब दारुल उलूम देवबन्द
शैख़ुल हदीस हज़रत अक़्दस मुफ़्ती अहमद साहब पालनपुरी
शैख़ुल हदीस हज़रत अक़्दस मुफ़्ती याह्या साहब अहमदाबाद

www.nasirbooks.com

दाअ़ई की रूहानी सिफ़ात

मुरत्तिब

मौलाना अबूल कलाम पालनपुरी

मुतरज्जिम

अबुल-फ़ैज़

प्रकाशक

नसीर बुक डिपो

हज़रत निज़ामुद्दीन, नई दिल्ली 110013

नाम : दाअ़ई की रूहानी सिफ़ात
मुरत्तिब : मौलाना अबुल कलाम पालनपुरी
पेज : 112
क़ीमत :
सन इशाअत : 2012
नाशिर : नसीर बुक डिपो
हज़रत निज़ामुद्दीन
मई दिल्ली 110013

फ़ेहरिस्त मज़ामीन

1. तक़रीज़: हज़रत अक़दस मौलाना मुफ़्ती याह्रया साहिब दामत बरकातहम — 9
2. तक़रीज़: हज़रत अक़दस मौलाना मुफ़्ती आदम साहब पालनपुरी शेखुलहदीस व सदर मुफ्ती दारूल उलूम काकोशी — 11
3. फ़क़ीहुन्नफ़्स हज़रत अक़दस मुफ़्ती महमूद हसन साहब बुलंदशहरी, खादिम दारूल इफ़्ता जामिया दारूल उलूम देवबंद — 12
4. अर्ज़े-मरत्तिब — 13

पहली सिफ़त

5. तवाज़अ-आजिज़ी-इंकसारी — 15
6. आप सल्ल॰ की तवाज़अ, आजिज़ी और इंकसारी — 15
7. आप सल्ल॰ की तवाज़अ — 16
8. हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ की तवाज़अ, आजिज़ी और इंकसारी — 16
9. हज़रत उमर रज़ि0 की तवाज़अ, आजिज़ी और इंकसारी — 17
10. हज़रत उमर रज़ि0 की तवाज़अ — 17
11. हज़रत उस्मान रज़ि॰ की तवाज़अ, आजिज़ी और इंकसारी — 18
12. हज़रत उस्मान रज़ि॰ की तवाज़अ — 18
13. हज़रत अली रज़ि॰ की तवाज़अ, आजिज़ी और इंकसारी — 19
14. हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ि॰ की तवाज़अ — 19
15. हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ि॰ की तवाज़अ, आजिज़ी और इंकसारी — 20
16. हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ि॰ की तवाज़अ — 20
17. हज़रत इमाम ज़ैनुलआबिदीन रज़ि॰ की तवाज़अ, आजिज़ी और इंकसारी — 21
18. हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह॰ की

तवाज़ुअ, आजिज़ी और इंकसारी 21
19. हज़रत अली रज़ि० फ़रमाते हैं कि तवाज़ुअ की बुनियाद तीन चीज़ें हैं 22
20. हज़रत मौलाना रशीद अहमद साहिब गंगोही की तवाज़ुअ 22
21. हज़रत मुफ़्ती शफ़ी साहिब की तवाज़ुअ 23
22. फ़ायदा 23

दूसरी सिफ़त

23. अफ़ू दरगुज़र करना यानि माफ़ करना 25
24. हज़रत आयशा रज़ि० का फ़रमान 25
25. आप सल्ल० का अफ़ू यानि दरगुज़र करना 25
26. हुज़ूर सल्ल० का अपने ऊपर जादू करने वाले को दरगुज़र करना 26
27. हुज़ूर सल्ल० का ज़हर देने वाली औरत को दरगुज़र करना 27
28. आप सल्ल० की सहाबा को अफ़ू दरगुज़र करने की तालीम देना एक सहाबी के मस्जिद में पेशाब करने पर 28
29. हज़रत इमाम ज़ैनुल आबिदीन रह० का अफ़ू दरगुज़र करना 29
30. हज़रत अली रज़ि० का अफ़ू यानि दरगुज़र करना 30
31. फ़ायदा 30

तीसरी सिफ़त

32. हल्म-बर्दबारी-बर्दाश्त करना 32
33. आप सल्ल० का हल्म यानि बर्दबारी और बर्दाश्त करना 32
34. आप सल्ल० का हल्म और बर्दबारी 33
35. हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० का एक आदमी के बुरा भला कहने पर बर्दाश्त न करना और हुज़ूर सल्ल० का नाराज़ होकर चले जाना 33
36. हज़रत उस्मान रज़ि० का हल्म और बर्दाश्त करना 34
37. हज़रत शाह ईस्माइल शहीद रह. की बर्दबारी और बर्दाश्त करना 36
38. हज़रत अबू हनीफ़ा का हल्म और बर्दाश्त करना 37
39. फ़ायदा 38

चौथी सिफ़त

40. ज़ुह्द यानि दुनिया से बेरग़बती इख़्तियार करना 40

41. आप सल्ल॰ का ज़हद यानि दुनिया से बेरग़बती करना 41
42. हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ का ज़हद और शहद मिला पानी देख कर रोना 42
43. हज़रत उमर रज़ि॰ का दुनिया से बेरग़बती इख़्तियार करना 43
44. हज़रत उमर रज़ि॰ का ज़हद, बारह पैबंद लगी हुई लुंगी बाँधकर बयान करना 43
45. हज़रत उस्मान रज़ि॰ का ज़हद, दुनिया से बेरग़बती करना 43
46. हज़रत अली रज़ि॰ का ज़हद, पैबंद लगी हुई लुंगी का बाँधना 44
47. हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ि॰ का ज़हद, पाँच हज़ार का वज़ीफ़ा मिलते ही ख़र्च कर देना 44
48. हज़रत मसअ़ब बिन उमैर का ज़हद, दुंबे की खाल को अपनी कमर पर बाँधना 45
49. मुल्क शाम के गर्वनर हज़रत अबू उबैद बिन जर्राह का दुनिया से बेरग़बती करना 46
50. इमाम अबू हनीफ़ा रह॰ का क़ाज़ी का ओहदा कबूल करने से इंकार 48
51. हज़रत इब्राहीम अदहम रह॰ का दुनिया की बादशाहत का छोड़ना 48
52. मौलाना क़ासिम साहब रह॰ का रुपयों की थैली के हदिया को वापिस करना 49
53. फ़ायदा 50

पाँचवी सिफ़त

54. किसी को हक़ीर समझना 53
55. आप सल्ल॰ का अब्दुल्लाह इब्ने मक्तूम को जो अंधे थे सिर्फ़ जवाब न देने पर क़ुरआन शरीफ़ की आयत का उतरना 54
56. हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ि॰ को हक़ीर समझने वालों का ईमान से महरूम हो जाना 55
57. हज़रत शेख़ अब्दुल्लाह उंदलसी रज़ि॰ जो हज़रत जुनैद बग़दादी रह॰ और इमाम शिबली रह॰ के उस्ताद हैं उनका सिर्फ़ बुत पूजने वाले काफ़िरों को हक़ीर समझना जिसकी वजह से एक साल तक सुअर चराना 56

58. हज़रत सुफ़ियान सूरी का एक रोने वाले को सिर्फ़ रियाकार है दिल में गुमान करना जिसकी वजह से पाँच महीने तक तहज्जुद की तौफ़ीक़ से महरूम हो जाना 58
59. हज़रत जुनैद बग़दादी का फ़रमान 59
60. मौलाना अशरफ़ अली थानवी रह० का अपने आप को हक़ीर और कमतर समझना 59
61. हुज़ूर सल्ल० का ऐसे शख़्स को पहलू में बिठाकर खिलाना जिनको लोग हक़ीर समझते थे 60
62. हज़रत ज़ैद रज़ि० अल्लाह को आयत उतारनी पड़ी 60
63. फ़ायदा 61

छठी सिफ़त

64. मामलात में तक़वा यानि हलाल पाकीज़ा रोज़ी हासिल करना और हराम रोज़ी से बचना 63
65. हलाल रोज़ी इल्म और आमाल के वजूद में आने का ज़रिया बनती है। इमाम अहमद बिन हंबल रह० एक आयत से सौ मसाइल का हल निकालना और पूरी रात इबादत करना 64
66. हुज़ूर सल्ल० का तक़वा, शक वाली खजूर खाने से पूरी रात नींद न आना 66
67. हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ का तक़वा, शक वाले खाने को उँगली डालकर कै करना 67
68. हज़रत उमर रज़ि० का तक़वा, शक वाले दूध को उँगली डालकर कै करना 67
69. हज़रत अली रज़ि० का तक़वा, दरहम परखने वाले के कुँए पर से पानी न पीना 68
70. सहाबा कराम रज़ि० का माल के बारे में अनोखा झगड़ा 68
71. बनी इस्राईल के एक शख़्स का समुंद्र पार करके हज़ार दीनार की अदायगी के लिए जाना 69
72. इमाम अबू हनीफ़ा रह० मामलात में तक़वा और शक की वजह से 30 हज़ार दरहम का सदक़ा कर देना 71
73. हज़रत दाऊद ताई रह० का लोगों की कमाईयों की आमदनी ठीक न होने की वजह से लोगों से हदिया लेना छोड़ देना 72

74. मौलाना अशरफ़ अली थानवी रह० कर मामलात में तक़्वा और रेल में सामान का टिकट लेने का एहतेमाम करना 72
75. इमाम अबू हनीफ़ा रह० का मामलात में तक़्वा और सात साल तक बकरी का गोश्त न खाना 73
76. इमाम अबू-हनीफ़ा का तक़्वा और ढाई लाख का सदक़ा कर देना 74
77. मौलाना अशरफ़ अली थानवी रह० का अपने ख़लीफ़ा से सिर्फ़ बच्चे की आधी टिकट लेने की वजह से ख़िलाफ़त वापिस ले लेना 75
78. फ़ायदा 76

सातवीं सिफ़त

79. अख़्लाक़े-अज़ीमा यानि तकलीफ़ देने वाले को सिर्फ़ माफ़ नहीं करना बल्कि माफ़ करके ऊपर से उसके साथ अहसान का मामला करना 80
80. मुसलमान को तकलीफ़ देना बैतुल्लाह को गिराने से ज़्यादा सख़्त गुनाह है 80
81. अख़्लाक़ तीन तरह के होते हैं 81
82. अख़्लाक़े-हस्ना किसको कहते हैं 81
83. अख़्लाक़े-करीमा किस कहते हैं 82
84. अख़्लाक़े-अज़ीमा किसको कहते हैं 82
85. आप सल्ल० के अख़्लाक़ के अख़्लाक़े-अज़ीमा और आप के दुश्मन मुनाफ़िक़ों के सरदार अब्दुल्लाह बिन अबी की नमाज़ जनाज़ा पढ़ाना और एक हज़ार मुनाफ़िक़ का मुसलमान हो जाना 82
86. हज़रत उमर रज़ि० के अख़्लाक़े अज़ीमा और जब्ला बिन अब्हम के निकाह में अपनी बेटी देने के लिए तैयार हो जाना 84
87. हज़रत अमीर माविया रज़ि० के अख़्लाक़े-अज़ीमा और वायल बिन हजर के जूती न देने के वावजूद और ऊँटनी पर ना बैठाने के बावजूद अपने तख़्ते-शाही पर बैठाना 86
88. इमाम अबू हनीफ़ा के अख़्लाक़े अज़ीमा और एक शराबी मोची का फ़क़ीह बन जाना 88
89. फ़ायदा 88

आठवीं सिफ़त

89. तवक्कल यानि अल्लाह पर भरोसा करना 92
90. हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का अल्लाह पर तवक्कल 93
91. आप सल्ल॰ का अल्लाह पर तवक्कल 93
92. हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ का अल्लाह पर तवक्कल 94
93. हज़रत अली रज़ि॰ का अल्लाह पर तवक्कल 94
94. हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि॰ का अल्लाह पर तवक्कल 95
95. हज़रत हसन बिन सुफ़ियान रज़ि॰ का अल्लाह पर तवक्कल करना और गर्वनर की तरफ़ से दीनार का हदिया मिलना 96
96. एक बुज़ुर्ग का अल्लाह पर तवक्कल और लालच करने की वजह से हलाल रोज़ी से महरूम हो जाना 97
97. फ़ायदा 98

नौवीं सिफ़त

98. दूसरों के ऐब को छिपाना 102
99. हज़रत उमर रज़ि॰ का एक बूढ़े मियाँ के ऐब को छिपाना और बूढ़े मियाँ का दोबारा इस काम को न करना 102
100. हज़रत उमर रज़ि॰ का एक साथी के ऐब को छिपाने की वजह से पूरे मजमाअ को वज़ू कराना 104
101. फ़ायदा 105

दसवीं सिफ़त

102. दूसरों को अपने से अफ़ज़ल समझना और अपनी तारीफ़ करने वाले पर गुस्सा हो जाना 107
103. हज़रत उमर रज़ि॰ का हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ को मुश्क से ज़्यादा ख़ुश्बू वाला और अपने आप को घर वालों के ऊँट से ज़्यादा नीचा समझना 107
104. हज़रत अली रज़ि॰ का अपनी तारीफ़ करने वाले पर गुस्सा हो जाना 108
105. फ़ायदा 109

तक़रीज़

हज़रत अक़दस मौलाना मुफ़्ती याहिया साहिब दामत बरकातहम

उस्ताद हदीस व फ़िक़ाह दारूल उलूम अलफ़ज़ल जोधापुर अहमदाबाद

बैयत इज़ हज़रत अक़दस मुहीय्युलसुन्नत मौलाना शाह अबरार उल हक़ साहिब रहमतुल्लाह अलिहि हरदोई

छठी सदी ईसवीं में जब इंसानियत दम तोड़ चुकी थी, हर तरफ़ तारिकियों का दौर दौर था, तहज़ीब व तमद्दुन की शहराह से बहुत दूर एक क़ौम किसी ऐसे रहनुमा की मतलाशी थी जो उन्हें अंधेरों की दुनिया से निकाल कर उजालों का रास्ता दिखाए, सिसकते माहौल से निजात दिलाकर पुरअमन फ़िज़ा अता करे। चुनाँचे सरवरे आलम सल्ल॰ की बाअ़स होती है और आलमे-तारीकी में तौहीद का चिराग़ रौशन होता है और दिलों की बेचैनी सकून व तमानियत से बदली जाती है और आपकी मेहनत से दाअ़ई के औसाफ़ से मुतसिफ़ एक जमाअत तैयार होती है। जिन्होंने दुनिया को इस्लाम जैसी अज़ीम नेअ़मत से आरास्ता और पैरास्ता किया लेकिन जैसे जैसे नबूवत की रौशनी से दूरी बढ़ती जाती थी इस्लाम और उसके अहकमात से ग़फ़लत परदाज़ी में इज़ाफ़ा होता जाता था। चूँकि इस्लाम अब्दी मज़हब है इसलिए अल्लाह तआ़ला हस्बे ज़रूरत किसी मुजद्दिद को पैदा करता और दीन की गोया तज्दीद करता था, चुनाँचे तेरहवीं सदी हिजरी में दावत के अहम काम के लिए अल्लाह तआ़ला ने हज़रत मौलाना इल्यास रह॰ को मुंतख़िब किया दाअ़ई के औसाफ़ से लैस हज़रत मौलाना इल्यास साहब ने जहद मुसलसल और सअ़ई

पेहम की और पूरी दुनिया में दीनी इंकिलाब की एक शक्ल पैदा की और मर्दुमसाज़ी भी की जिसके नतीजे में यह काम आज तक जारी और सारी है। इसके मुफ़ीद नताईज बरामद हो रहे हैं। यह मुफ़ीद नताईज उसी वक़्त तक बरामद होते रहेंगे जब तक दाअ़ई दावत व तब्लीग़ के उसूल पर अमल पैरा होंगे और उसके औसाफ़ से मुतस्सिफ़ रहेंगे। अज़ीज़म मौलवी अबूकलाम सल्लमाहु ने उसकी अहमियत के पेशनज़र चंद औसाफ़ को जो हर आदमी के लिये अमूमन और दाअ़ई के लिये खुसूसन ज़रूरी हैं किताब में जमा किये हैं। अहक़र ने जस्ता जस्ता चंद मुक़मात को देखा मौसूफ़ ने माअ़तबर किताबों के हवाले से अच्छे अंदाज़ में अहादीस और वाक़िआत जमा किये हैं अल्लाह तआ़ला मौसूफ़ की काविश क़बूल फ़रमा कर क़ाबिले-सताईश और बाइसे-निजात बनाये।

(आमीन)

(मुफ़्ती) मौहम्मद याह्या साहिब कड़ी (दामतबरकातहम)

तक़रीज़

हज़रत अक़दस मुफ़्ती आदम साहब पालनपुरी शेख़ुल हदीस व सदर मुफ़्ती दारूल-उलूम काकोशी

ख़लीफ़ा मजाज़ पीरे-तरीक़त रहबरे-शरीयत मुफ़क्किरे-इस्लाम हज़रत मौलाना क़मरुज़्ज़मा साहब दामत व बरकातहम इलाहाबादी

بسم الله الرحمٰن الرحيم

الحمد لله و حدهٗ والصلوة والسلام علىٰ من لانبى بعدهٗ وعلىٰ اله وصحبه

बिसमिल्लाह हिर्रहमानर्रहीम

अल्हम्दुलिल्लाहि वहादहू वस्सलातु वस्सलामु अला मिन्-ला नबी बाअदहु व अला आलिहि सहाबाहु

अहक़र ने यह किताब "दाअ़ई की रुहानी सिफ़ात" निस्फ़ से ज़ायद बिलतरतीब बग़ौर पढ़ी और बाक़ी हिस्सा तायराना नज़र से देखा अहक़र का दिल इसको पढ़कर बहुत ही ज़्यादा ख़ुश हुआ।

सब बातें निहायत ही अहम हैं, और मुस्तनद हवालों के साथ लिखी हैं, अब इन सिफ़ात को अपने अंदर पैदा करने के लिये पूरी यकसूई के साथ दिल की गहराई से अपने को इन सिफ़ात का मोहताज समझकर बार बार पढ़ना ज़रूरी है। इन रूहानी सिफ़ात से दाअ़ई अल्लाह तआ़ला का मक़बूल बंदा बन जायेगा और लोगों पे उसकी बातों का असर भी बहुत ज़्यादा होगा। अल्लाह तआ़ला हम सब पढ़ने वालों में रूहानी सिफ़ात पैदा फ़रमा दे। आमीन।

फ़क़त व सलाम

(मुफ़्ती) आदम (साहब) भीलोन वाले

मदरसा नज़ीरिया मुक़ाम कोशी, 6 शव्वाल सन 1431 हिजरी

तक़रीज़

फ़क़ीहुन्नफ़्स हज़रत अक़दस मुफ़्ती महमूद हसन साहिब बुलंदशहरी
ख़ादिम दारूल इफ़्ता जामिया दारूल उलूम देवबंद

تبارک الّذی نزّل الفرقان علی عبده لیکون للعلمین نزیراه.
وجعل رسوله داعیاالیه باذنه وسرا جامنیرًا
والصلوة والسلام علی سیدنا محمد ابن عبدالله بشیرًاونزیرًا وبعد

तबारकल्लज़ी नज़्ज़ालल्फ़ुरकान अला अब्दिहि लि-यकूना लिलआलिमीन नज़ीरा।
वजअल रसूलाहू दाइया इलिहि बिइज़निहि व सा जामिनीरा
वस्सलातु वस्सलामु अला सय्यदना मुहम्मद इब्ने अब्दुल्लाह बशीरन व नज़रीन व बाअ़द

"दाअ़ई की रूहानी सिफ़ात" किताब को देखा, मौलाना अबूकलाम साहब पालनपुरी ने मुस्तनद हवालों से किताब को तरतीब दी है।

किताब के हुस्ने-अंदाज़ और हुस्ने-तरतीब से खुशी हुई।

अल्लाह पाक किताब के नफ़ा को आम व ताम फ़रमाये, क़बूलियते-तामा से नवाज़े।

उम्मीद है कि इंशाअल्लाह उम्मत को फ़ायदा कसीर पहुंचेगा।

फ़कत हाज़ा मा कुतुबुहु अहक़र अज़्मन अल्अब्द
महमूद हसन बुलंदशहरी ग़फ़रुल्लाहू
वलवालिदियाह व अहसन इलिहा व इलिहि
ख़ादिम दारूल इफ़्ता जामिया दारूल उलूम देवबंद
19 शव्वाल अल मुकर्रम सन् 1431 हिजरी
यौम अल अरबाअ अल मवाफ़िक़ 29/9/2010

अर्ज़े-मरत्तिब

नाहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलीहिलकरीम

'अम्मा-बाअ़द

नीचे लिखे हुए मज़मून का अव्वलीन मुख़ातिब ख़ुद यह राक़िमुलहरूफ़ है।

दावत की मेहनत बहुत ऊँची मेहनत है दावत की मेहनत को उम्मुलआमाल भी कहा गया है यानि तमाम आमाल की माँ और ऊँची मेहनत के लिये ऊँचे औसाफ़ का होना ज़रूरी है इसलिये दावत की मेहनत के लिये अंबिया अलैहिस्सलाम को भेजा गया क्योंकि अंबिया हर सिफ़ात में मुमताज़ होते हैं और अंबियाकराम की तरबियत तो बराहेरास्त अल्लाह खुद करता है। इसी वजह से अक्सर अंबियाकराम से बकरियां चराई गईं ताकि तवज़ुअ पैदा हो जाये। अब अंबियाकराम का सिलसिला हमारे नबी सल्लललाहु अलैहि व सल्लम पर आकर ख़त्म हो गया है। अब कोई नबी आने वाला नहीं है, इसलिए नबूवत वाला काम अल्लाह पाक ने हुज़ूर सल्ल॰ के सदक़ा व तुफ़ैल इस उम्मत को दिया है। अब हम कमज़ोर हैं और हमारी ज़िंदगियां सिफ़ात से कोसों दूर हैं और काम करने से बाज़ मर्तबा नफ़ा की जगह नुक़सान हो जाता है। इसलिये बंदा के ख़्याल में आया कि अल्लाह वालों की इम्तियाज़ी सिफ़ात और इबरत आमूज़ वाक़िआत एक जगह जमा किया जावें ताकि हम जैसे कम हिम्मत लोगों के लिये हिम्मत का काम देवे और उनको बार बार

पढ़ने और याद रखने से दिल में कुछ ग़ैरत पैदा हो इसलिये अपनी वुसअ़त के मुताबिक़ यह चंद बिखरे हुए वाक़िआ़त जमा कर दिये हैं काश यह हक़ीर मेहनत बारगाहे इलाही में शर्फ़े-क़बूलियत हासिल करे और इस नाकारा और सभी पढ़ने वाले के लिये इस्लाह और दीनी फ़ायदा के हुसूल का ज़रिया बने। (आमीन)

बंदा अबुलकलाम पालनपुरी (वाधना)
ख़ादिम मदरसा मदीनातुल इस्लाम,
मदीना मस्जिद बोटाद, भाव नगर (गुजरात)

बिस्मिल्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

पहली सिफ़त

तवाज़अ–आजिज़ी–इंकसारी

अल्लाह तआ़ला के दरबार में मक़बूलियत की सिफ़ात में सबसे अहम सिफ़त तावाज़अ, आजिज़ी और इंकसारी है यानि आदमी ख़ुद अपने को दिल से कमतर समझता रहे और शोहरत की गर्ज़ से कोई काम न करे।

हदीस शरीफ़

जनाब मुहम्मद रसूल सल्लललाहू अलैहि व सल्लम का पाक इर्शाद है कि जो शख़्स अल्लाह की ख़ुशी के लिये अपने को कमतर समझता है अल्लाह उसे सर बुलंदी और इज़्ज़त अंता फ़रमाता है।

(मिश्कात जिल्द 2 सफ़हा 434)

आप सल्ल॰ की तवाज़अ, आजिज़ी और इंकसारी

हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रह॰ फ़रमाते है कि एक मर्तबा जनाब मुहम्मद सल्लललाहू अलैहि व सल्लम सहाबा की एक जमात

के साथ तशरीफ़ ले जा रहे थे हज़रात सहाबाकराम ने धूप से बचाव की गर्ज़ से आप के ऊपर चादर से साया कर दिया, आप सल्लललाहू अलैहि व सल्लम ने साया महसूस फ़रमाकर सरे-मबुारक ऊपर उठाया तो देखा कि चादर से साया किया गया है तो आपने फ़रमाया कि इसे हटा दो और खुद अपने हाथ से चादर खींच कर नीचे गिरा दी और इर्शाद फ़रमाया कि मैं भी तुम जैसा एक इंसान हूँ।

(मजमरअअज़्ज़ाइद जिल्द 9 सफ़हा 21, हयातुस्सहाबा जिल्द 2 सफ़हा 705)

आप सल्ल॰ की तवाज़अ

हज़रत उरवा रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि एक आदमी ने हज़रत आयशा रज़ि॰ से पूछा कि क्या हुज़ूर सल्लललाहू अलैहि व सल्लम अपने घर में कुछ किया करते थे? हज़रत आयशा रज़ि॰ ने फ़रमाया हाँ, हुज़ूर सल्लललाहू अलैहि व सल्लम अपनी जूती खुद गाँठ लिया करते थे अपने कपड़े खुद सी लिया करते, आप घर मे इसी तरह काम किया करते थे जिस तरह आप लोग करते हैं।

(अलबादिलियत व अलनिहाया जिल्द 6 सफ़हा 4)

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ की तवाज़अ, आजिज़ी और इंकसारी

ख़लीफ़ा अव्वल हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ ख़लीफ़ा बनने से पहले मोहल्ला वालो की बकरियों को दूध दूहा करते थे, जब आप ख़लीफ़ा बन गये तो मोहल्ले की एक बच्ची ने कहा कि अबूबक्र अब हमारे जानवरों का दूध कहाँ निकालेंगे? हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ को जब यह मालूम हुआ तो आपने फ़रमाया कि क्यों नहीं मैं अब भी

तुम्हारे लिये दूध दूहा करूँगा और मुझे उम्मीद है कि मेरी नई मसरूफ़ियात मेरे पहले अख़्लाक़ में कोई तब्दीली न करेगी, चुनाँचे आप ख़िलाफ़त में ख़लीफ़ा-ए-वक़्त होने के बावजूद मोहल्ला वालों के लिये दूध दूहा करते थे।

(अलइल्म व अल उल्मा, सफ़हा 146, मुसन्निफ़ शेख़ अबूबक्र अलजज़ायरी, मदीना मुनव्वराह)

हज़रत उमर रज़ि॰ की तवाज़ुअ, आजिज़ी और इंकसारी

हज़रत उमर रज़ि॰ के बारे में हज़रत क़तादा रज़ि॰ बयान करते हैं कि आप अमीरुलमोमीनीन होने के बावजूद ऊनी जुब्बा इस्तेमाल करते थे, जिसमें चमड़े के पैबंद लगे होते थे और अपने कंधे पर कोड़ा रखे हुए खुद बाज़ार घूमते थे और लोगों की ग़लतियों पर सरज़निश करते और कहीं खजूरों की गुठलियाँ या सूत वग़ैरह पड़ा हुआ मिलता तो उसे उठा लेते और किसी घर में डाल देते ताकि वह घर वाले उससे फ़ायदा उठायें। एक मर्तबा लोगों ने देखा कि अपने कंधे पर मश्क उठाये जा रहे हैं लोगों के ताज्जुब पे आपने फ़रमाया कि मैं अपने नफ़्स को ज़लील करने के लिये ऐसा किया, इसलिये कि मुझे तकब्बुर का शुब्हा हो गया था।

(अलइल्म व उल्मा सफ़हा *146*, मुसन्निफ़ शेख़ अबूबक्र अलजज़ायरी)

हज़रत उमर रज़ि॰ की तवाज़ुअ

हज़रत हसन रज़ि॰ कहते हैं कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि॰ एक सख़्त गरम दिन में सिर पर चादर रखे हुए बाहर निकले उनके पास से एक नौजवान गधे पे गुज़रा तो हज़रत उमर रज़ि॰ ने

फ़रमाया ऐ नौजवान मुझे अपने साथ बिठा ले। वह नौजवान कूद कर गधे से नीचे उतरा और उसने अर्ज़ किया ऐ अमीरुल मोमिनीन आप सवार हो जायें। हज़रत उमर रज़ि॰ ने फ़रमाया नहीं पहले तुम सवार हो जाओ मैं तुम्हारे पीछे बैठ जाऊँगा, तुम मुझे नरम जगह बिठाना चाहते हो और खुद सख़्त जगह बैठना चाहते हो, चुनांचे वह नौजवान गधे पर आगे बैठा और हज़रत उमर रज़ि॰ उसके पीछे। आप जब मदीना मुनव्वराह में दाख़िल हुए तो आप पीछे बैठे हुए थे और सब लोग आप को देख रहे थे। *(कंज़ुल अमाल, जिल्द 4, सफ़हा 417)*

हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि॰ की तवाज़अ, आजिज़ी और इंकसारी

हज़रत हसन बसरी रह॰ फ़रमाते है कि मैंने हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि॰ को ख़िलाफ़त के ज़माने में ख़लीफ़ा होने के बावजूद मस्जिदे-नबवी में बे-तकल्लुफ़ आराम करते हुए देखा है, जब आप वहाँ से उठते तो सहन की कंकरियों के निशान आप के बदन पर होते थे तो हम उन की तरफ़ ईशारा करके कहते थे कि यह हैं अमीरूल-मोमिनीन।

(अलइल्म व अल उल्मा, सफ़हा 146, मुसन्निफ़ शेख़ अबूबक्र अलजज़ायरी, मदीना मुनव्वराह)

हज़रत उस्मान रज़ि॰ की तवाज़अ

हज़रत अब्दुल्लाह रोमी रह॰ कहते है कि हज़रत उस्मान रज़ि॰ रात को अपने वज़ू का इंतिज़ाम खुद किया करते थे। किसी ने उन से कहा कि अगर आप अपने ख़ादिम से कह दें तो वह इंतिज़ाम कर

दिया करेगा। हज़रत उस्मान रज़ि॰ ने फ़रमाया रात उनकी अपनी है, जिसमे वह आराम करते हैं। *(कंजुल आमाल जिल्द 5 सफ़हा 48)*

हज़रत मेमून इब्ने मेहरान रह॰ कहते हैं मुझे हमदानी ने बताया कि मैंने हज़रत उस्मान रज़ि॰ को देखा कि आप ख़च्चर पर सवार हैं और उन का गुलाम नायल उनके पीछे बैठा हुआ है, हालाँकि उस वक़्त आप ख़लीफ़ा थे। *(हुलियातुल औलिया जिल्द 1, सफ़हा 60)*

हज़रत अली रज़ि॰ की तवाज़ुअ, आजिज़ी, इंकसारी

हज़रत अली रज़ि॰ को बाअज़ लोगों ने देखा कि आप ने बाज़ार से घर के लिये गोश्त ख़रीद कर अपनी चादर में रख दिया और तशरीफ़ ले चले, साथी ने कहा कि लाइये हज़रत इसे उठा लूँ आप ने फ़रमाया नहीं घर वाला ही उसे उठाकर ले जाने का ज़्यादा हक़दार है। *(अहयाउलउलूम जिल्द 3 सफ़हा 214)*

हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ि॰ की तवाज़ुअ

हज़रत अबू क़लाबा रह॰ कहते हैं कि एक आदमी हज़रत सलमान रज़ि॰ के पास आया। हज़रत सलमान रज़ि॰ आटा गूँध रहे थे। उस आदमी ने कहा यह क्या है कि आप खुद ही आटा गूँध रहे हैं। उन्होंने फ़रमाया आटा गूँधने वाले ख़ादिम को हमने किसी काम के लिये भेज दिया, इस लिये हम ने इसे अच्छा न समझा कि हम उसके ज़िम्मे दो काम लगा दें। *(हुलियातुल औलिया जिल्द 1 सफ़हा 201)*

हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ि॰ की तवाज़अ, आजिज़ी

हज़रत साबित बिनानी रह॰ बयान करते हैं कि जब हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ि॰ मदाइन शहर के गर्वनर थे तो एक शामी शख़्स आया जिसके पास भुस का गट्ठर था। हज़रत सलमान रज़ि॰ उधर से अजमी लिबास पहने हुए गुज़र रहे थे, उस शख़्स ने आपको पुकारा कि मेरा बोझ ज़रा लेकर चलो, उसने समझा होगा कि यह कोई मज़दूर है, हज़रत सलमान रज़ि॰ ने वह सामान उठा लिया और लेकर चले, जब लोगों ने देखा और पहचाना तो कहने लगे अरे यह तो हमारे गर्वनर साहिब हैं, उस शामी ने भी माअ़ज़रत की कि हज़रत मुझे यह पता नहीं था, मगर हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ि॰ ने फ़रमाया कि कोई बात नहीं मैं तुम्हारे घर तक सामान पहुँचाऊँगा। *(अलइल्म व अल उल्मा, सफ़हा 146, मुसन्निफ़ शेख़ अबूबक्र अलजज़ायरी, मदीना मुनव्वराह, हयातुस्सहाबा जिल्द 2 सफ़हा 716)*

हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ि॰ की तवाज़अ

हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ि॰ बाज़ार में गुज़र रहे थे और उनके सिर पर लकड़ियों का एक गट्ठा रखा था। किसी ने उनसे कहा कि आप ऐसा क्यों कर रहे हैं हालँकि अल्लाह ने आप को इतना दे रखा है कि आप को ख़ुद उठाने की ज़रूरत नहीं है आप तो दूसरों से उठवा सकते हैं। फ़रमाया कि मैं अपने दिल से तकब्बुर

निकालना चाहता हूँ, क्योंकि मैंने हुज़ूर सल्ल॰ को यह फ़रमाते हुए सुना है कि वह आदमी जन्नत में नहीं जा सकेगा जिसके दिल में राई के दाने के बराबर भी तकब्बुर होगा।

(अलतरग़ीब व अलततहीब जिल्द 4 सफ़हा 345)

हज़रत इमाम जैनुलआबिदीन रज़ि॰ की तवाज़ह, आजिज़ी और इंकसारी

हज़रत इमाम ज़ैनुलआबिदीन रज़ि॰ की वफ़ात हुई तो आप को ग़ुस्ल देने वालों ने आप की कमर के ऊपर काले काले धब्बे देखे तो घर वालों से पूछा कि यह कैसे निशान हैं तो लोगों ने बताया कि यह उस आटे के थैले के निशान हैं जिन्हें हज़रत इमाम ज़ैनुलआबिदीन रज़ि॰ रात के वक़्त कमर पर लाद कर ले जाते थे और मदीना के फ़क़ीरों को तक़सीम फ़रमाया करते थे।

(अलइल्म व अल उल्मा, सफ़हा 146, मुसन्निफ़ शेख़ अबूबक्र अलजज़ायरी, मदीना मुनव्वराह)

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह॰ की तवाज़अ, आजिज़ी और इंकसारी

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह॰ का पास एक शख़्स रात में मेहमान हुआ। आप चिराग़ की रोशनी में कुछ लिख रहे थे, इतने में चिराग़ बुझने लगा मेहमान ने कहा कि लाईये मैं इसे ठीक कर दूँ और इसमें तेल डाल दूँ। हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह॰ ने जवाब दिया कि मेहमान से ख़िदमत लेना अच्छी बात नहीं है।

मेहमान ने कहा कि हज़रत फिर किसी गुलाम को आवाज़ दीजिये वह चिराग़ दुरूस्त कर लायेगा। आप ने फ़रमाया कि नहीं वह अभी तो सोया है उसकी नींद कच्ची है। फिर आप ख़ुद उठे और शीशी से तेल निकाल कर चिराग़ में डाला और उसे दुरुस्त किया। मेहमान ने ताज्जुब से कहा कि अमीरूल मोमिनीन आप ने ख़ुद ही यह तकलीफ़ उठाई, इस पर हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह॰ ने जवाब दिया कि मैं गया तो भी उमर था और लौटा भी तो उमर ही था मेरे अंदर कोई कमी नहीं आई और सब से अच्छा आदमी अल्लाह के नज़दीक वह है जो तावाज़अ और आजिज़ी करने वाला हो।

(अहयाउलउलूम जिल्द 3 सफ़हा 214)

हज़रत अली रज़ि॰ फ़रमाते है कि तवाज़अ की बुनियाद तीन चीज़ें हैं

(1) आदमी को जो भी मिले उससे सलाम में पहल करे।

(2) मजमाअ में अच्छी जगह के बजाये खुद अदना जगह बैठने पर राज़ी हो जाये।

(3) दिखावे और शोहरत को बुरा समझे।

(कंज़ुल आमाल जिल्द 2 सफ़हा 143)

हज़रत मौलाना रशीद अहमद साहब गंगोही रह॰ की तवाज़अ

इमाम रब्बानी मौलाना रशीद गंगोही रह॰ ने एक मर्तबा सबक़ के दौरान बीच में बारिश आ जाने पर तालिबों-इल्मों के जूते तक

उठा लिये और ज़र्राह बराबर भी शर्म न फ़रमाई।

(अरवाहे सलासा सफ़हा 321)

हज़रत मुफ़्ती शफ़ी साहब रह० की तवाज़ुअ

मुफ़्ती-ए-आज़म हज़रत मौलाना मुफ़्ती शफ़ी साहब रह० का मामूल था कि अपनी इल्मी क़ाबिलियत के बावजूद किसी भी वाईज़ की तक़रीर सुनने में कोई आर (शर्म) न महसूस करते बल्कि वक़्त निकाल कर कुछ न कुछ देर के लिये वाईज़ ज़रूर सुनते, कि हो सकता है कि उसके वाईज़ में कोई नई बात मालूम हो जाये या अमल का जज़्बा पैदा हो जाये। *(मेरे वालिद मेरे शेख़ सफ़हा 194)*

फ़ायदा

इंसान के अंदर तकब्बुर घमंड, अपने आप को बड़ा समझना, दूसरों को हक़ीर यानि छोटा समझना और छोटे की ख़िदमत को ज़िल्लत की चीज़ समझना यह सब बीमारियां आमतौर से दो चीज़ों से पैदा होती हैं (1) माल की वजह से (2) इल्म की वजह से यानि अगर अल्लाह ने किसी को ज़्यादा माल अता किया है या ज़्यादा इल्म अता किया है तो मालदार ग़रीब को और इल्म वाला जाहिल को हक़ीर समझता है लेकिन ऊपर वाले वाक़िआत से मालूम हुआ कि उनमें बड़े बड़े माल वाले थे और बड़े बड़े इल्म वाले भी थे लेकिन उनके अंदर कैसी आजिज़ी और छोटापन था कि अपने आप को कुछ नहीं समझते थे। जैसा हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ि० मदाईन के गर्वनर थे लेकिन गट्ठर को बग़ैर शर्म महसूस किये उठा लिया। इसी तरह मौलाना रशीद अहमद गंगोही रह० ने अपने पास पढ़ने

वाले बच्चों के जूते तक उठा लिये। इसी तरह हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रज़ि॰ गुलाम को उठाये बग़ैर अपने हाथ से चिराग़ में तेल डाल दिया। उसके बरख़िलाफ़ आज हमारा हाल यह है कि अपने पास ज़रा सा इल्म या ज़रा सा माल आ जाये या बयान व तक़रीर करनी आ जाये तो हम अगर उस्ताद हैं तो शागिर्द की ख़िदमत को और अगर अमीर है तो मामूर की ख़िदमत को शर्म और ज़िल्लत की चीज़ समझते हैं। इसलिये इन वाक़िआत को सामने रखते हुए हम भी अपनी ज़िंदगी को बदलने की यानि आजिज़ी और इंकसारी वाली सिफ़ात आ जाये इस के लिये इरादा और कोशिश करें।

दूसरी सिफ़त

अफ़्व दरगुज़र करना यानि माफ़ करना

हदीस शरीफ़

जनाब मुहम्मद सल्लललाहू अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला अफ़्व और दरगुज़र से इंसान की इ़ज़्ज़त और सरबुलंदी में इज़ाफ़ा फ़रमाते हैं।

(अलतरग़ीब व अलतरहीब जिल्द 3 सफ़हा 307)

हज़रत आयशा रज़ि० का फ़रमान

हज़रत आयशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि आप सल्लललाहू अलैहि व सल्लम बुराई का बदला बुराई से न देते थे बल्कि अफ़्व (माफ़ी) और दरगुजर से काम लेते थे। *(शिमाइल ए तिर्मिज़ी)*

आप सल्लललाहू अलैहि व सल्लम का अफ़्व यानि दरगुज़र करना

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लललाहू अलैहि व सल्लम सबसे ज़्यादा बा-अख़लाक़ थे। एक मर्तबा आप ने मुझे किसी काम से भेजा। मैंने ऊपर से वैसे ही कहा कि अल्लाह की क़सम मैं नहीं जाऊँगा और दिल में यह था कि जिस काम का हुज़ूर सल्लल

लाहू अलैहि व सल्लम हुक्म दे रहे हैं मैं उसके लिये ज़रूर जाऊँगा, चुनाँचे मैं वहाँ से बाहर आया तो मेरा गुज़र चंद बच्चों पर हुआ जो बाज़ार में खेल रहे थे। मैं वहाँ खड़ा हो गया, अचानक हुज़ूर सल्लल लाहू अलैहि व सल्लम ने आकर पीछे से मेरी गुद्दी पकड़ ली मैंने हुज़ूर सल्ललललाहू अलैहि व सल्लम की तरफ़ देखा तो हुज़ूर सल्ल॰ हँस रहे थे। आप सल्ल॰ ने फ़रमाया ऐ छोटे से अनस जहाँ जाने को मैंने तुम्हें कहा था वहाँ गए हो? मैंने कहा कि हाँ अभी जाता हूँ। अल्लाह की क़सम मैंने हुज़ूर सल्ललललाहू अलैहि व सल्लम की नौ साल तक ख़िदमत की है (दूसरी रिवायत में दस साल है) मुझे याद नहीं कि मैंने कोई काम ग़लत कर दिया हो तो उस पर हुज़ूर सल्लल लाहू अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया हो कि तुम ने यह काम क्यों किया या कोई काम छोड़ दिया हो, तो यह फ़रमाया हो कि तुम ने यह काम क्यों नहीं किया। *(हयातुस्सहाबा जिल्द 2 सफ़हा 680)*

हुज़ूर सल्ल॰ का अपने ऊपर जादू करने वाले को दरगुज़र करना

हज़रत आयशा रज़ि0 फ़रमाती है कि हुज़ूर सल्ल॰ पर जादू हुआ था जिसके असर की वजह से आप को यह महसूस होता था कि आप अपनी बीवी के पास गए हैं लेकिन हक़ीक़त में आप गए नहीं होते थे। हज़रत सुफ़ियान रावी कहते हैं यह असर सबसे सख़्त जादू का होता है। हुज़ूर सल्ललललाहू अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया ऐ आयशा! क्या तुम्हें मालूम है कि मैंने अल्लाह से दुआ माँगी थी, वह अल्लाह ने क़बूल फ़रमा ली। मेरे पास दो फ़रिशते आए एक सिर के पास बैठ गया और दूसरा पाँव के पास। सिर वाले ने दूसरे से कहा

इन हज़रत को क्या हुआ हैं। दूसरे ने कहा इन पर जादू हुआ है। पहले ने पूछा जादू किस ने किया है। दूसरे ने कहा लुबैद बिन आसम ने जो क़बीला बनू ज़रीक का है और यहूद का हलीफ़ और मुनाफ़िक़ है। पहले ने पूछा उसने जादू किस चीज़ में किया है? दूसरे ने कहा कंघी पर और कंघी से गिरे हुए बालों पर किया है। पहले ने पूछा यह चीज़ें कहाँ हैं? दूसरे ने कहा नर खजूर के ख़ोशा के गिलाफ़ में ज़रवान कुँए के अंदर जो पत्थर रखा हुआ है उसके नीचे रखी हुई हैं। हज़रत आयशा रज़ि फ़रमाती हैं हुज़ूर सल्ल॰ उस कुँए पर तशरीफ़ ले गए और चीज़ें उसमें से निकालीं और फ़रमाया यह कुँआ वही है, जो मुझे ख़्वाब में दिखाया गया है। इस कुँए का पानी ऐसा सुर्ख़ था, जैसे मेंहदी वाले बर्तन को धोने के बाद पानी का रंग लाल होता है और उस कुँए के खजूरों के दरख़्त ऐसे वहशतनाक थे जैसे शैतानों के सिर हों। मैंने हुज़ूर सल्ललल्लाहू अलैहि व सल्लम से अर्ज़ किया यह चीज़ें आप ने लोगों को क्यों न दिखा दीं, उन्हें दफ़न क्यों कर दिया? हुज़ूर सल्ललल्लाहू अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया अल्लाह ने जादू से शिफ़ा अता फ़रमा दी है और मैं किसी के ख़िलाफ़ शर व फ़ित्ना खड़ा नहीं करना चाहता लिहाज़ा हमारे नबी सल्ल॰ ने आख़िरी वक़्त तक यह बात किसी को नहीं बताई।

(बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़, तफ़सीर इब्ने कसीर जिल्द 4 सफ़हा 574)

हुज़ूर सल्ल॰ का ज़हर देने वाली औरत को दरगुज़र करना

हज़रत जाबिर रज़ि॰ फ़रमाते है कि ख़ैबर की एक यहूदी औरत ने एक बकरी को भूना फिर उस में ज़हर मिलाया और फिर हुज़ूर

हज़रत अली रज़ि॰ का अफ़ू यानि दरगुज़र माफ़ करना

एक मर्तबा एक यहूदी ने हुज़ूर सल्ल॰ की शान में कोई गुस्ताख़ाना बुरा कल्मा कह दिया। हज़रत अली रज़ि॰ कहाँ सुनने वाले थे। तो उस यहूदी को गिरा कर उसके सीने पर चढ़ बैठे। यहूदी ने जब देखा कि अब कुछ और नहीं हो सकता तो उसने वहीं ज़मीन पर लेटे लेटे हज़रत अली रज़ि॰ के चेहरा-ए-मुबारक पर थूक दिया। हज़रत अली रज़ि॰ फ़ौरन उसको छोड़ कर अलग खड़े हो गये। किसी ने पूछा कि यह आप ने क्या किया, अब तो उसने ज़्यादा गुस्ताख़ी की, उसको और मारना चाहिए था। हज़रत अली रज़ि॰ ने फ़रमाया कि असल में बात यह है कि पहले मैंने उसको इस लिए सज़ा दी थी कि उसने नबी सल्ल॰ की शान में गुस्ताख़ी की थी इसी वास्ते में मैं उसपर चढ़ बैठा जब उसने मुझ पर थूका तो मेरे दिल में अपनी ज़ात के लिए गुस्सा पैदा हुआ कि उसने मेरे मुँह पर क्यों थूका। अपनी ज़ात का बदला लेने का जज़्बा मेरे दिल में पैदा हुआ और उस वक़्त मुझे ख़्याल आया कि नबी करीम सल्ल॰ की सुन्नत यह है कि उन्होंने अपनी ज़ात के लिए कभी किसी से बदला नहीं लिया। इसी लिए मैं उसे छोड़कर अलग खड़ा हो गया।

(इस्लाही खुत्बात जिल्द 3 सफ़हा 85)

फ़ायदा

आज हमारी यह आदत बन चुकी है कि हमारी बड़ी से बड़ी ग़लती हम को नज़र नहीं आती। कितने काम हम शरीयत के ख़िलाफ़ और उसूल के ख़िलाफ़ करते हैं। लेकिन बड़ी बड़ी तावीलें

करके दूसरों को समझा देते हैं हालांकि उसके बरख़िलाफ़ कोई दूसरा चाहे वह हमारा शागिर्द हो या हमारी दावत का साथी हो या हमारा नौकर हो और उसने हमारे काम में कुछ देर लगा दी, कुछ उल्टा नुक़सान कर दिया, भूल से कुछ तोड़-फोड़ दिया तो हम उसके माफ़ और दरगुज़र करने के बजाए उसके ऐसे झिड़कते हैं कि वह पानी पानी हो जाता है हालांकि इन वाक़िआत को पढ़ कर मालूम हुआ कि इमाम ज़ैनुलआबिदीन रह० ने अपना बच्चा मर जाने के बावजूद गुलाम को ख़ाली माफ़ नहीं किया बल्कि आज़ाद भी कर दिया और हज़रत अली रज़ि० ने थूकने वाले को उस पर क़ाबू पा जाने के बावजूद माफ़ कर दिया। इसलिए हम भी इन वाक़िआत को सामने रखते हुए अगर उस्ताद हैं तो शागिर्द और अगर दावत के अमीर या ज़िम्मेदार है तो अपने मामूर व साथियों के साथ हर काम में माफ़ी और दरगुज़र का मामला करना सीखें।

तीसरी सिफ़त

हल्म-बर्दबारी-बर्दाश्त करना

इज्तिमाअई ज़िंदगी में इंसान को लोगों की तकलीफ़ पर सबर करना पड़ता है और उस मौक़ा पर यह सबर करना इंसान की अज़मत को बुलंदी अता करता है।

हदीस शरीफ़

जनाब मुहम्मद रसूलल्लाह सल्ललालाहू अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि आदमी अपने हल्म और बर्दबारी यानि बर्दाश्त के ज़रिये से दिन के रोज़ादार और रात के इबादात गुज़ार के दर्जात को पहुँच जाता है। *(अलतरग़ीब व अलतरहीब जिल्द 3 सफ़हा 418)*

आप सल्ल॰ का हल्म और बर्दाश्त करना

हज़रत अनस रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि मैं एक मर्तबा आप सल्ल॰ के साथ जा रहा था, आप सल्ललालाहू अलैहि व सल्लम ने एक नजरानी चादर ज़ैब-तन फ़रमा रखी थी जिसके किनारे सख़्त थे अचानक एक देहाती आप सल्ल॰ के पास आया और आप की चादर को ज़ोर से पकड़ कर खींचा, मैंने उस वक़्त आप सल्ल॰ की गर्दन के ज़ाहिरी हिस्सा को देखा जिस पर सख़्ती से चादर खींचने का निशान ज़ाहिर था। फिर उस देहाती ने हुज़ूर सल्ललालाहू अलैहि व सल्लम से कहा कि ऐ मुहम्मद सल्ल॰ मुझे उस माल में से दिये जाने

को हुक्म कीजिये जो आप सल्लललाहू अलैहि व सल्लम के पास है। उस शख़्स की उस सख़्त गुस्ताख़ी के बावजूद आप सल्लललाहू अलैहि व सल्लम उसकी तरफ़ देख कर मुस्कराए और उसे हदिया देने का हुक्म फ़रमाया। *(अलतरग़ीब व अलतरहीब जिल्द 3 सफ़हा 419)*

आप सल्ल॰ का हल्म और बर्दबारी

हज़रत उमर् रज़ि॰ फ़रमाते है कि एक आदमी जिसका नाम अब्दुल्लाह और लक़ब हमार था। वह हुज़ूर सल्लललाहू अलैहि व सल्लम को घी की कुप्पी और शहद की कुप्पी हदिया में दिया करता था। जब घी और शहद वाला उनसे क़ीमत लेने आता तो उसे हुज़ूर सल्ल॰ की ख़िदमत में ले आते और अर्ज़ करते या रसूलाल्लाह सल्ल॰ इसको इसके सामान की क़ीमत दे दें। उस पर हुज़ूर सल्ल॰ सिर्फ़ मुस्कराते और कुछ न फ़रमाते फिर आप के कहने पर क़ीमत उसको दे दी जाती। एक दिन उनको हुज़ूर सल्लललाहू अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में लाया गया उन्होंने शराब पी रखी थी। उस पर एक आदमी ने कहा ऐ अल्लाह इस पर लानत भेज। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया इसे लानत न करो अल्लाह की क़सम जहाँ तक मैं जानता हूँ, यह अल्लाह और उसके रसूल से मुहब्बत करता है।

(कंज़ुल आमाल जिल्द 3 सफ़हा107)

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ का आदमी के बुरा भला कहने पर बर्दाश्त न करना और हुज़ूर सल्ल॰ का नाराज़ होकर चले जाना

हज़रत अबू-हुरैरा रज़ि॰ फ़रमाते है कि एक आदमी हज़रत

अबूबक्र सिद्दीक़ को बुरा भला कह रहा था। हुज़ूर सल्ल. भी वहाँ तशरीफ़ फ़रमा थे। हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि. का जवाब न देना हुज़ूर सल्ल. को पसंद आ रहा था और हुज़ूर सल्ल. मुस्करा रहे थे। जब वह आदमी बहुत ज़्यादा बुरा भला कहने लगा तो हज़रत अबू-बक्र सिद्दिक़ ने भी उसकी बात का जवाब दे दिया। इस पर हुज़ूर सल्ल नाराज़ होकर वहाँ से खड़े होकर चल दिये। हज़रत अबू-बक्र सिद्दीक़ रज़ि. भी पीछे चल पड़े और जाकर हुज़ूर सल्ल. से अर्ज़ किया या रसूलाल्लाह वह मुझे बुरा भला कह रहा था आप बैठे रहे जब मैंने उसकी किसी बात का जवाब दिया आप को ग़ुस्सा आ गया और आप खड़े हो गए। हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया पहले तुम्हारे साथ एक फ़रिश्ता था, जो तुम्हारी तरफ़ से जवाब दे रहा था जब तुम ने उसकी किसी बात का जवाब दे दिया तो शैतान बीच में आ गया और फ़रिश्ता चला गया और मैं शैतान के साथ नहीं बैठ सकता। फिर हुज़ूर सल्ल. ने फ़रमाया तीन बातें ऐसी हैं जो बिल्कुल हक़ हैं एक तो जिस बंदे पर ज़ुल्म किया जाए और वह अल्लाह की रज़ा की ख़ातिर उस ज़ुल्म का बदला लेने से चश्मपोशी कर ले, तो अल्लाह उसकी ज़ोरदार मदद करेंगे और दूसरे जो आदमी जोड़ पैदा करने के लिये हदिया देने का दरवाज़ा खोलता है अल्लाह उसके माल को ख़ूब बढ़ाते हैं। तीसरे जो माल बढ़ाने की नियत से माँगने का दरवाज़ा खोलता है, अल्लाह उसके माल को और कम कर देते हैं।

(हैसमी जिल्द 8 सफ़हा 190)

हज़रत उस्मान रज़ि. का हल्म और बर्दाश्त करना

हज़रत मुग़ीरा बिन शेअबा रज़ि. फ़रमाते हैं जिन दिनों में

हज़रत उस्मान रज़ि. घर में महसूर (कैद) थे मैं उनकी ख़िदमत में गया और मैंने उनसे कहा आप तमाम लोगों के इमाम हैं और यह मुसीबत जो आप पर आई है वह आप देख रहे हैं। मैं आप के सामने तीन तज्वीज़ें पेश करता हूँ उनमें से आप जौनसी चाहे इख़्तियार फ़रमा लें। या तो आप घर से बाहर आकर उन बाग़ियों से जंग करें क्योंकि आप के साथ मुसलमानों की बहुत बड़ी तादाद और बहुत ज़्यादा क़ूव्वत है और फिर आप हक़ पर हैं और यह बाग़ी लोग बातिल पर हैं या आप अपने इस घर से बाहर निकलने के लिये पीछे की तरफ़ एक नया दरवाज़ा खोल लें क्योंकि पुराने दरवाज़े पर तो यह बाग़ी लोग बैठे हुए है और इस नये दरवाज़े से चुपके से बाहर निकल कर अपनी सवारी पर बैठ कर मक्का चले जाएं क्योंकि यह बाग़ी लोग मक्का में आपका ख़ून बहाना हलाल नहीं समझेंगे। या फिर आप मुल्क शाम चले जाएं वहाँ शाम वाले भी हैं और हज़रत माविया रज़ि भी हैं। हज़रत उस्मान ने एक भी तज्वीज़ कबूल ना फ़रमाई और फ़रमाया मैं घर से बाहर निकल कर उन बाग़ियों से जंग करूँ यह नहीं हो सकता। मैं नहीं चाहता कि हुज़ूर सल्लललाहू अलैहि व सल्लम के बाद आप की उम्मत में सबसे पहले मुसलमानों का ख़ून बहाने वाला मैं बनूँ। बाक़ी रही यह तज्वीज़ कि मैं मक्का चला जाऊँ, वहाँ यह बाग़ी मेरा ख़ून बहाना हलाल नहीं समझेंगे तो मैं इसे भी इख़्तियार नहीं कर सकता। क्यों कि मैंने हुज़ूर सल्लल लाहू अलैहि व सल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना है कि क़ुरैश का एक आदमी मक्का में बेदीनी के फैलाने का ज़रिया बनेगा इसके लिए उस पर सारी दुनिया का आधा अज़ाब होगा मैं नहीं चाहता कि मैं वह आदमी बनूँ और तीसरी तज्वीज़ कि मैं मुल्के शाम चला जाऊँ वहाँ शाम (सीरिया) वाले भी हैं और हज़रत माविया भी हैं सो मैं

अपने दारूलहिजरत और हुजूर सल्ल के पड़ोस को हरगिज़ नहीं छोड़ सकता। *(अलबदाया व अलनहाया जिल्द 7 सफ़हा 211)*

हज़रत इब्ने सीरीन रह॰ कहते हैं कि क़ैद होने के ज़माने में हज़रत उस्मान रज़ि॰ के साथ उनके घर में ऐसे सात सौ हज़रात थे, अगर हज़रत उस्मान रज़ि॰ उनको इजाज़त दे देते तो वह हज़रात मार मार कर बाग़ियों को मदीना से बाहर निकाल देते। लेकिन लड़ना पसंद नहीं किया। *(इब्ने साअद जिल्द 2 सफ़हा 49)*

हज़रत शाह ईस्माइल शहीद रह॰ की बर्दबारी और बर्दाश्त करना

हज़रत शाह ईस्माइल शहीद रह॰ एक मर्तबा देहली की जामा मस्जिद में बयान कर रहे थे। बयान के बीच में एक शख़्स खड़ा हुआ और उसने कहा कि मौलाना मेरे एक सवाल का जवाब दे दो। हज़रत शाह ईस्माइल शहीद रह॰ ने पूछा कि क्या सवाल है? उसने कहा मैंने सुना है कि आप हरामज़ादा हैं, हराम की औलाद है। बयान के बीच में यह बात उसने ऐसे शख़्स से कही जो न सिर्फ़ यह कि बड़े आलिम थे बल्कि शाही ख़ानदान के शहज़ादे थे। हम जैसा कोई होता तो फ़ौरन ग़ुस्सा में आ जाता। लेकिन हज़रत शाह ईस्माइल शहीद रह॰ ने जवाब में फ़रमाया कि भाई आप को ग़लत इत्तिलाअ़ मिली है। मेरी वालिदा के निकाह के गवाह तो अब भी देहली में मौजूद हैं। *(अरवाहे सलासा सफ़हा 169 इस्लाही ख़ुत्बात जिल्द 8 सफ़हा 41)*

☆☆☆☆☆

हज़रत अबू हनीफ़ा रह. का हल्म और बर्दाश्त करना

हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा का ज़ोहर की नमाज़ के बाद रोज़ाना सोने का मामूल था एक रोज़ ज़ोहर की नमाज़ के बाद घर तशरीफ़ ले गए। बालाख़ाना पर आप का घर था, आराम करने के लिये बिस्तर पर लेट गए। इतने में किसी ने दरवाज़े पर नीचे से दस्तक दी आप उठे, बालाख़ाना से नीचे उतरे, दरवाज़ा खोला देखा कि एक साहब खड़े हैं। इमाम साहब ने उससे पूछा कि कैसे आना हुआ उसने कहा कि एक मसला मालूम करना है। इमाम साहब ने पूछा कि क्या मसला है? उसने कहा कि मैं जब आ रहा था उस वक़्त मालूम था लेकिन अब मैं भूल गया याद नहीं रहा। इमाम साहब ने फ़रमाया कि अच्छा जब याद आ जाये तो फिर पूछ लेना। आप ने उसको बुरा भला नहीं कहा, बल्कि चुपचाप ऊपर चले गए। अभी जाकर बिस्तर पर लेटे ही थे कि दोबारा दरवाज़ा पर दस्तक सुनाई दी। आप फिर उठकर नीचे तरशीफ़ लाए और दरवाज़ा खोला तो देखा कि वही शख़्स खड़ा है आप ने पूछा क्या बात है? उसने कहा कि हज़रत वह मसला मुझे याद आ गया था। आप ने फ़रमाया पूछ लो। उसने कहा अभी तक तो याद था मगर जब आप आधी सीढ़ी ही तक पहुँचे थे तो मैं वह मसला भूल गया। इमाम साहब ने फ़रमाया कि अच्छा भाई जब याद आ जाए तो पूछ लेना यह कहकर आप वापिस चले गए और बिस्तर पर लेट गए। अभी लेटे ही थे कि तीसरी मर्तबा फिर से दरवाज़ा पर दस्तक सुनाई दी आप फिर नीचे आए दरवाज़ा खोला तो वही शख़्स खड़ा है। उस शख़्स ने कहा कि हज़रत वह मसला मुझे याद आ गया। इमाम साहब ने पूछा कि

मसला क्या है? उसने कहा कि मसला यह है कि इंसान कि नजासत का यानी पख़ाना का मज़ा कैसा होता है, कड़वा कि मीठा होता है? इमाम साहब ने बहुत इत्मिनान से जवाब दिया कि अगर इंसान की नजासत यानि पाख़ाना ताज़ा हो तो उसमें मिठास होती है और अगर सूख जाए तो कड़वाहट पैदा हो जाती है। फिर उसने कहा कि क्या आपने चखकर देखा है? इमाम साहब ने फ़रमाया कि हर चीज़ का इल्म चख कर हासिल नहीं किया जा सकता बल्कि बाज़ चीज़ों का इल्म अक़्ल से किया जाता है और अक़्ल से यह मालूम होता है कि ताज़ा नजासत पर मक्खी बैठती है, सूखी पर नहीं बैठती उसे मालूम होता है कि दोनों में फ़र्क़ है वर्ना मक्खी दोनों पर बैठती।

(इस्लाही ख़ुत्बात जिल्द 8 सफ़हा 272)

फ़ायदा

इंसान को किसी की बात पर गुस्सा उस वक़्त आता है जब कि वह अपने आप को बड़ा समझने लगता है अगर कोई आदमी अपने आपको चाहे वह कितना ही बड़ा आलिम हो या कितना बड़ा मुजाहिद क्यों न हो वह यों समझे कि मेरी तो कोई हैसियत नहीं है। मैं तो गुनाहगार हूँ। मैं तो छोटा हूँ तो कभी कभी किसी की बुरी बात पर ग़ुस्सा नहीं आएगा, जैसे ऊपर के वाक़िआत से मूलम हुआ कि वह बड़े बड़े इल्म वाले थे लेकिन अपने आप को कुछ नहीं समझते थे जैसे हज़रत शाह ईस्माइल शहीद को सब के बीच में हरामज़ादा कहा लेकिन गुस्सा न हुए। इसी तरह इमाम साहब बहुत बड़े इमाम है जिनके बारे में तज़्किरातुल नोअमान सफ़हा 334 पर लिखा है कि इमाम साहब ने अपनी ज़िंदगी में अल्लाह तआ़ला की ज़ियारत ख़्वाब में 100 मर्तबा की है लेकिन अपने आप को छोटा समझते थे जिस की वजह से तीन मर्तबा ऊपर से नीचे अपनी प्यारी नींद को छोड़ कर उतरे। हालांकि इमाम साहब का मामूल पूरी रात इबादत करने का था और फ़जर के बाद अपनी तिजारत और

लोगों के इल्म सिखाने में ज़ोहर तक मशगूल रहते थे और पूरे दिन में ख़ाली ज़ोहर के बाद थोड़ा सा आराम फ़रमाते थे और उसी आराम के वक़्त यह मसला पेश आया। लेकिन न बिल्कुल गुस्सा हुए, न बुरा भला कहा, बल्कि प्यार मुहब्बत से जवाब दिया उसके बरख़िलाफ़ आज हमारा हाल यह है कि ज़रा अल्लाह ने आलिम बना दिया या ज़रा चार महीना में दावत में दो तीन मर्तबा लग गए या किसी बस्ती का अमीर या ज़िम्मादार बना दिया तो हमने अपने आप को क्या समझने लगते हैं और अगर किसी ने कोई ज़रा सी अदब के ख़िलाफ़ बात कर दी तो हमारा क्या हाल होता है कि मैं इतना बड़ा आलिम हूँ या इतना बड़ा ज़िम्मादार हूँ और इसने मुझ को ऐसा कहा तो हम मौत तक उससे दुश्मनी करते हैं। उसकी तरफ़ मुहब्बत की निगाह से देखते भी नहीं और लोगों के सामने हम उसकी बुराईयां बयान करते रहते हैं कि उसने मुझ को सब के बीच में ऐसा कहा था, इसलिए हम उन वाक़िआत को सामने रखते हुए अपनी ज़ात को कुछ नहीं समझेंगे तो इंशाल्लाह कभी भी किसी की बुरी बात पर ग़ुस्सा नहीं आएगा।

चौथी सिफ़त

ज़हद यानि दुनिया से बेरग़बती इख़्तियार करना

ज़हद यानि दुनिया से बेरग़बती करना। इस सिफ़त के साथ मुत्तसिफ़ हुए बिना लोगों के क़लूब मुतवज्जोह हो ही नहीं पाते, जहाँ ज़रा सा लालच का शुब्हा हुआ दीनी मन्सब की इज़्ज़त दाग़दार हो जाती है और जब इस्तिग़ना यानि बेरग़बती होती है तो यही दुनिया जिसके दीदार के लिए दरदर ठोकरें खाई जाती हैं वह दुनिया ज़ाहिदों के यानि दुनिया से बेरग़बती करने वालों के क़दमों में आकर गिरती है।

हदीस शरीफ़

हज़रत सहल बिन साअद साअ़दी रह० कहते हक एक शख़्स ने जनाब मुहम्मद रसूलाल्लाह सल्लललाहू अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में आकर अर्ज़ कि कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्लललाहू अलैहि व सल्लम मुझे कोई ऐसा अमल बताइये जो मुझे अल्लाह और लोगों की नज़र में मक़बूल और महबूब बना दे। तो आप सल्लललाहू अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि दुनिया से बे-रग़बती और ज़हद इख़्तियार कर लो तो अल्लाह तुम्हें अपना महबूब बना लेगा और लोगों के माल व दौलत से नज़र फेर लो तो लोगों की निगाह में

महबूब बन जाओगे। *(अलतरग़ीब व अलतरहीब जिल्द 4 सफ़हा 154)*

आप सल्ल॰ व सल्लम का ज़ुहद यानि दुनिया से बेरग़बती करना

हज़रत आयशा रज़ि॰ फ़रमाती हैं कि एक अंसारी औरत मेरे पास आई उसने हुज़ूर सल्लललाहू अलैहि व सल्लम का बिस्तर मुबारक देखा कि एक चादर है जिसे दोहरा करके बिछाया हुआ है। फिर वह चली गई और उसने मेरे पास एक बिस्तर भेजा जिसके अंदर ऊन भरी हुई थी जब आप सल्ल॰ मेरे पास तशरीफ़ लाए तो उसे देख कर फ़रमाया ए आयशा! यह क्या है? मैंने कहा या रसूलाल्लाह (सल्लललाहू अलैहि व सल्लम) फ़लां अंसारी औरत मेरे पास आई थी उसने आप का बिस्तर देखा था फिर उसने वापिस जाकर मेरे पास यह बिस्तर भेजा। आप सल्लललाहू अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया ऐ आयशा यह वापिस करो अल्लाह की क़सम अगर मैं चाहता तो अल्लाह मेरे साथ सोने और चांदी के पहाड़ चला देता।

(अलतरग़ीब व अलतरहीब जिल्द 5 सफ़हा 163)

हज़रत आयशा रज़ि॰ फ़रमाती हैं कि मैं हुज़ूर सल्ल॰ के पास बैठी हुई रो रही थी आप सल्ल॰ ने फ़रमाया कि तुम क्यों रो रही हो अगर तुम मुझसे जन्नत में मिलना चाहती हो तो तुम्हें दुनिया का इतना सामान काफ़ी होना चाहिए जितना सवार के सफ़र का सामान होता है और मालदारों से मेल जोल न रखना।

(कंज़ुलआमाल जिल्द 2 सफ़हा 150)

☆☆☆☆☆

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ का ज़ुहद और शहद मिला हुआ पानी देख कर रोना

हज़रत ज़ैद बिन अरक़म रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ ने पीने के लिये पानी माँगा तो उनकी ख़िदमत में एक बर्तन लाया गया जिसमें शहद और पानी था जब उसे मुँह के क़रीब ले गए तो रो पड़े और इतना रोए कि आस पास वाले भी रोने लगे, आख़िर ख़ामोश हो गए। लेकिन आस-पास वाले ख़ामोश ने हो सके फिर उसे दोबारा मुँह के क़रीब ले गए फिर रोने लगे और इतना रोए कि उनसे रोने का सबब पूछने कि किसी की हिम्मत न हुई। आख़िर जब उनकी तबियत हल्की हो गई और उन्होंने अपना मुँह पोंछा तो लोगों ने उनसे पूछा आप इतना ज़्यादा क्यों रोए? तो हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ ने फ़रमाया शहद मिला पानी देख कर मुझे एक वाक़िआ याद आ गया था, उसकी वजह से रो रहा था और वह वाक़िआ यह है कि मैं एक मर्तबा हुज़ूर सल्लल लाहू अलैहि व सल्लम के साथ था, इतने में मैंने देखा कि हुज़ूर सल्लललाहू अलैहि व सल्लम किसी चीज़ को अपने से दूर कर रहे हैं लेकिन मुझे कोई चीज़ नज़र नहीं आ रही थी मैंने अर्ज़ कि या रसूलाल्लाह यह क्या चीज़ है जिसे आप सल्ल॰ दूर कर रहे हैं, मुझे तो कोई चीज़ नज़र नहीं आ रही है। आप सल्ल॰ ने फ़रमाया दुनिया मेरी तरफ़ बढ़ी तो मैंने उससे कहा दूर हो जा तो दूर होकर कहने लगी अल्लाह की क़सम अगर आप मेरे हाथ से छूट गए तो कोई बात नही आपके बाद वाले मेरे हाथ से नहीं छूट सकेंगे। हज़रत

अबूबक्र सिद्दीक रज़ि. ने फ़रमाया इस वक़िआ के याद आने से मैं रो रहा था और शहद मिला हुआ पानी मेरे लिए मुश्किल हो गया और मुझे डर लगा कि इसे पी कर कहीं मैं हुज़ूर सल्ल. के तरीक़े से न हट जाऊँ और दुनिया मुझ से चिमट न जाए।

(कंज़ुल आमाल जिल्द 4 सफ़हा 37)

हज़रत उमर रज़ि. का दुनिया से बेरग़बती इख़्तियार करना

हज़रत अली रज़ि. फ़रमाते हैं कि मैंने हज़रत उमर रज़ि. को उनकी ख़िलाफ़त के ज़माने में बैतुल्लाह का तवाफ़ करते हुए इस हाल में देखा कि उनके कुर्ता में इक्कीस पैबंद लगे हुए थे जिनमे बाज़ कपड़े के भी न थे। *(मजालिस हकीमुल उम्मत सफ़हा 316)*

हज़रत उमर रज़ि. का ज़ुहद बारह पैबंद लगी हुई लुंगी बाँध कर बयान करना

हज़रत हसन रज़ि. फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि. अपने ख़िलाफ़त के ज़माने में लोगों में बयान कर रहे थे और उन्होंने एक लुंगी बाँध रखी थी जिस में बारह पैबंद थे।

(कंज़ुल आमाल जिल्द 4 सफ़हा 405)

हज़रत उस्मान रज़ि. का ज़ुहद दुनिया से बेरग़बती करना

हज़रत हसन रज़ि. से उन लोगों के बारे में पूछा गया जो

मस्जिद में कैलोला करते थे। तो उन्होंने कहा मैंने हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ि. को देखा कि वह अपने ख़िलाफ़त के ज़माना में एक दिन मस्जिद में कैलोला फ़रमा रहे थे और जब वह सोकर उठे तो उनके जिस्म पर कंकड़ियों के निशान थे (मस्जिद में कंकड़िया बिछी हुई थीं) और लोग उनकी सादा और बेतकल्लुफ़ ज़िंदगी पर हैरान होकर कह रहे थे यह अमीरूल मोमीनीन हैं, यह अमीरूल मोमीनीन हैं।

हज़रत अली रज़ि. का ज़हद पैबंद लगी हुई लुंगी का बाँधना

हज़रत ज़ैद बिन वहब रज़ि. कहते हैं कि एक दिन हज़रत अली रज़ि. हमारे पास बाहर आए और उन्होंने एक चादर ओढ़ी हुई थी और लुंगी बाँधी हुई थी जिन पर पैबंद लगा रखा था। किसी ने उनसे इतने सादा कपड़े के बारे में कुछ कहा। तो फ़रमाया मैं यह दो सादा कपड़े पहनता हूँ कि इनकी वजह से अकड़ से बचा रहूँगा, इनमें नमाज़ भी बेहतर होगी और मोमिन बंदे के लिए यह सुन्नत भी है (यानि आम मुसलमान भी ऐसा सादा कपड़े पहनने लग जायेंगे। *(कंज़ुलआमल जिल्द 5 सफ़हा 58)*

हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ि. का ज़हद पाँच हज़ार का वज़ीफ़ा मिलते ही ख़र्च कर देना

हज़रत हसन रज़ि॰ कहते हैं कि हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ि॰ का बैतुलमाल से पाँच हज़ार का वज़ीफ़ा मिलता था और हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ि॰ तक़रीबन तीस हज़ार मुसलमानों के अमीर थे। उनका एक चोग़ा था जिसके कुछ हिस्से को नीचे बिछा कर बाक़ी को ऊपर ओढ़ लिया करते थे और उसी चोग़ा को पहन कर लोगों में बयान करते थे। जब उन्हें वज़ीफ़ा मिलता था तो उसे उसी वक़्त ख़र्च कर दिया करते थे। उनमें से अपने पास कुछ नहीं रखते थे और अपने हाथ से खजूर के पत्तों की टोकरियां बनाते थे और उसकी कमाई से गुज़ारा करते थे। *(हुलियातुल औलिया जिल्द 1 सफ़हा 197)*

हज़रत मुसअ़ब इब्ने उमैर रज़ि॰ का ज़हद दुंबे की खाल को अपनी कमर पर बाँधना

हज़रत उमर रज़ि0 फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल॰ ने हज़रत मुसअ़ब बिन उमैर रज़ि॰ को सामने से आता हुए देखा। उन्होंने दुंबे की खाल को अपनी कमर पर बाँध रखा था। इस पर हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया इस आदमी की तरफ़ देखो जिसके दिल को अल्लाह ने नूरानी बना रखा है। मैंने इनका वह ज़माना भी देखा है जिस ज़माने में उनके वालिदैन इनको सबसे उम्दा खाना और सबसे बेहतर मश्रूब पिलाया करते थे और उन पर वह जोड़ा भी देखा है जो उन्होंने दो सौ दरहम में ख़रीदा था। अब अल्लाह और उसके रसूल की मुहब्बत ने उनका फ़क़्र व फ़ाक़ा वाला हाल कर दिया है जो तुम लोग देख रहे हो। *(अलतरग़ीब व अलतरहीब जिल्द 3 सफ़हा 395)*

मुल्क शाम के गर्वनर हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ि॰ का दुनिया से बेरग़बती करना

हज़रत उमर रज़ि॰ के ज़माना में हज़रत अबू उबैदाह बिन जर्राह को शाम का गवर्नर बनाया गया। शाम का इलाक़ा बड़ा माल व दौलत वाला था हज़रत उमर रज़ि॰ एक मर्तबा मुआयना के लिए शाम के दौरे पर तशरीफ़ लाए। शाम के दौरा के दरम्यान एक मर्तबा हज़रत उमर रज़ि॰ ने फ़रमाया कि अबू उबैदा मेरा दिल चाहता है कि मैं अपने भाई का घर देखूँ, जहाँ तुम रहते हो। तो हज़रत उमर रज़ि॰ के ज़ेहन में यह था कि अबू उबैदा इतने बड़े इलाक़ा के गवर्नर बन गए हैं और यहाँ माल व दौलत की रेलपेल है। इसलिए इनका घर देखना चाहिए कि उन्होंने क्या कुछ जमा किया है हज़रत अबू उबैदा रज़ि॰ ने जवाब दिया कि अमीरूल मोमीनीन आप मेरे घर को देख कर क्या करेंगे। जब आप मेरे घर को देखेंगे तो आप को आँख निचोड़ने के सिवा कुछ हासिल न होगा। हज़रत उमर रज़ि॰ ने इसरार किया कि मैं देखना चाहता हूँ।

चुनाँचे हज़रत अबू उबैदा अमीरूल मोमीनीन को लेकर चले, शहर के अंदर से गुज़र रहे थे, जाते जाते जब शहर की आबादी ख़त्म हो गई तो हज़रत उमर रज़ि॰ ने पूछा कि कहाँ ले जा रहे हो? हज़रत अबू उबैदा रज़ि॰ ने जवाब दिया कि बस अब क़रीब है चुनाँचे पूरा मुल्क शाम का शहर जो दुनिया के माल और असबाब से जगमग कर रहा था गुज़र गया। तो आख़िर में ले जाकर खजूर के

पत्तों से बनाया हुआ एक झोंपड़ा दिखाई दिया और फ़रमाया कि अमीरूल मोमीनीन मैं इसमें रहता हूँ।

जब अमीरूल मोमीनीन अंदर दाख़िल हुए तो देखा चारों तरफ नज़र घुमाकर तो वहाँ सिवाए एक मुसल्ले के कोई चीज़ नज़र नहीं आई। हज़रत उमर रज़ि0 ने पूछा कि ऐ अबू उबैदा तुम इसमें रहते हो यहाँ तो कोई सामान, कोई बरतन, कोई खाने और पीने और सोने का इंतिज़ाम कुछ भी नहीं है। तुम यहाँ कैसे रहते हो? हज़रत अबू उबैदा रज़ि॰ ने जवाब दिया कि अमीरूल मोमीचीन अल्हम्दुलिल्लाह मेरी ज़रूरत के सारे सामान मयस्सर हैं। यह मुसल्ला है इस पर नमाज़ पढ़ता हूँ और रात को इस पर सो जाता हूँ और फिर अपना हाथ ऊपर छप्पर की तरफ़ बढ़ाया और वहाँ से एक प्याला निकाला, जो नज़र नहीं आ रहा था और वह प्याला निकाल कर दिखाया कि अमीरूल मोमीनीन बर्तन यह है। हज़रत उमर रज़ि॰ ने जब उस बर्तन को देखा तो उसमें पानी भरा हुआ था और सूखी रोटी के टुकड़े पड़े हुए थे और फिर हज़रत अबू उबैदा रज़ि॰ ने फ़रमाया कि अमीरूल मोमीनीन मैं दिन रात तो हुकूमत के सरकारी कामों में मश्ग़ूल रहता हूँ। खाने वग़ैरह का इंतिज़ाम करने की फ़ुरसत नहीं होती एक औरत मेरे लिए दो तीन दिन की रोटी एक वक़्त में पका देती है। मैं उसी रोटी को रख लेता हूँ और जब वह सूख जाती है तो उसको पानी मे डुबो देता हूँ और रात को सोते वक़्त खा लेता हूँ। हज़रत उमर रज़ि॰ ने यह हालत देखी तो आँखों में आँसू आ गए। हज़रत अबू उबैदा रज़ि॰ ने फ़रमाया कि अमीरूल मोमीनीन मैंने आप से पहले ही से कह रखा था कि मेरा मकान देखने के बाद आप को आँखें निचोड़ने के सिवा कुछ हासिल नहीं होगा। हज़रत उमर रज़ि॰ ने फ़रमाया कि ऐ अबू उबैदा! इस दुनिया

की रेलपेल ने हम सबको बदल दिया मगर अल्लाह की क़सम तुम वैसे ही हो जैसे रसूलाल्लाह सल्ललल्लाहू अलैहि व सल्लम के ज़माने में थे। *(इस्लाही ख़ुत्बात जिल्द3 सफ़हा 117)*

इमाम अबू हनीफ़ा रह॰ का क़ाज़ी का ओहदा क़बूल करने से इंकार

ख़तीब बग़दादी रह॰ से रिवायत है कि इब्ने हबीरा ने इमाम अबू हनीफ़ा को हुक्म दिया कि कूफ़ा के क़ाज़ी यानि हाकिम बन जाओ। लेकिन इमाम साहिब ने क़बूल नहीं किया, तो उसने इमाम साहब रह॰ को एक सौ दस कोड़े लगवाए और रोज़ाना कोड़े लगवाता जब बहुत कोड़े लग चुके और इमाम साहिब अपनी बात पर यानि क़ाज़ी न बनने पर अड़े रहे, तो उसने मजबूर होकर छोड़ दिया। इमाम साहिब ने मार खाना बर्दाश्त किया लेकिन दुनिया का ओहदा क़बूल करना पसंद नहीं किया। *(तज़्किरातुल नोअमान सफ़हा 291)*

हज़रत इब्राहीम बिन अदहम का दुनिया की बादशाहत का छोड़ देना

शेख़ इब्राहीम बिन अदहम रह॰ एक इलाक़ा के बादशाह थे, रात को देखा कि उनके महल की छत पर एक आदमी टहल रहा है। हज़रत इब्राहीम रह॰ यह समझे कि शायद कोई चोरी की नीयत से यहाँ आया है। पकड़ कर उससे पूछा कि तुम इस वक़्त यहाँ कहाँ से आ गए और क्या कर रहे हो? वह शख़्स कहने लगा कि असल में मेरा ऊँट गुम हो गया है इस लिए ऊँट की तलाश कर रहा हूँ।

हज़रत इब्राहीम रह० ने फ़रमाया कि तुम्हारा दिमाग़ सही है कि नहीं! ऊँट कहाँ और महल की छत कहाँ? अगर तेरा ऊँट गुम हो गया है तो फिर जंगल में जाकर तलाश कर। यहाँ महल की छत पर ऊँट नहीं मिल सकता। तो उस शख़्स ने कहा फिर इस महल में ख़ुदा भी नहीं मिल सकता और मैं बेवक़ूफ़ हूँ तो तुम मुझसे ज़्यादा बेवक़ूफ़ हो, इसलिए कि इस महल में रहकर ख़ुदा को तलाश करना इससे बड़ी बेवक़ूफ़ी है। बस उसका यह कहना था कि दिल पर एक चोट लगी और पूरी बादशाहत वग़ैरह छोड़कर रवाना हो गए।

(इस्लाही ख़ुत्बात जिल्द 3 सफ़हा 108)

मौलाना क़ासिम साहिब रह० का रुपयों की थैली के हदिया को वापिस करना

मौलाना क़ासिम नानोतवी रह० जो दारूलउलूम देवबंद के बानी है। एक मर्तबा छत्ता की मस्जिद में तशरीफ़ फ़रमा थे। शेख़ इलाही बख़्श साहब मेरठी जो लखपति लोगों में से थे और मौलाना के मोतक़िद भी थे मिलने के लिए आए और बहुत बड़ा हदिया ले कर आए। दो थैलियां जिसमें अशर्फ़ियां और हज़ारों रूपयों का माल था, मगर दिल में यह सोचते सोचते आए कि हज़रत को आज बड़ा हदिया दूँगा कि अबतक किसी ने नहीं दिया होगा। सलाम के बाद हदिया पेश किया, मौलाना ने फ़रमाया कि मुझे ज़रूरत नहीं है, उन्होंने कहा कि हज़रत आप को ज़रूरत न हो तो बच्चों को तक़सीम कर दें। फ़रमाया कि अल्हम्दुलिल्लाह मेरी आमदनी साढ़े सात रूपये महीना की है और मेरे

घर की सारी ज़रूरत इस में पूरी हो जाती है अगर कभी आठ आना बच जाता है तो मैं परेशान हो जाता हूँ कि कहाँ रखूँगा आप वापिस ले जाएं। उन्होंने कहा कि मदरसे के बच्चों को तक़सीम कर दो। फ़रमाया कि मुझे इतनी फ़ुरसत कहाँ है कि मैं बच्चों को तक़सीम करूँ। ग़र्ज़ हदिया क़बूल न किया। लेकिन उस ज़माना के मालदार ग़ैरत वाले थे तो यह ग़ैरत आई कि माल फिर अपने घर को वापिस ले जाऊँ, तो वहाँ से उठे मस्जिद की सीढ़ियों पर हज़रत की जूतियां पड़ी हुई थी उन जूतियों में वह रुपया भर कर रवाना हो गए। जब मौलाना उठे और जूतियां को देखा तो रुपयों से भरी हुई थीं। उसके बाद अपने ख़ादिम हाफिज़ अनवारूलहक़ को मुख़ातिब्र होकर कहा कि देखा आपने दुनिया हम भी कमाते हैं और दुनियादार भी कमाते हैं। फ़र्क़ इतना है कि दुनिया हमारी जूतियों में आकर गिरती है हालांकि हम ठोकरें मारते हैं और दुनियादार दुनिया की जूतियों में जाकर सर रगड़ते हैं और वह उनका ठोकरें मारती है। इसका नाम है दुनिया से बेनियाज़ हो जाना। *(अरवाहे सिलासा सफ़हा 282 खुत्बात हकीमुलइस्लाम जिल्द 1 सफ़हा 294)*

फ़ायदा

ज़हद, दुनिया से बेरग़बती करना उसका मतलब यह नहीं है कि आदमी अपने घर-बार और कारोबार को छोड़ कर कहीं चला जाए बल्कि ज़हद कहते हैं दुनिया की मुहब्बत से दिल का ख़ाली होना, दिल दुनिया से अटका हुआ न हो उसकी मुहब्बत इस क़द्र दिल में बसी हुई न हो कि हर वक़्त उसी का ध्यान उसी की फ़िक्र, उसी के लिए दौड़ धूप हो रही हो और हदीस का मफ़हूम है कि दुनिया की मुहब्बत हर गुनाह की जड़ है। लेकिन एक बात हमको समझ में नहीं आती कि

आदमी के लिए बीवी-बच्चे हों जबकि भूख प्यास को दूर करने के लिए खाने पीने की भी ज़रूरत पड़ती है, रहने के लिए मकान की भी ज़रूरत पड़ती है और यह सब चीज़ें दुनिया के हर इंसान के साथ लगी हुई हैं तो फिर यह कैसे हो सकता है कि इंसान दुनिया के अंदर भी है और दुनिया की ज़रूरत भी पूरी करे उसके साथ दिल में दुनिया की मुहब्बत न आए और दुनिया से बेरग़बती पैदा हो यह कैसे हो सकता है? तो इसी बात को मौलाना रूमी रह० ने एक मिसाल के ज़रिये से बहुत अच्छी तरह समझाया है। मौलाना रूमी रह० फ़रमाते हैं दुनिया इंसान के लिए बहुत ज़रूरी है बग़ैर दुनिया के इंसान को ज़िंदगी गुज़ारना मुश्किल है जैसे किश्ती के लिए पानी ज़रूरी है बग़ैर पानी के किश्ती ज़मीन पर चल सकती ही नहीं है इसी तरह बिना दुनिया के इंसान की ज़िंदगी गुज़ारना मुश्किल है। फिर आगे फ़रमाया कि पानी किश्ती के लिए उस वक़्त फ़ायदेमंद होगा जबकि पानी किश्ती के चारों तरफ़ घूमता रहे इसी तरह दुनिया से इंसान को उसी वक़्त फ़ायदा होगा जबकि दुनिया उसके दिल के चारों तरफ़ घूमती रहे जिस तरह पानी अगर किश्ती में चला जाए तो बजाए फ़ायदा के नुक़सान में डालेगा, इसी तरह अगर दुनिया इंसान के दिल में आ जाए यानि दुनिया की मौहब्बत, तो इंसान को भी बर्बाद कर देती है। तो ज़ुहद इसी को कहते हैं कि दुनिया इंसान के चारों तरफ़ रहे। लेकिन उसकी मुहब्बत दिल में दाख़िल न हो जिस तरह ऊपर के वाक़िआत से मालूम हुआ कि हज़रत उमर रज़ि० मदीना के बादशाह थे लेकिन कपड़ों मे 21 पैबंद थे अच्छे कपड़ों से कोई मुहब्बत नहीं थी इसी तरह हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह शाम के गर्वनर थे लेकिन मकान खजूर के पत्तों से बना हुआ था, अच्छे मकान से कोई मुहब्बत नहीं थी वर्ना हज़रत उमर रज़ि० अच्छा कपड़ा पहन सकते थे हज़रत उबू उबैदा रज़ि० अच्छा मकान बना सकते थे। इसलिए कि वह बड़े-बड़े मुल्कों के बादशाह थे लेकिन उनके दिलों में दुनिया की

मुहब्बत नहीं थी। आज हमको दुनिया से इतनी मुहब्बत लगी है कि अच्छा खाना अच्छा मकान, अच्छा कपड़ा और पैसा हो तो हराम का कारोबार करके सूद लेकर जैसे भी हो लेकिन हम अपनी ख़्वाहिश पूरी करते हैं। किसी मालदार को देखते हैं तो दिल में तमन्ना करते हैं कि मैं भी इसके जैसा होता तो अच्छा होता। हमारे इमाम अबू हनीफ़ा रह॰ का यह हाल था कि उनको क़ाज़ी बनाने के लिए एक सौ दस कोड़े मारे, कोड़े बर्दाश्त कर लिए लेकिन ओहदा-ए-क़ज़ा क़बूल नहीं किया। आज हम उसी के लिए लड़ते हैं। मौलाना क़ासिम रह॰ को पैसों की थैली ज़बरदस्ती दे रहे थे लेकिन क़बूल नहीं की और हमारा हाल यह है कि हमारी निगाह किसी पर होती है कि वह कब मुझे हदिया दे। असल बात यह है कि उनके दिलों में दुनिया की मुहब्बत नहीं थी इसलिए हम भी इसकी मुहब्बत से बचें कि कहीं दुनिया की मुहब्बत हम को ईमान और आमाल से महरूम न कर दे।

पाँचवीं सिफ़त

किसी को हक़ीर न समझना

नबी करीम सल्लललाहू अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं कि जहन्नम से एक गर्दन निकलेगी जिसके दो कान दो आँखें और क़ूव्वते-गोयाई रखने वाली ज़बान होगी वह कहेगी कि मुझे तीन शख़्सियतों पर मुक़र्रर किया गया

(1) हर सरकश मुतकब्बिर के लिए

(2) अल्लाह के साथ शरीक ठहराने वाले के लिए

(3) तस्वीर बनाने वाले के लिए।

(मकाशिफ़तुलक़लूब सफ़्हा 330, हुज्जतुल इस्लाम इमाम ग़ज़ाली)

हज़रत अबूबक्र रज़ि॰ का इर्शाद है कि तुम में से कोई भी किसी मुसलमान को हक़ीर न समझे क्योंकि हक़ीर मुसलमान भी अल्लाह के नज़दीक बहुत मोअज़्ज़िज़ होता है।

(मकाशिफ़तुल क़लूब सफ़्हा 333)

किसी को हक़ीर न समझना हिक़ारत की निगाह से भी न देखना। दरहक़ीक़त किसी को हिक़ारत की निगाह से देखना कभी ईमान की दौलत से महरूम कर देता है कभी नेक आमाल से महरूम कर देता है और तकब्बुर की अलामत में से एक तो हक़ बात का इंकार करना है और दूसरा किसी को हिक़ारत की निगाह से देखना

है और तकब्बुर की सख़्त वईद आई है।

हदीस शरीफ़

आप सल्ल. का अब्दुल्लाह बिन उम्मे-मकतूम को जो अंधे थे सिर्फ़ जवाब न देने पर क़ुरआन शरीफ़ की आयत का उतरना

एक मर्तबा आप सल्ल. के पास मुशरिकीन के कुछ सरदार आए हुए थे आप ने यह महसूस किया कि बाअसर और सरदार लोग हैं अगर उनकी इस्लाह हो जाए तो उनके ज़रिये पूरी क़ौम की इस्लाह का रास्ता खुल सकता है इसलिए उनके दिल में उनको तब्लीग़ करने और इस्लाम की दावत देने की ज़्यादा अहमियत पैदा हो गई। इसलिए आप सल्ल उनकी तरफ़ ज़्यादा मुतवज्जोह हो गए। उसी दौरान हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उम्मे मकतूम रज़ि. जो नाबीना सहाबी थे जिनको हुज़ूर सल्ल. ने मस्जिदे नबवी में मौअज़्ज़िन मुक़र्रर फ़रमाया था। वह हुज़ूर सल्ल. की ख़िदमत में उस वक़्त आ गए और हुज़ूर सल्ल. से कोई मसला पूछने लगे आप सल्ल. ने यह महसूस किया कि यह तो अपने ही आदमी हैं रोज़ाना मुलाक़ात होती है अगर इनको इस वक़्त मसला न बताया तो बाद में बता देंगे। इसलिए आपने उनसे अर्ज़ किया कि तुम ज़रा ठहर जाओ और मुश्रिकीन के जो सरदार थे उनके साथ बात करने में मशग़ूल रहे ताकि उनको इस्लाम की तौफ़ीक़ हो जाए। इसलिए कि अगर यह

मुसलमान हो जाएं तो पूरी कौम के मुसलमान होने का रास्ता खुल जाएगा। बस इतना ही वाक़िआ पेश आया। लेकिन अल्लाह ने इस पर भी तंबीह फ़रमाई और क़ुरआन के तीसवें पारः की तीसरी सूरः की पहली आयत ***अबासा वतवल्ला अन जाआ हू अल आअमाअ*** नाज़िल फ़रमाई जिसका मफ़हूम यह है कि ऐ नबी तुम्हारे पास एक नाबीना अंधा आता है तो तुम चीं ब च जबीं होते हो और मुँह मोड़ते हो। *(माअरिफ़ुल क़ुरआन जिल्द सफ़हा 670 इस्लाही ख़ुत्बात जिल्द 2 सफ़हा 193)*

हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ि॰ को हक़ीर समझने वालों का ईमान से महरूम हो जाना

हज़रत उरवाह रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल॰ ने एक मर्तबा हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ि॰ के इंतिज़ार में अरफ़ात से मुज़दलफ़ाह की रवानगी लेट कर दी जब हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ि॰ आए तो लोगों ने देखा कि नवउम्र लड़के हैं और एक नाक बैठी हुई और रंग काला है इस पर यमन वालों ने कहा कि इस लड़के की वजह से हमें इतनी देर रोका गया। हज़रत उरवाह रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल॰ की वफ़ात के बाद यमन वाले हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ि॰ को हल्का और हक़ीर समझने की वजह से ही कुफ़्र में मुब्तिला हुए थे मौत के वक़्त अल्लाह ने ईमान की दौलत छीन ली।

(हयातुस्सहाबा जिल्द 2 सफ़हा 525)

☆☆☆☆☆

हज़रत शेख़ अबूअब्दुल्लाह उंदलसी रज़ि॰ जो हज़रत जुनैद बग़दादी और इमाम शिबली रह॰ के उस्ताद हैं, उनका सिर्फ़ बुत के पूजने वाले काफ़िरों को हक़ीर समझना जिसकी वजह से एक साल तक सुअर चराना

हज़रत शेख़ अबू अब्दुल्लाह उंदलसी रह॰ बड़े बुज़ुर्ग आबिद ज़ाहिद होने के बावजूद हदीस और तफ़सीर में भी एक जलीलुल-क़द्र इमाम थे आपको 30 हज़ार हदीसें ज़बानी याद थीं एक मर्तबा आपने सफ़र का इरादा किया आपके साथ आपके मुरीद हज़रत जुनैद बग़दादी और हज़रत शिबली रह॰ भी थे हज़रत इमाम शिबली का बयान है हमारा सफ़र ईसाईयों की एक बस्ती पर हुआ नमाज़ के वास्ते पानी की तलाश करते करते कुछ दूर एक मंदिर और आतिशकदा पर पहुँचे जिसपर सूरज को पूजने वाले यहूदी और नसरानियों का मजमाअ था फिर आगे चलते चलते हम बस्ती के किनारे एक कुंआ पर पहुँचे जिस पर चंद नौजवान लड़कियां पानी पिला रही थीं। इत्तिफ़ाक़ से शेख़ अबू-अब्दुल्लाह की निगाह एक ईसाई बादशाह की लड़की पर पड़ी जो ख़ूबसूरत ज़ेवर और लिबास से आरास्ता थी। शेख़ की तबियत उसपर मायल हो गई और बर्दाश्त न रहा जाकर लड़की से निकाह का पैग़ाम दिया उसने जवाब दिया कि निकाह उस वक़्त करूँगी जब मेरा बाप इजाज़त देदे। शेख़ ने उसके बाप से पूछा, तो उसके बाप ने कहा कि मैं एक शर्त पर निकाह कर सकता हूँ वह यह कि तुमको इस्लाम छोड़ कर ईसाइयत क़बूल करनी होगी। शेख़ ने क़बूल कर लिया और इस्लाम छोड़ कर

ईसाई बन गए और इस्लाम से फिर गए। हज़रत इमाम शिबली रह. ने फ़रमाया कि ऐ हमारे सरदार आप इराक़ वालों के पीरो-मुर्शिद हैं आपके हज़ारहा मुरीद हैं आप हमको ज़लील न कीजिए शेख़ ने फ़रमाया कि मेरे अज़ीज़ों मुझ से विलायत का लिबास छीन लिया गया, विलायत की अलामत उठा ली गई। यह कहकर रोना शुरू कर दिया। शेख़ भी साथ रो रहे थे। यहाँ तक की ज़मीन आँसुओं की कसरत से तर हो गई। उसके बाद हम मजबूर होकर अपने वतन बग़दाद की तरफ़ लौटे, लोग हमारे आने की ख़बर सुनकर शेख़ की ज़ियारत के लिए शहर से बाहर आए और शेख़ को हमारे साथ न देख कर पूछा हमने सारा वाक़िआ बयान किया। वाक़िआ सुनकर लोगों मे कोहराम मच गया और शेख़ के अक्सर मुरीद इसी ग़म से इंतिक़ाल कर गए और बाअ़ज़ ख़ुदा की बारगाह में दुआएं कर रहे थे कि हमारे शेख़ को हिदायत देकर अपने मरतबा पर लौटा दे। उसके बाद ख़ानक़ाहें बंद हो गईं और हम एक साल उसी हसरत व अफ़सोस में शेख़ की जुदाई में लोटते रहे। एक साल बाद जब मुरीदीन ने इरादा किया कि चल कर शेख़ की ख़बर लें कि क्या है किस हाल में हैं? तो हमारी एक जमाअ़त ने सफ़र किया और उस गाँव में पहुँचकर वहाँ के लोगों से शेख़ का हाल पूछा। गाँव वालों ने कहा कि वह तो जंगल में सुअर चरा रहे हैं। तुम्हारे शेख़ से उस बादशाह ने यह शर्त लगाई थी कि एक साल तक तुमको सुअर चराने पड़ेंगे। तो तुम्हारे शेख़ ने मंज़ूर कर लिया था। इसलिए वह जंगल में सुअर चराते होंगे। हज़रत इमाम शिबली रह. फ़रमाते हैं कि हम उसके बाद जंगल में पहुँचे जहाँ वह सुअर चरा रहे थे। देखा तो शेख़ के सिर पर नसरानी टोपी है और कमर में ज़नार बँधी हुई है और उस असा (लाठी) से टेक लगाए हुए ख़िंज़ीर (सुअर) के सामने

खड़े हैं। जिस लकड़ी से ख़ुत्बा में सहारा लिया करते थे, सलाम किया पूछा कि आपका क्या हाल है? आपको क़ुरआन हदीस की तफ़सीर में से कुछ याद है। फ़रमाया कि एक क़ुरआन की आयत और एक हदीस के सिवा कुछ याद नहीं है उसके कुछ दिनों के बाद फिर से उनको हिदायत वापिस मिल गई और क़ुरआन की तफ़सीर और हदीसें फिर से याद हो गईं और वापिस अपनी ख़ानक़ाह में आए। सबने ख़ुशी मनाई। उसके बाद एक मर्तबा इमाम शिबली रह. ने पूछा शेख़ से कि हमारे शेख़ आपको किस वजह से ऐसा हुआ था? तो शेख़ ने फ़रमाया कि जब हमारा गुज़र उस बस्ती पर से हुआ था जिसमें मंदिर और आतिश्कदा था और उस पर लोग थे जो मंदिर को और आग को पूजते थे। तो मेरे दिल में तकब्बुर और बड़ाई पैदा हुई कि हम मोमिन मुसलमान हैं और यह कमबख़्त कैसे जाहिल बेवकूफ़ हैं कि मंदिर और आग को पूजते हैं मुझे उसी वक़्त एक ग़ैबी आवाज़ दी गई कि यह ईमान व तौहीद कोई तुम्हारा ज़ाती कमाल नहीं है बल्कि सब कुछ हमारी तौफ़ीक़ से है क्या तुम अपने ईमान को अपने इख़्तियार में समझते हो जिसकी वजह से तुम उनको हक़ीर और ज़लील समझते हो और तुम चाहो तो हम तुम्हें अभी बतला दें और मुझे उसी वक़्त यह अहसास हुआ कि गोया एक जानवर मेरे दिल से निकल कर उड़ गया जो दरहक़ीक़त ईमान था। *(अकाबिर का सलूक व अहसान सफ़हा 67, हज़रत शेख़ ज़करिया रह0, ख़ुत्बात हकीमुल इस्लाम जिल्द 9 सफ़हा 414)*

हज़रत सुफ़ियान सूरी रह. का एक रोने वाले को सिर्फ़ रियाकार है

दिल में गुमान करना जिसकी वजह से पांच महीना तक तहज्जुद की तौफ़ीक़ से महरूम हो जाना

हज़रत सुफ़ियान सूरी रह॰ मशहूर मुहद्दीस और फ़क़ीह हैं फ़रमाते हैं कि मुझ से एक गुनाह सादर हो गया था जिसकी वजह से मैं पांच महीना तक तहज्जुद से महरूम रहा। किसी ने पूछा ऐसा क्या गुनाह हो गया था तो फ़रमाया कि एक शख़्स रो रहा था मैंने अपने दिल में यह कहा था कि यह शख़्स रियाकार है यानि दिखलावा करता है। *(अहयाउलउलूम फ़ज़ाइल ए सदक़ात हदीस 7 के फ़ायदे में)*

हज़रत जुनैद बग़दादी का फ़रमान

हज़रत जुनैद बग़दादी रह॰ फ़रमाते हैं कि तवाज़ुअ़ उस वक़्त तक कामिल नहीं होती जब तक कि इंसान यह ख़्याल न करे कि मैं नस़रानी के कुत्ते से भी बदतर और बुरा हूँ।

(ख़ुत्बात हकीमुल इस्लाम जिल्द 2 सफ़हा 286)

मौलाना अशरफ़ अली थानवी रह॰ का अपने आपको हक़ीर और कमतर समझना

हकीमुल इस्लाम मौलाना अशरफ़ अली थानवी रह॰ बार-बार

क़सम खाकर फ़रमाया करते थे कि मैं अपने आपको किसी मुसलमान से यहाँ तक कि उन मुसलमानों से जिनको लोग गुनाहगार समझते हैं फ़िलहाल और कुफ़्फ़ार से भी अहतमालन अफ़ज़ल नहीं समझता हूँ इसलिए कि हो सकता है कि वह काफ़िर मुसलमान हो जाए और मुझसे आगे बढ़ जाए। *(इस्लाही ख़ुत्बात जिल्द 2 सफ़हा 206)*

हुज़ूर सल्ल॰ का ऐसे शख़्स को पहलू में बैठाकर खिलाना जिसको लोग हक़ीर समझते थे

एक मर्तबा आप सल्ल॰ खाना खा रहे थे दूसरे लोग भी मजलिस में शरीक थे एक शख़्स आया जो चेचक में मुब्तिला था और उसके ज़ख़्म फूट रहे थे वह मजलिस में जहाँ भी भी बैठने की कोशिश करता तो क़रीब वाला शख़्स उसके पास से हट जाता तो आप सल्लललाहू अलैहि व सल्लम ने उस बीमार शख़्स को अपने क़रीब बुलाया और अपने पहलू में बैठा कर उसे खाना खिलाया।

(अहयाउलउलूम जि 4 स 306)

हज़रत ज़ैद रज़ि॰ के बारे में अल्लाह को आयत उतारनी पड़ी

हज़रत ज़ैद रज़ि॰ जो कि गुलाम थे लेकिन अल्लाह के नबी सल्लललाहू अलैहि व सल्लम ने उनसे इतनी मुहब्बत की कि लोग उनको ज़ैद बिन मुहम्मद कहने लगे थे, तो अल्लाह को क़ुरआन की

आयत उतारनी पड़ी। हज़रत ज़ैद बिन हारिसा किसी शख़्स के गुलाम थे। ज़माना-ए-जाहिलियत में आप सल्ल० ने उनको बाज़ार अकाज़ से ख़रीदा लिया था। अभी उम्र भी कम थी। आप सल्ल० ने ख़रीदने के बाद उनको आज़ाद करके यह शर्फ़ बख़्शा कि अरब के आम रिवाज के मुताबिक़ उनको मुँह बोला बेटा बना लिया और उनकी परवरिश फ़रमाई। मक्का में उनको ज़ैद बिन मुहम्मद (सल्लललाहू अलैहि व सल्लम) के नाम से पुकारा जाता था तो अल्लाह ने क़ुरआन की आयत उतारी कि मुँह बोला बेटे को उनके बाप की तरफ़ मन्सूब करके मत बुलाओ। उसके बाद उनको सहाबा रज़ि० ज़ैद बिन हारिसा कहकर बुलाते थे। *(मआरिफ़ुल क़ुरआन जिल्द 7 सफ़हा 148)*

फ़ायदा

इंसान किसी की ज़ात को या किसी के अमल को हक़ीर उस वक़्त समझता है जब वह अपनी ज़ात को या अपने अमल को बड़ा समझने लगता है हालांकि अल्लाह को यह बात बिलकुल पंसद नहीं है कि कोई आदमी अपने बंदे की हिक़ारत बयान करे या हक़ीर समझे। ऊपर के वाक़िआत से मालूम हुआ कि अल्लाह के बंदे नबी सल्ल० ने अब्दुल्लाह बिन उम्मे मकतूम को हिक़ारत की वजह से जवाब नहीं दिया बल्कि दीन का फ़ायदा समझने की वजह से जवाब नहीं दिया था तो भी अल्लाह को पसंद नहीं आया और क़ुरआन की आयत उतार कर फ़ौरन इस्लाह कर दी ताकि बाद में आपकी उम्मत को रहबरी मिले और बाअज़ मर्तबा अल्लाह ईमान वालों को हक़ीर समझने की वजह से ईमान की दौलत से महरूम कर देता है जैसे हज़रत उसामा रज़ि० के वाक़िआ से मालूम हुआ कि उनको हक़ीर समझने वाले बिना ईमान के दुनिया से गए हैं और बाअज़ मर्तबा

अल्लाह दुनिया में दिखाता है कि तुम किसी को हक़ीर क्यों समझते हो तुम को ईमान तो हमने दिया है और समझने के लिए एक साल तक सुअर चरवाया जैसे हज़रत अबू अब्दुल्लाह उंदलसी के वाक़िआ से मालूम हुआ बाअज़ मर्तबा किसी के अमल को हक़ीर समझने की वजह से अल्लाह बड़े बड़े अमल से महरूम कर देता है जैसे हज़रत सुफ़ियान सूरी रज़ि॰ के वक़िआ से मालूम हुआ कि रोने वाले को सिर्फ़ रियाकार गुमान किया तो पांच महीने तक तहज्जुद की तौफ़ीक़ छीन ली। इसलिए हम भी किसी ज़ात को या किसी के अमल को हक़ीर न समझें कोई कुछ भी हो हम अपनी फ़िक्र करें और अपने आपको मौलाना अशरफ़ अली थानवी रह॰ की तरह किसी गुनाहगार मुसलमान या किसी काफ़िर से भी अफ़ज़ल न समझें। बल्कि हम अपने को हज़रत जुनैद बग़दादी रह॰ के फ़रमान के मुताबिक़ नसरानी के कुत्ते से भी ज़्यादा बुरा समझें और हर एक को अपना भाई समझें। चाहें कोई उसको कैसा भी समझता हो। जैसे अल्लाह के नबी सल्ल॰ ने चेचक की बीमारी वाले सहाबी को अपने बग़ल में बैठाकर खाना खिलाया और हज़रत ज़ैद रज़ि॰ को जो एक ग़ुलाम थे लेकिन इतनी मुहब्बत की कि उनको लोग आप सल्ल॰ का बेटा समझने लगे। आज हमें किसी फ़क़ीर या ग़रीब के साथ चलना हो तो हम यों समझते हैं कि हमारी इज़्ज़त चली जाएगी और वहाँ ग़ुलाम से इतनी मुहब्बत की कि लोग बेटा समझने लगे। बस अल्लाह पूरी उम्मत को हिक़ारत से बचाए।

छठी सिफ़त

मामलात में तक़वा यानि हलाल पाकीज़ा रोज़ी हासिल करना और हराम रोज़ी से बचना

हलाल माल का कमाना ऐसे ही फ़र्ज़ है जैसा कि नमाज़ रोज़ा फ़र्ज़ है। आदमी का फ़र्ज है कि वह कमाए, मांग कर न खाए, बल्कि दस को खिला कर खाने का क़ायल हो इस दर्जे पर आए। इसलिए कि कोई मुसलमान भीख मांगने वाला या सवाल करने वाला बना कर नहीं भेजा गया कि वह भिखारी बने बल्कि अता करने वाला बनाकर भेजा गया है लेकिन कमाने में इस बात का ख़्याल रखे कि हराम न कमाए बल्कि हलाल कमाए चाहे थोड़ा सा ही मिले इसलिए कि हलाल रोज़ी इबादत की तरफ़ ले जाती है।

हदीस शरीफ़

आप सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया कि इंसान उस वक़्त तक मुत्तक़ीन के दर्जे तक नहीं पहुँच सकता जब तक कि हर्ज वाली चीज़ों से बचने के लिए बहुत सी ऐसी चीज़ों को न छोड़ दे जिनके अंजाम देने में कोई हर्ज नहीं हैं। *(तिर्मिज़ी)*

हलाल रोज़ी इल्म और आमाल के वजूद में आने का ज़रिया बनती है

इमाम अहमद बिन हंबल रह० का एक आयात से सौ मसाइल का हल निकालना और पूरी रात इबादत करना

एक मर्तबा इमाम शफ़अई रह० ने इमाम अहमद बिन हंबल की दावत की, और दस्तरख़्वान बिछाया, इमाम साहब को बिठलाया गया और भी लोग बैठे, इमाम अहमद रह० ने जो खाना शुरू किया तो इस तरह से खाया जैसे कोई बहुत लालची आदमी खाया करता है और जैसे कोई सात वक़्त का भूखा खाता है। तो बहुत ज़्यादा खाया और इतनी जल्दी जल्दी खाया जैसे मालूम हो कि खाने को समेट लेना चाहते हैं। इमाम शाफ़अई रह० जब खाने के बाद घर पहुँचे तो इमाम शाफ़अई की बच्चियों ने इमाम शाफ़अई पर एतराज़ किया कि आप तो कहते थे कि यह इमाम-ए-वक़्त है यह कैसा इमाम-ए-वक़्त है? जो आम लोगों की तरह पेट भर खाना खाता है? मुत्तक़ी की शान तो यह है कि वह कम खाते हैं, इबादत ज़्यादा करते हैं। तो इमाम शाफ़अई से जवाब नहीं बन पड़ा और यह फ़रमाया कि महसूस मैंने भी इसको किया मगर मैं बोल नहीं सकता था इसलिए कि मैं मेज़बान था अगर मैं यों कहता कि तुम ज़्यादा क्यों खाते हो, तो तोहमत आती कि शायद मेहमान से अपना खाना बचाना चाहता हूँ। बहरहाल इमाम शाफ़अई से जवाब नहीं बन पड़ा तो चुप हो गए, बच्चियों के सामने। वक़्त गुज़र गया, इमाम अहमद बिन हंबल

ईशा की नमाज़ के लिए चले गए। उनके जाने के बाद छोटी छोटी बच्चियों ने बिस्तर बिछाया और पानी का लोटा भर कर रखा कि इमाम साहब जब तहज्जुद के लिए उठें तो पानी लाने की दुश्वारी न हो इत्मिनान से वज़ू कर लें। इमाम अहमद बिन हंबल जब सुबह की नमाज़ के लिए उठकर गए तो बिस्तर वग़ैरह उठाने के लिए बच्चियां आईं तो देखा कि लोटा उसी तरह भरा हुआ रखा हुआ है। अब तो उनके गुस्से की कोई हद न रही कि यह कैसे इमाम हैं कि पेट भर के यह खाना खाए। रात का कोई वक़्त इबादत का उसे नसीब न हो। वज़ू यह न करें। तहज्जुद न पढ़ें। कैसे बड़े इमाम हैं। जब इमाम शाफ़अई पहुँचे तो बच्चियों ने दामन पकड़ लिया कि आपने हमें ग़लतफ़हमी में मुब्तिला कर रखा है कि इमाम अहमद बिन हंबल मुत्तक़ियों के सरदार हैं। यह कैसे इमाम हैं कि नाक तक खाना खाते हैं, तहज्जुद की तौफ़ीक़ नहीं उन्हें, रात भर सोते रहे। अब इमाम शाफ़अइ से भी न रहा गया और बाहर आकर इमाम अहमद बिन हंबल से कहा कि ऐ अहमद यह बदलाव तुममें कब से पैदा हुआ कि तुम पेट भर खाना खाते हो, तहज्जुद की तौफ़ीक़ तुम्हें न हुई रात को तुम न उठे? इमाम अहमद बिन हंबल मुस्कराए और अर्ज़ किया कि हज़रत वाक़िआ वह नहीं जो आप समझ रहे हैं। वाक़िआ यह है कि मुझे आज ईशा के वज़ू से तहज्जुद और सुबह की नमाज़ की नौबत आई। और फिर क़िस्सा सुनाया कि जब दस्तरख़्वान पर खाना रखा गया तो मैंने दुनिया में इतनी हलाल की कमाई नहीं देखी। उस खाने पर आसमानों से नूर और बरकत की इतनी बारिश थी जो इस से पहले कभी नहीं देखी तो मैंने यह इरादा किया कि जितना खा सकूँ, खा लूँ चाहे बाद में मुझे सारा दिन फ़ाक़ा करना पड़े। फिर यह नूरानी खाना मुझे कहाँ नसीब होगा इस वास्ते मैंने

ज़्यादा खाया और कहा कि इस खाने की दो बरकतें ज़ाहिर हुईं एक इल्मी बरकत और एक अमली बरकत। इल्मी बरकत तो यह हुई कि चारपाई पर लेटकर क़ुरआन की आयात से आज मैंने फ़िक़ह के सौ मसाइल निकाले जो अब तक मुझे समझ में नहीं आए थे और अमली बरकत यह हुई कि मैंने ईशा के वज़ू से सुबह की नमाज़ पढ़ी और तहज्जुद पढ़ी यह हलाल रोज़ी की बरकत है।

(ख़ुत्बात हकीमुल इस्लाम जिल्द 7 सफ़हा 91)

इस वक़िआ से मालूम हुआ कि हलाल रोज़ी इबादत की तरफ़ ले जाती है और हराम रोज़ी ख़ाली गुनाह की तरफ़ नहीं ले जाती बल्कि पिछली इबादत को भी ख़त्म कर देती है जैसा कि एक हदीस का मफ़हूम है कि हराम का एक लुक़्मा खाना 40 चालीस दिन की इबादत को ख़त्म कर देता है। *(फ़ज़ाइल ए सदक़ात)*

हुज़ूर सल्ल॰ का तक़वा शक वाली खजूर खाने से पूरी रात नींद न आना

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर बिन आस रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल॰ को रात के वक़्त अपने पहलू में पड़ी हुई खजूर मिली आप ने उसे नौश फ़रमा लिया लेकिन आप को नींद न आई इज़्दवाज-ए-मुतहारात में से किसी ने हुज़ूर सल्ल॰ से पूछा या रसूलाल्लाह सल्ल॰ आज रात आप को नींद नहीं आई? हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया मुझे अपने पहलू के नीचे पड़ी हुई खजूर मिली मैंने उसको खा लिया लेकिन बाद में मुझे ख़्याल आया कि हमारे यहाँ सदक़ा की खजूरें भी थीं। कहीं यह खजूर उनमें से न हो इस ख़्याल से मुझे नींद न आई। *(अलहिदाया व अलनिहाया जिल्द 6 सफ़हा 59)*

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ का शक वाले खाने को उंगली डालकर कै़ करना

एक मर्तबा हज़रत अबूबक्र सिद्दीक रज़िं॰ के ग़ुलाम ने आपके सामने खाना पेश किया आप भूखे थे, इसलिए आपने तहक़ीक़ किये बिना खा लिया। बाद में ग़ुलाम से पूछा कि यह खाना तुम कहाँ से लाए थे? तो उसने जवाब दिया कि ज़माना-ए-जाहिलियत में मैंने एक क़बीला में झाड़ फूँक की थी उन्होंने मुझे उसकी उजरत देने का वायदा कर रखा था। आज मेरा उसके पास से गुज़र हुआ तो वहाँ कोई खुशी की तक़रीब हो रही थी। तो उन्होंने मुझे यह खाना दिया था। यह सुनकर हज़रत अबू-बक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ ने फ़रमाया तुझ पर अफ़सोस कि तू मुझे हलाक कर देता और हाथ डालकर खाना कै़ कर दिया और जो अंदर रह गया तो पानी पीकर निकालते जाते, यहाँ तक कि पूरा मैदा उस शुब्हा के खाने से साफ़ कर लिया।

(अलइल्म वल उल्मा सफ़हा 146 मुसन्निफ़ शेख़ अबूबक्र अलजज़ायरी मदीना मुनव्वराह)

हज़रत उमर रज़ि॰ का तक़वा शक वाले दूध को उंगली डाल कर कै़ करना

हज़रत ज़ैद बिन असलम रह॰ कहते हैं कि हज़रत उमर रज़ि॰ ने एक मर्तबा दूध नोश फ़रमाया जो उन्हें बहुत पसंद आया। जिस साहब ने पिलाया था उससे दरियाफ़्त किया कि तुम्हें यह दूध कहाँ से मिला। उन्होंने बताया कि मैं फलां पानी पर गया था वहाँ सदका

के जानवर पानी पीने आए थे, उन लोगों ने उन जानवरों का दूध निकाल कर हमें दिया मैंने अपने इस मशकीज़ा में वह दूध डाल लिया यह सुनकर हज़रत उमर रज़ि॰ ने मुँह में उँगली डालकर वह सारा दूध कै कर दिया। *(कंज़ुल आामल जिल्द 2 सफ़हा 418)*

हज़रत अली रज़ि॰ का तक़वा दरहम परखने वाले कुंए से पानी न पीना

हज़रत शाअबी रह॰ कहते हैं कि हज़रत अली रज़ि॰ एक दिन कूफ़ा में बाहर निकले एक दरवाज़े पर खड़े होकर उन्होंने पानी मांगा, तो अंदर से एक लड़की लोटा और रूमाल लेकर निकली। आप ने उससे पूछा ऐ लड़की यह घर किसका है? उसने कहा फ़लां दरहम परखने वाले का है। तो आप ने फ़रमाया मैंने हुज़ूर सल्ल॰ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना है कि दरहम परखने वाले के कुंए से पानी न पीना और टैक्स वसूल करने वाले के साये में हरगिज़ न बैठना चाहिए। *(कंज़ुल आमाल जिल्द 2 सफ़हा 165)*

सहाबाकराम रज़ि॰ का माल के बारे में अनोखा झगड़ा

हदीस में है कि एक सहाबी ने दूसरे सहाबी से ज़मीन ख़रीदी, क़ीमत अदा कर दी। ज़मीन क़ब्ज़ा में आ गई। इमारत बनाने के लिए जो बुनियाद खोदी तो एक बहुत बड़ा देगचा निकला। जिसमें सोना-चांदी भरा हुआ था। गोया लाखों रुपयों का माल निकला। उसे लेकर उनके वहाँ पहुँचे जिनसे ज़मीन ख़रीदी थी और फ़रमाया कि यह आपका देगचा है उन्होंने फ़रमाया कैसा देगचा? फ़रमाया वह

ज़मीन जो मैंने ख़रीदी थी उसमें से निकला है। जब कि मैंने ज़मीन ख़रीदी थी। देगचा थोड़ा ही ख़रीदा था। यह तो आपका हक़ है। उन्होंने कहा नहीं मेरा हक़ नहीं है। आपका हक़ है। आख़िर वह झगड़ा मुहम्मद सल्ल॰ की ख़िदमत में गया। चुनाँचे आप सल्ल॰ ने फ़रमाया तुम दोनों को कोई औलाद है? तो एक के घर बेटा और दूसरे के घर बेटी थी। फ़रमाया दोनों की शादी कर दो और उसमें इस दौलत को ख़र्च कर दो। बस सकून हो गया। हमारे यहाँ तो इस पर लड़ाई होती है कि मेरा हक़ है तुम्हारा हक़ नहीं है वहाँ उस पर लड़ाई थी आपका हक़ है मेरा नहीं।

(ख़ुत्बात हकीमुल इस्लाम जिल्द 8 सफ़हा 342)

बनी इसराईल के एक शख़्स का समुंद्र पार करके हज़ार दीनार की अदायगी के लिए जाना

बनी इसराईल का एक शख़्स हज़ार दीनार का ज़रूरतमंद था वह समुंद्र पार करके दूसरे इलाक़ा में किसी साहबे-हैसियत आदमी के पास पहुँचा उससे जाकर एक हज़ार दीनार क़र्ज़ माँगा। तो साहबे-माल ने कहा कि मैं आप को पैसा दे सकता हूँ लेकिन गवाह कौन है? आप गवाह लाइये तो उस शख़्स ने कहा "मेरे आप के दरम्यान में अल्लाह ही गवाह काफ़ी है।" तो साहबे-माल ने कहा कि भाई फिर कफ़ील और ज़िम्मादार लाओ, ताकि अगर आप ने अदा नहीं किया तो मैं आपके कफ़ील से वसूल कर लूँगा। तो उस शख़्स ने कहा "मेरे आपके दरम्यान अल्लाह ही कफ़ील है।" तो साहबे-माल ने कहा यह बात तू सच कह रहा है। लिहाज़ा एक मुद्दत मुतय्यन

करके एक हज़ार दीनार उसके हवाला कर दिए और कहा कि जब मुद्दत पूरी हो जाएगी तो आप हमारा क़र्ज़ा अदा कर देंगे। तो उस शख़्स ने कहा कि ठीक है। यह शख़्स हज़ार दीनार क़र्ज़ लेकर समुंद्र पार करके अपने घर पहुँच गया और उस से अपनी ज़रूरतें पूरी कर लीं और जब क़र्ज़ की मुद्दत पूरी हो गई तो वह शख़्स क़र्ज़ अदा करने के लिए एक हज़ार दीनार लेकर क़र्ज़ख़्वाह के यहाँ पहुँचने के लिए रवाना हो गया और समुंद्र के पास पहुंच कर किश्तियां तलाश करने लगा कोई भी किश्ती नहीं मिली। उसे सख़्त ख़दशा महसूस होने लगा कि ख़ुदा-न-ख़्वास्ता क़र्ज़ अदा करने से पहले मुद्दत पूरी न हो जाए। समुंद्र के किनारे मारा-मारा फिरने लगा किसी तरह सवारी नहीं मिली। आख़िरकार मजबूर होकर एक लकड़ी में सुराख़ किया और उस सुराख़ के अंदर एक हज़ार दीनार और एक पर्ची रखी और पर्ची के अंदर उसने यह लिखा कि ऐ समुंद्र मेरा क़र्ज़ा अदा करने में तू ही हायल हो रहा है। लिहाज़ा मैं अपना क़र्ज़ा तेरे हवाले करता हूँ। अब तू ही ज़िम्मादार है, चुनांचे लकड़ी के सुराख़ में वह पर्ची और हज़ार दीनार रखकर सूराख़ बंद कर दिया। उस के बाद उस लकड़ी को उस समुंद्र में यह कहकर बहा दिया कि ले अब तू ही ज़िम्मेदार है और अल्लाह से दुआ की कि ऐ अल्लाह मेरे क़र्ज़ा के अदा करने में यही समुंद्र हायल है मैं तुझे गवाह बनाता हूँ और तू ही गवाह है और तू ही कफ़ील है और दूसरी तरफ़ क़र्ज़ख़्वाह जब क़र्ज़ की मुद्दत पूरी होने लगी तो क़र्ज़दार के पास पहुँचने के लिए समुंद्र के किनारे पर पहुँचा तो उसे भी कोई सवारी नहीं मिली इत्तिफ़ाक़ से उसने देखा कि समुद्रं में से एक लकड़ी बहती हुई आई और वह लकड़ी समुंद्र के बिल्कुल किनारे पर आ गई और उसने इस इरादा से लकड़ी को उठा लिया कि घर में औरतें खाना पकाने में

ईंधन के काम लेंगीं, तो उस शख़्स ने जब लकड़ी को घर ले जाकर चीरा तो उसको हज़ार दीनार और वह पर्ची मिली तो अब उस क़र्ज़ ख़्वाह के ऊपर जो कुछ इबरत होनी थी हुई और क़र्ज़दार ने बाद में फिर अपने तौर पर एक हज़ार दीनार का मज़ीद इंतिज़ाम करके क़र्ज़ख़्वाह के पास आकर पेश किया और कहा कि लो अपना क़र्ज़, उस क़र्ज़ख़्वाह ने कहा कि आप का क़र्ज़ मुझे वसूल हो चुका है और आप की पर्ची भी मिल गई। *(बुख़ारी शरीफ़ जिल्द 1 सफ़हा 306)*

इमाम अबू हनीफ़ा रह॰ का मामलात में तक़वाऔर शक की वजह से 30 हज़ार दीनार दरहम का सदक़ा कर देना

हज़रत अली बिन हफ़स रज़ि॰ कहते है कि मेरे वालिद हफ़स बिन अब्दुर्रहमान इमाम अबू हनीफ़ा रह॰ के कारोबार में शरीक थे एक मर्तबा इमाम साहब ने उनके पास सामान बेचने के लिए भेजा और कहा कि इसमें एक कपड़ा है जिसमें फ़लां ऐब है इसलिए जब इसको बेचों तो लेने वाले को ऐब बयान करके बेचना। इत्तिफ़ाक़न यह हुआ कि हफ़स बिन अब्दुर्रहमान ने वह सब सामान बेच डाला और ऐब बताना भूल गए और यह भी याद न रहा कि किस ने वह कपड़ा ख़रीदा है जब इमाम साहब को मालूम हुआ कि उन्होंने ऐब बताए बिना सामान को बेच दिया है तो आपने उसकी सारी आमदनी सदक़ा फ़रमा दी। जिसकी मिक़्दार 30 हज़ार दरहम थी और हफ़स बिन अब्दुर्रहमान को उसके बाद शिरकत से अलग कर दिया। *(तज़्किरातुल नोअमान सफ़हा 208)*

हज़रत दाऊद तायी रह0 का लोगों की कमाईयों की आमदनी ठीक न होने की वजह से लोगों से हदाया लेना छोड़ देना

हज़रत दाऊद तायी रह॰ एक बुज़ुर्ग हैं जब उन्होंने देखा कि लोगों की कमाईयों की आमदनी ठीक नहीं रही तो लोगों से हदाया लेने छोड़ दिये। और बाहर निकलना छोड़ दिया। अंदर ही अंदर अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र करते रहे, जब उनके वालिद का इंतिक़ाल हुआ था तो बहुत क़लील रक़म छोड़ गए थे, जिस पर उन्होंने तीस साल गुज़ार दिए। जब यह भी ख़त्म हो गई तो मकान के पत्थर और छत की लकड़ियों को बेच कर गुज़ारा करा मगर लोगों से नहीं लिया जब उनका इंतिक़ाल हुआ तो सुबह से शाम जनाज़ा चला तब जाकर क़ब्रिस्तान पहुँचा। लोगों के हुजूम की कसरत की वजह से चौदह चारपाईयां (डोले) टूटीं और उस दिन उन की बरकत से छः लाख यहूदी मुसलमान हुए। *(मल्फ़ूज़ात व इक़्तिबासात मौलाना यूसुफ़ साहिब रह॰ सफ़हा 126)*

मौलाना अशरफ़ अली थानवी रह॰ का मामलात में तक़वा और रेल में सामान की टिकट लेने का एहतिमाम करना

मौलाना अशरफ़ अली थानवी रह॰ जब भी सफ़र में जाते तो आपके साथ जो भी सामान होता उसको बिना टिकट के कभी नहीं ले जाते एक मर्तबा सहारनपुर से कानपुर जाते हुए कुछ गन्ने (सिलेड़ी) साथ थे, आप उन्हें स्टेशन पर तुलवाने लगे तो रेलवे का

कोई नौकर तौलने पर तैयार न हुआ यहाँ तक कि ग़ैर-मुस्लिम भी कहने लगे कि हज़रत इसे तुलवाने की ज़रूरत नहीं वैसे ही ले जाईए हम गार्ड से कह देंगे। आपने फ़रमाया कि यह गार्ड कहाँ तक जाएगा? जवाब मिला कि ग़ाज़ियाबाद तक और वहाँ से गार्ड से कह देंगे जो कानपुर तक आप के साथ जाएगा, जहाँ आपका सफ़र ख़त्म हो जाएगा। आपने फ़रमाया कि मेरा सफ़र वहाँ ख़त्म न होगा बल्कि आगे एक आख़िरत का सफ़र है क़बर का सफ़र है, वहां कौन सा गार्ड आएगा? कल मैदान हश्र में मुझसे पूछा जाए कि एक सरकारी गाड़ी में सामान टिकट लिए बिना जो सफ़र किया और जो चोरी की उसका हिसाब दो तो वहाँ पर आपका कौनसा गार्ड मेरी मदद करेगा, यह कहकर टिकट ले ली। इस्लाम में सरकारी चोरी को भी चोरी कहते हैं। इसलिए बिना टिकट के रेलवे में बैठना गवारा न किया।

(बीस बड़े मुसलमान सफ़हा 353, इस्लाही ख़ुत्बात जिल्द 9 सफ़हा 80)

इमाम अबू हनीफ़ा का मामलात में तक़वा और सात साल तक बकरी का गोश्त न खाना

अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह० कहते हैं कि एक मर्तबा कूफ़ा में कुछ लोग बकरियां कहीं से लूटमार कर लाये और उन्होंने कूफ़ा के बाज़ार में बेच दीं। वह बकरियां शहर की बकरियों में मिल गईं और लूट की बकरियों की पहचान बाक़ी न रही। जब इमाम साहिब को यह वाक़िआ मालूम हुआ तो आपने लोगों से पूछा कि बकरी ज़्यादा से ज़्यादा कितने साल तक ज़िंदा रह सकती है। तो लोगों ने जवाब दिया कि सात साल तक। तो आपने कूफ़ा में रहते हुए सात साल

तक बकरी का गोश्त नहीं खाया। इसलिए कि कहीं यह वही चुराई हुई बकरी का गोश्त न हो। *(तज़्किरातुल नोअमान सफ़हा 12)*

इमाम अबू हनीफ़ा का तक़्वा और ढाई लाख का सदक़ा कर देना

एक मर्तबा इमाम साहिब रह॰ ने एक शख़्स को तिजारत के लिए वकील बना कर भेजा और फ़रमाया मिस्र में जाकर इस माल को बेचो। अव्वल तो उस शख़्स ने यह किया कि बेचने में ताख़ीर की, कि ज़रा भाव बाज़ार बढ़ जाए और माल की क़ीमत ज़्यादा मिले तो बेचूँ, चुनाँचे एक महीना तक उस माल को रोके रखा उसके बाद जब क़ीमत बढ़ गई तो एक लाख के बजाए दो लाख कमाया। ख़ूब मुनाफ़ा मिला, यह रक़म लेकर जब इमाम साहब की ख़िदमत में पेश की तो इमाम साहब का अंदाज़ा यह था कि *70* हज़ार या *80* हज़ार नफ़ा होगा और यहां तो ढाई लाख का नफ़ा, उससे पूछा इतना नफ़ा कैसे हुआ? उसने कहा अव्वल तो मैंने बेचने में तक़रीबन एक महीना की देरी की ताकि कुछ भाव बढ़ जाए और उसके साथ मैंने एक रुपया ज़्यादा बढ़ा दिया। फ़रमाया नाऊज़ु बिल्लाहि पहली सूरत एहतेकार की थी उसके मायने यह हैं कि माल की ताख़ीर करो ताकि ग्राहक मजबूर होकर ख़रीदे तो ग्राहक की मजबूरी से फ़ायदा उठाना यह हरामख़ोरी है। ग़र्ज़ एहतेकार शरियत में मना है कि माल बेचने में इसलिए ताख़ीर करना कि उसकी क़ीमत ज़्यादा उठेगी बल्कि अपने वक़्त पर बेचो आम तौर से जितनी क़ीमत है उस पर माल बेचो, माल का इंतिज़ार में रखना कि क़ीमत चार गुनी हो जाए वह शरियत ने हराम क़रार दिया है फिर फ़रमाया कि सारा का सारा माल ग़रीबों में सदक़ा कर दिया जाए।

तो ढाई लाख रूपया उसी वक़्त ग़रीबों में तक़सीम कर दिया। यह उनका तक़वा थ। *(ख़ुत्बात हकीमुलइस्लाम जिल्द 8 सफ़हा 325)*

मौलाना अशरफ़ अली थानवी रह॰ का अपने ख़लीफ़ा से सिर्फ़ बच्चा की आधी टिकट लेने की वजह से ख़िलाफ़त वापिस ले लेना

मौलाना अशरफ़ अली थानवी रह॰ के एक मुरीद थे, जिनको आपने ख़िलाफ़त भी अता फ़रमाई थी और उनको बैयत करने की इजाज़त दे दी थी, एक मर्तबा वह सफ़र करके हज़रत वाला की ख़िदमत में तशरीफ़ लाए, उनके साथ उनका बच्चा भी था, उन्होंने आकर सलाम किया और मुलाक़ात की और बच्चों को भी मिलवाया कि हज़रत यह मेरा बच्चा है उसके लिए दुआ फ़रमा दीजिए, हज़रत वाला ने बच्चा के लिए दुआ फ़रमाई और फिर वैसे ही पूछ लिया कि उस बच्चा की उम्र क्या है? उन्होंने जवाब दिया कि हज़रत उसकी उम्र *13* साल की है। हज़रत ने पूछा कि आपने रेल गाड़ी का सफ़र किया है। तो इस बच्चा का आधा टिकट लिया था या पूरा लिया था। उन्होंने जवाब दिया कि बारह साल से ज़ायद उम्र के बच्चों का पूरा टिकट लगता है, क़ानून तो यही है कि बारह साल के बाद टिकट पूरा लेना चाहिए और यह बच्चा 13 साल का है लेकिन देखने में 12 साल का लगता है। इस वजह से मैंने आधा टिकट लिया। हज़रत ने फ़रमाया इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलिहि राजेऊन मालूम होता है कि आपको तसव्वुफ़ और तरीक़त की हवा भी नहीं लगी। आपको अभी तक इस बात का अहसास नहीं कि बच्चा का जो सफ़र आपने कराया यह हराम कराया है। जब क़ानून यह हैं कि 12 साल से ज़ायद उम्र के बच्चे का टिकट पूरा लगता है और

आपने आधा टिकट लिया तो उसका मतलब यह है कि आपने रेलवे के आधे टिकट के पैसे ग़ज़ब कर लिए और आपने चोरी कर ली और जो शख़्स चोरी और ग़सब करे ऐसा शख़्स तसव्वुफ़ और तरीक़त में कोई मुक़ाम नहीं रख सकता लिहाज़ा आज से आपकी ख़िलाफ़त और बैयत की इजाज़त वापिस ली जाती है। चुनाँचे इस बात पर उनकी ख़िलाफ़त छीन ली, हालांकि वह अपने मामूलात में इबादत व वज़ाईफ़ और नवाफ़िल में मुकम्मिल थे, सिर्फ़ यह ग़लती की कि बच्चे की टिकट पूरी नहीं ली। *(इस्लाही ख़ुत्बात जिल्द 9 सफ़हा 78)*

फ़ायदा

मामलात यानि कारोबार में लेनदेन करना भी एक बहुत बड़ा शोअबा है असल में दीन के पांच शोअबे हैं (1) ईमान का (2) इबादत का (3) मामलात (4) माअशरत का (5) अख़्लाक़ियात का आज हमारी ज़िंदगी में इबादत की तो हम फ़िक्र करते हैं जैसे पांच वक़्त की फ़र्ज़ नमाज़ है और इशराक़, चाश्त, अवाबीन, तहज्जुद की नफ़िल नमाज़ें है। ख़ूब एहतेमाम करते हैं लेकिन मामलात में हद से ज़्यादा लापरवाही बरती जाती है हालांकि मामलात की ख़राबी से इबादत भी ख़राब भी हो जाती है जैसी हदीस का मफ़हूम है कि एक हराम का लुक़्मा खाने से चालीस दिन की इबादत क़बूल नहीं होती तो मालूम हुआ कि इबादत के क़बूल होने के लिए मामलात का सही होना ज़रूरी है और सही मामलात करना यानि हलाल रोज़ी कमाना ख़ाली इबादत को क़बूल नहीं करवाता बल्कि हलाल रोज़ी इबादत की तरफ़ ले जाती है जैसे इमाम अहमद बिन हंबल रह॰ के वाक़िआ से मालूम हुआ कि हलाल रोज़ी की बरकत से एक रात में क़ुरआन की एक आयत से फ़िक़्हा के सौ मसाइल निकाले और पूरी

रात इबादत की तौफीक़ हुई इसलिए हम अपनी कमाईयों की तरफ़ देखें कि हराम कमा रहे हैं या हलाल अगर भूल से हराम का खाना खा लिया, खा कर याद आया कि हराम का खाना तो था, तो क्या हमारी हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ जैसी हालत होती है कि उंगली डालकर कै कर दें या नहीं होती और कैसे हो जबकि जानबूझ कर हराम माल कमाते हैं। मुसलमान को मालूम है कि शराब बेचना, फटाकरे, पतंग बेचना, ग़ैरों की मूर्तियां, इसी तरह हर उस चीज़ को बेचना जिसको क़ुरआन हदीस में मना फ़रमाया है फिर भी बेचता है और अगर कोई आलिम समझाए कि यह तो हराम है तो हम ऐसे जवाब देते हें कि जिस से आदमी कुफ़्र तक पहुंच जाता है कि हमारे बच्चे ज़्यादा हैं हमारे खाने वाले ज़्यादा हैं और ज़माना में तो हराम कमाना ही पड़ता है इसलिए कि मंहगाई बढ़ गई और हराम के बिना तो ज़िंदगी गुज़र ही नहीं सकती और यह जवाब किसी जाहिल और अनपढ़ का नहीं होता बल्कि दावत में वक़्त लगाए हुए साथियों का होता है। ज़रा सोचने की चीज़ है! हालांकि इमाम अबू हनीफ़ा रह० के दोनों वाक़िआत से मालूम हुआ कि एक मर्तबा 30 हज़ार और एक मर्तबा ढाई लाख जैसी बड़ी रक़म को एक छोटी सी बात की वजह से ग़रीबों को सदक़ा कर दिया। अपने पास रखना गवारा न किया। आज तो हम इस तरह पैसे कमाने को अक़्लमंदी समझते हैं कि मैंने खराब माल को अपनी होशियारी और ज़बान की चापलूसी से बेच दिया और हमारा नौकर या हमारा (पार्टनर) भागीदार ऐसा करे तो हम उसकी तंख्वाह बढ़ा देते हैं कि तू बहुत अच्छा काम करता है हालांकि इमाम अबू हनीफ़ा रह० के वाक़िआत से मालूम हुआ कि इमाम साहिब ने अपने भागीदार को सिर्फ़ इस बात पर कि उसने बेचते वक़्त ऐब नहीं बताया भूलकर जान बूझकर नहीं फिर

भी अपनी भागीदारी से उसको अलग कर दिया। यह था उनका हलाल कारोबार और दूसरी बात यह है कि सरकारी जितनी चीज़ें हैं जैसे रेलवे का किराया घरों में मीटर का बिल इसी तरह जो भी सरकारी चीज़ें हैं उसमें भी कमी कोताही करना बहुत बहुत गुनाह है आज हमको ऐसी चीज़ों का अहसास तक नहीं है हम उसको गुनाह भी नहीं समझते कुछ लोग तो रेलवे या बस में सामान लेकर सफ़र करते हैं तो लगेज टिकट नहीं लेता या तो झूठ बोलकर कि वज़न कम है या तो पहचान की वजह से कि ड्राइवर या कंडक्टर पहचानने वाला है तो यह भी चोरी है इसलिए कि इन दोनों की गाड़ियां नहीं हैं और मीटर में चोरी करते हैं और बिल वाले को पैसा खिलाते हैं। यह भी चोरी है इसलिए कि वह खुद मालिक नहीं है। तो सरकार की चोरी को आज हम गुनाह भी नहीं समझते, हालांकि मौलाना अशरफ़ अली थानवी रह॰ के वाक़िआत से मालूम हुआ कि रेलवे में सामान की टिकट के बिना बैठने के लिए गार्ड या टिकट वाले ने कहा कि हम तुम्हारे साथ हैं टिकट की ज़रूरत नहीं है तो कैसा जवाब दिया कि कल क़ब्र में मैदाने-महशर में मेरे साथ कौन आएगा? तो सब चुप हो गए। आज तो हमें आख़िरत की कोई फ़िक्र नहीं, ख़ाली दुनिया में किसी को ख़बर न पड़नी चाहिए कि हमने टिकट नहीं ली है या मीटर में चोरी नहीं की है अल्लाह का कोई ख़ौफ़ डर नहीं है, हालांकि हम नमाज़ों का, नवाफ़िलों का ख़ूब एहतेमाम करते हैं और उसी को बुर्ज़ुगी समझते हैं। बुर्ज़गी इसको नहीं कहते जैसे मामलात में पाकीज़गी या एहतियात न हो जैसे मौलाना अशरफ़ अली थानवी रह॰ के वाक़िआत से मालूम हुआ कि आपने ख़लीफ़ा से ख़िलाफ़त सिर्फ़ बच्चे की आधे टिकट लेने की वजह से वापिस ले ली कि तुम ख़िलाफ़त के लायक़ नहीं हो हालांकि

इबादत वज़ाइफ़ में बहुत मुकम्मिल थे। जैसे सहाबा के वाक़िआत से मालूम हुआ कि ख़ाली ज़मीन बेचने और अंदर से सोना चांदी की देग निकली तो आपस में इस बात पर झगड़ा हो रहा है कि तुम्हारी है वह कहता है कि तुम्हारी है और आज हमारा झगड़ा किसी के हक़ को अपना हक़ बनाने का होता है उसकी वजह यह है कि हमारे दिलों में दुनिया की मुहब्बत भरी है इसलिए हम दुनिया से जो हर हाल में छूटने वाली है इससे मुहब्बत न करें जब मुहब्बत नहीं करेंगे तो फिर हराम कमाने की ज़रूरत भी नहीं आएगी आज हम ख़्वाहिशात को ओर तमन्नाओं को पूरा करने के लिए न हराम और न हलाल की परवाह करते हैं, अल्लाह हम सबकी हिफ़ाज़त फ़रमा दे।

सातवीं सिफ़त

अख़्लाक़े-अज़ीमा

यानि तकलीफ़ देने वाले को सिर्फ़ माफ़ नहीं करना बल्कि माफ़ करके ऊपर से उसके साथ अहसान का मामला करना

हदीस शरीफ़

हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि जो शख़्स यह पसंद कर ले कि क़यामत में उसे बुलंद मुक़ामात मिलें, उसको ऊँचे दर्जे मिलें उसको चाहिए कि जो शख़्स उस पर ज़ुल्म करे उस से दरगुज़र करे, जो उसको अपनी अता से महरूम रखे उस पर अहसान करे और जो उससे ताल्लुक़ात तोड़े उससे ताल्लुक़ात जोड़े। *(दर्रे-मन्शूर)*

हज़रत अबूहुरैराह हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद नक़ल करते हैं कि आदमी ख़ालिस ईमान तक उस वक़्त नहीं पहुंच सकता जब तक यह काम न करे कि अपने से ताल्लुक़ तोड़ने वालों के साथ ताल्लुक़ात जोड़ा करे, अपने ऊपर ज़ुल्म करने वालों को माफ़ करे, अपने को गालियां देने वाले को बख़्श दिया करे और जो अपने साथ बुराई करे उसके साथ भलाई करे। *(दर्रे-मन्शूर)*

मुसलमान को तकलीफ़ देना बैतुल्लाह को गिराने से ज़्यादा सख़्त गुनाह है

नबी करीम सल्ल॰ एक मर्तबा बैतुल्ला का तवाफ़ फ़रमा रहे थे।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद साथ थे। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद फ़रमाते हैं कि मैंने देखा कि नबी करीम सल्ललललाहू अलैहि व सल्लम काबा को ख़िताब करके फ़रमा रहे हैं ऐ अल्लाह के घर तू कितनी हुरमत वाला है। कितनी अज़मत वाला है। फिर फ़रमाया कि लेकिन एक चीज़ ऐसी है जिसकी अज़मत तुझसे भी ज़्यादा है। हज़रत अब्दुल्लाह फ़रमाते हैं कि एक दम से मेरे कान खड़े हो गए कि वह कौन सी चीज़ है कि जिसकी इज़्ज़त व हुरमत बैतुल्लाह से भी ज़्यादा है। फिर आप सल्ललललाहू अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मुसलमान की जान, उसका माल, उसकी आबरू है। यानि इसका मतलब यह है बैतुल्लाह को ढहाना, मुन्हदिम कर देना जितना बड़ा गुनाह है, उतना ही किसी मुसलमान की जान माल आबरू पर नाहक़ हमला करना गुनाह है। *(इब्ने माजाह, इस्लाही ख़ुत्बात जिल्द 3 सफ़हा 53)*

अख़्लाक़ तीन तरह के होते हैं

(1) अख़्लाक़ ए हस्ना
(2) अख़्लाक़ ए करीमा
(3) अख़्लाक़ ए अज़ीमा

अख़्लाक़ ए हस्नाः अख़्लाक़ का इब्तिदाई दर्जा है
अख़्लाक़ ए करीमाः अख़्लाक़ का दरम्यानी दर्जा है
अख़्लाक़ ए अज़ीमाः अख़्लाक़ का सबसे ऊँचा दर्जा है

अख़्लाक़-ए-हस्ना किस को कहते हैं

अगर कोई किसी के ऊपर हमला कर दे उसकी आँख फोड़ दे तो उसे भी हक़ हासिल है कि हमला करके आँख फोड़ दे यानि बदला तो ले। लेकिन बराबर इंसाफ़ के साथ तो उसको अख़्लाक़

हस्ना कहते हैं जिसकी तालीम हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम को दी।

अख़्लाक़-ए-करीमा किस को कहते हैं

अगर किसी ने कोई तकलीफ़ या कोई नुक़सान पहुंचा दिया तो उसका बदला लेने का हक़ था लेकिन बदला का हक़ हासिल होने के बावजूद उसको माफ़ कर दिया तो उसको कर दिया। तो इसको अख़्लाक़-ए-करीमा कहते हैं जिसकी तालीम हज़रत ईसा अलिहिस्सलाम ने अपनी क़ौम को दी।

अख़्लाक़-ए-अज़ीमा किस को कहते हैं

अगर किसी ने आपके साथ बुरा मामला किया या कोई तकलीफ़ दी तो आपका हक़ है कि बदला लें लेकिन फिर भी माफ़ कर दिया और ख़ाली माफ़ नहीं किया बल्कि उसके साथ ऊपर से अहसान भी किया तो उसको अख़्लाक़-ए-अज़ीमा कहते हैं। जिसकी तालीम अल्लाह के नबी सल्ललललाहू अलैहि व सल्लम ने अपनी उम्मत को दी जैसे कि हदीस का मफ़हूम है कि जो तुम्हारे साथ क़ताअ ताल्लुक़ करे तुम जोड़ने की कोशिश करो और जो तुम्हारे साथ बुराई करे तुम उसके साथ भलाई करने की कोशिश करो और जो तुम पर ज़ुल्म करे तो उसको माफ़ करो।

(ख़ुत्बात हकीमुल इस्लाम जिल्द 1 सफ़हा98)

आप सल्ल॰ के अख़्लाक़ ए अज़ीमा और आप सल्ल0 के दुश्मन

मुनाफ़िक़ों के सरदार अब्दुल्लाह बिन अबी काअब की नमाज़ जनाज़ा पढ़ाना और एक हज़ार मुनाफ़िक़ों का मुसलमान हो जाना

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० की रिवायत है कि जब अब्दुल्लाह बिन अबी सलूब मर गया तो उसके लड़के अब्दुल्लाह जो मुख़्लिस मुसलमान सहाबी थे वह आप सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए और दरख़्वास्त की कि आप अपना क़मीज़ अता फ़रमा दें ताकि मैं अपने बाप को उसका कफ़न पहनाऊँ आप सल्ललाहू अलैहि व सल्लम ने अपना क़मीज़ अता फ़रमाया फिर हज़रत अब्दुल्लाह ने फ़रमाया कि आप उनके जनाज़ा की नमाज़ भी पढ़ा दें क़बूल फ़रमा लिया और जनाज़ा की नमाज़ के लिए खड़े हुए तो हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० ने आप को मना किया और आप का कपड़ा पकड़ कर अर्ज़ किया कि आप इस मुनाफ़िक़ की नमाज़ अदा करते हैं हालांकि अल्लाह ने आप को इस की नमाज़ से मना किया है। आप सल्ल० ने फ़रमाया कि मुझे इख़्तियार दिया कि मैं मग़फ़िरत की दुआ करूँ कि न करूँ। फिर उसके बाद आप ने नमाज़ पढ़ाई। नमाज़ के बाद क़ुरआन की आयत उतरी कि उसके बाद आप कभी भी किसी मुनाफ़िक़ की नमाज़ न पढ़ाइये। लेकिन आप ने नमाज़ इसलिए पढ़ाई थी कि मुझे उम्मीद है कि इस अमल से उस क़ौम के हज़ार आदमी मुसलमान हो जाएंगे। चुनाँचे इस वाक़िआ को देखकर क़बीला ख़ज़्रज के एक हज़ार मुनाफ़िक़ मुसलमान हो गए यह अख़्लाक़ की वजह से था। *(मआरिफ़ उल क़ुरआन जिल्द 4 सफ़हा 434)*

हज़रत उमर रज़ि. के अख़्लाक़े-अज़ीमा और जबला बिन अबहम के निकाह में अपनी बेटी देने के लिए तैयार हो जाना

हज़रत उमर के ज़माने में जबला बिन अबहम जो रोम का बादशाह या गर्वनर था इस्लाम में दख़िल हुआ इस्लाम, क़बूल करके मदीना आया और मक्का मुकर्रमा में हज के लिए गया और वहाँ जाकर बैतुल्लाह का तवाफ़ कर रहा था और वहाँ एक देहाती था जो तवाफ़ में मशगूल था। तवाफ़ करते करते देहाती का पैर जबला बिन अबहम की लुंगी पर पड़ गया और लुंगी खुल गई तो वह अपने वहाँ का बादशाह था उसने देखा कि मेरी लुंगी पर एक देहाती का पैर पड़ गया उसने ज़ोर से एक तमांचा मारा तो देहाती बेचारा चोट खाकर गिर गया। देहाती ने हज़रत उमर रज़ि. के यहाँ जाकर दावा किया कि इसने मुझे नाहक़ तमाचा मारा है उसकी लुंगी पर जानबूझ कर मैंने पैर नहीं डाला था। हज़रत उमर रज़ि. ने फ़रमाया कि लुंगी पर पैर ज़रूर पड़ा होगा लेकिन यह मौक़ा ऐसा है कि वंहां इरादा से कोई पांव नहीं डाल सकता ऐसे ही हो जाता है इस वजह से तुम से क़सास लिया जाएगा। यह देहाती भी तुमको इतनी ज़ोर से तमाचा मारेगा। जबला बिन अबहम ने कहा कि एक बादशाह और देहाती बराबर हो गया। हज़रत उमर रज़ि. ने फ़रमाया इस्लाम में सब बराबर हैं कोई ऊँच-नीच नहीं है। यह बात उसे सख़्त नागवार गुज़री तो वह रातों-रात भाग गया और इस्लाम छोड़कर मुरतिद हो गया

और फिर से ईसाई बन गया। ईसाईयों में बड़ी ख़ुशी मनाई गई कि हमारा बादशाह वापिस आ गया और जो बादशाहत छीन ली गई थी वह वापिस मिल गई और जाकर बादशाह तख़्त पर बैठ गया। एक मर्तबा एक सहाबी क़ुस्तुन्तूनिया तिजारत के लिए तशरीफ़ ले गए थे, तो जबला बिन अबहम को ख़बर हुई कि एक सहाबी आए हैं तो उसने उन सहाबी को बुलाया सहाबी गए, तो उसने कहा कि आपको मालूम है कि मैं इस्लाम ले आया था लेकिन एक देहाती के साथ मेरा मुक़दमा हुआ तो मैं यह कहकर चला आया कि एक बादशाह और एक देहाती बराबर नहीं हो सकते। लेकिन आने के बाद मैंने देखा कि आज तक न मेरे दिल को सुख मिला न चैन। सच्ची बात वही थी जो हज़रत उमर रज़ि॰ ने फ़रमाई थी और मैं उसपर शर्मिंदा भी हुआ। मैं मुरतिद हुआ मुझे बादशाहत फिर से मिल गई। लेकिन मेरा जी चाहता है कि मैं फिर इस्लाम में दाख़िल हो जाऊँ, मगर मैं बादशाह हूँ और अगर मुझे इस से बड़ी कोई चीज़ मिल जाए तो मैं यह कहकर बादशाहत छोड़ दूँ कि भई कोई हर्ज नहीं है अगर बादशाहत जाए तो मुझे फ़लां नेअमत भी मिली और वह यह है कि अगर अमीरूल मोमीनीन हज़रत उमर रज़ि॰ अपनी बेटी से मेरी शादी कर दें और उसका वादा दे दें। तो उसको हीला बनाकर इस्लाम में दाख़िल हो जाऊँगा। बाद में वह शादी करें या न करें मगर मेरे लिए एक हीला और अज़र बन जाएगा। मैं अपनी क़ौम से कहूँगा कि अमीरूल मोमीनीन हज़रत उमर रज़ि॰ जैसा बादशाह जिससे दुनिया के बादशाह डरते हैं जब अपनी बेटी दे रहा है तो मेरी इस बादशाहत से उनकी बेटी ज़्यादा इज़्ज़त वाली है मैं फिर इस्लाम क़बूल कर लेता हूँ। उन सहाबी ने कहा कि मैं वापिस जाकर अमीरूल मोमीनीन के पास जाकर ज़िक्र करूँगा और उसके बाद फिर

मैं आपके पास आऊँगा। चुनाँचे यह वापिस हुए और हज़रत उमर रज़ि. से यह सारा वाक़िआ बयान फ़रमाया। हज़रत उमर रज़ि. ने फ़रमाया तुमने क्यों वहीं वादा न दे दिया। उमर की बेटी इस्लाम के मुक़ाबले में क्या चीज़ है। अगर एक शख़्स इस्लाम ले आए और उमर की बेटी उसके निकाह में चली जाए, मेरी बेटी की इस्लाम के मुक़ाबले में कोई वक़अत नहीं है, तुम्हें वायदा कर लेना चाहिए था कि ठीक है मेरा वादा है, सहाबी ने फ़रमाया कि मैं डर रहा था कि मैं कैसे वादा कर लूँ। हज़रत उमर रज़ि. ने फ़रमाया- नहीं, फ़ौरन वापिस जाओ और क़स्तुन्तुनीया का सफ़र करो और कहो कि उमर की बेटी हाज़िर है। तू इस्लाम क़बूल कर। चुनाँचे वह वापिस हुए जब क़स्तुन्तूनिया में दाख़िल हुए तो जबला बिन अबहम का जनाज़ा निकल रहा था। उसकी क़िस्मत में इस्लाम नहीं था। ईमान पर ख़ात्मा न हुआ सहाबी बेचारे वापिस चले आए। हज़रत उमर के कैसे अख़्लाक़ थे कि अपनी बात नहीं मानी, इंकार कर दिया फिर भी इस्लाम में दाख़िल होने के लिए अगर बेटी से निकाह के लिए कहता है तो अपनी बेटी देने के लिए तैयार हैं। यह है अख़लाक़ ए अज़ीमा। *(ख़ुत्बात ए हकीमुल इस्लाम जिल्द 3 सफ़हा 38)*

हज़रत अमीर माविया रज़ि. के अख़्लाक़-ए-अज़ीमा और वायल बिन हजर को जूती न देने के बावजूद और ऊँटनी पर न बैठाने के बावजूद अपने तख़्ते-शाही पर बैठाना

हज़रत वायल बिन हजर रज़ि. फ़रमाते हैं हक हमें हुज़ूर सल्ल. के मदीना हिजरत फ़रमाने की ख़बर पहुंची तो मैं अपनी क़ौम का नुमाइंदा बनकर चला। यहां तक मैं मदीना पहुंच गया और हुज़ूर

सल्ललल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुलाक़ात से पहले आप के सहाबा रज़ि. से मेरी मुलाक़ात हुई, उन्होंने मुझे बताया कि तुम्हारे आने से तीन दिन से पहले हुज़ूर सल्ल0 ने हमें तुम्हारी बशारत दी थी और फ़रमाया था कि तुम्हारे पास वायल बिन हजर आ रहे है। फिर आप की सल्ल. से मुलाक़ात हुई। तो आप ने मुझे खुश आमदीद कहा और फिर मुझे अपने क़रीब जगह दी और अपनी चादर बिछा कर मुझे उस पर बिठाया। फिर लोगों को बुलाया। चुनांचे सब लोग जमा हुए। फिर हुज़ूर सल्ल0 मिंन्बर पर तशरीफ़ फ़रमा हुए और मुझे अपने मिंन्बर पर ले गए। मैं मिंन्बर पर आप सल्ल. से नीचे था। फिर आप सल्ल. ने अल्लाह की हम्द व सना बयान फ़रमाई और फ़रमाया ऐ लोगों! यह वायल बिन हजर हैं और दूरदराज़ के इलाक़ा हज़रमौत से तुम्हारे पास आए हैं। अपनी खुशी से आए हैं किसी ने इन्हें मजबूर नहीं किया है और वहां शहज़ादों में से यही बाक़ी रह गए, ऐ वायल बिन हजर अल्लाह तुममें और तुम्हारी औलाद में बरकत फ़रमा दे। फिर हुज़ूर सल्ल मिंन्बर पर से नीचे तशरीफ़ ले आए और मदीना से दूर एक जगह मुझे ठहराया और हज़रत माविया बिन अबी सुफ़ियान रज़ि. से फ़रमाया कि वह मुझे साथ ले जाकर उस जगह ठहरें। चुनांचे मैं मस्जिद से चला और हज़रत माविया रज़ि. ने कहा ऐ वायल इस गर्म ज़मीन ने मेरे पांव के तलुवे जला दिए मुझे अपने पीछे बिठा लो, मैंने कहा मैं तुम्हें इस ऊँटनी पर बिठाने में बुख़्ल न करता लेकिन तुम शहज़ादे नहीं हो। इसलिए तुम्हें साथ बिठाने में लोग मुझे ताना देंगे कि क्या मामूली आदमी को साथ बिठा रखा है और मुझे यह पसंद नहीं है। फिर हज़रत माविया रज़ि. ने कहा अच्छा जूती उतार कर मुझे दे दो, इसे पहन कर ही मैं सूरज की गर्मी से खुद को बचा लूँगा। मैंने कहा यह दो चमड़े तुम्हें

देने मे बुख़्ल न करता लेकिन तुम उन लोगों में नहीं हो जो बादशाहों का लिबास पहनते हैं इसलिए जूती देने पर लोग ताना देंगे, और यह मुझे पसंद नहीं है। आगे और हदीस ज़िक्र की है। इसके बाद यह है कि जब हज़रत माविया रज़ि॰ बादशाह बन गए, तो उन्होंने क़ुरैश के हज़रत बसर बिन अरताह को भेजा और उससे कहा कि मैंने इस कोना वालों को तो अपने साथ इकट्ठा कर लिया है (यह सब तो मुझ से बैयत हो गए हैं) तुम अपना लश्कर लेकर चलो जब तुम हदूद शाम से आगे चले जाओ अपनी तलवार निकाल लेना और जो मेरे लिए बैयत से इंकार करे उसे क़त्ल कर देना और अगर तुम्हें हज़रत वायल बिन हजर ज़िंदा मिलें तो उन्हें मेरे पास ले आना। चुनांचे हज़रत माविया रज़ि॰ ने मेरे शायाने-शान इस्तिक़बाल का हुक्म दिया और मुझे अपने दरबार में आने की इजाज़त दी और मुझे अपने साथ अपने तख़्त पर बिठाया। और मुझ से कहा क्या मेरा यह तख़्त बेहतर या आपकी ऊँटनी की पुश्त? मैंने कहा ऐ अमीरूल मोमीनीन मैं कुफ़्र व जाहिलियत छोड़कर नया-नया इस्लाम में दाख़िल हुआ था और जाहिलियत वाले तौर तरीक़े अभी ख़त्म नहीं हुए थे और मैंने सवारी पर बिठाने से और जूती देने से जो इंकार किया था यह सब जाहिलियत का असर था। *(हैशमी जिल्द 9 सफ़हा 376)*

इमाम अबू हनीफ़ा रह॰ के अख़्लाक़े-अज़ीमा और एक शराबी मोची का फ़क़ीह बन जाना

इमाम अबू हनीफ़ा रह॰ का एक पड़ोसी मोची था सारे दिन जूते सीने का काम करता और शाम को शराब पी कर घर आता

और शेअर गाता। इमाम साहब रात को नमाज़ पढ़ते तो उसकी आवाज़ सुनाई देती थी। नमाज़ में तकलीफ़ होती थी। एक मर्तबा रात में आवाज़ नहीं आई तो उसके बारे में लोगों से मालूम किया। मालूम हुआ कि पुलिस पकड़ ले गई है। इमाम साहब सुबह की नमाज़ पढ़ते ही अपने ख़च्चर पर सवार होकर शहर के वअली के दरवाज़े पर पहुंचे दरबान ने अमीर को ख़बर की अमीर ने हुक्म दिया कि मेरे दरबार में सवार होकर तशरीफ़ लाइये। जब इमाम साहब पहुंचे तो बहुत इकराम किया और कहा कि ज़्यादा मुनासिब यह था कि मैं खुद आपकी ख़िदमत में हाज़िर हो जाता। आप ने ख़बर क्यों न कर दी। इस पर इमाम साहब ने फ़रमाया मेरे एक पड़ोसी को पुलिस ने चंद रातों से पकड़ रखा है, तो उसको छोड़ने का हुक्म फ़रमा दें। अमीर ने फ़रमाया अभी ले जाइये और हुक्म दिया कि उस रात से अब तक जो लोग गिरफ़्तार हुए हैं सब को छोड़ दिया जाए। जब इमाम साहब अमीर के पास से वापिस हुए तो मोची पीछे पीछे चल पड़ा। इमाम साहब ने फ़रमाया ऐ नौजवान हम ने तुझे ज़ायाअ़ कर दिया। उसने कहा हरगिज़ नहीं, बल्कि आप ने बड़ी रिआयत की। अल्लाह आपको पड़ोसी की रिआयत का बेहतरीन बदला दे। उसके बाद उस मोची ने तौबा कर ली और कभी शराब नहीं पी, इमाम साहिब की मजलिस में हाज़िर होने लगा, यहां तक कि फुक़हा-ए-इकराम की सफ़ में उसका शुमार हो गया।

(तज़्करातुल नोअमान सफ़हा 266, हयातुल हैवान जिल्द 1 सफ़हा 378)

फ़ायदा

तीन तरह के अख़्लाक़ जो पहले बयान किए अख़्लाक़ हस्ना, अख़्लाक़े-करीमा, अख़्लाक़े-अज़ीमा, उनमें सबसे अच्छे अख़्लाक़, अख़्लाक़े-अज़ीमा यानि जो तकलीफ़ देने वाले को ख़ाली माफ़ नहीं

करना बल्कि उसके साथ उसपर अहसान भी करना और यही वह अख़्लाक़ है जो सामने वाले के दिल को फेर देता है और लोगों पर उसका असर भी पड़ता है। जैसे आप सल्ल॰ के वाक़िआ से मालूम हुआ कि आप सल्ललललाहू अलैहि व सल्लम ने अपने दुश्मन मुनाफ़िक़ों के सरदार अब्दुल्लाह बिन अबी को अपना कुर्ता कफ़न के लिए दिया और जनाज़ा की नमाज़ भी पढ़ाई जिसकी वजह से लोगों पर इतना असर हुआ कि एक हज़ार मुनाफ़िक़ों ने कल्मा पढ़ा और मुसलमान हो गए। आज तो हमारे अख़्लाक़ इतने बुरे हैं कि हमारा मुसलमान भाई है रिश्तेदार है और उसके साथ हमारी अनबन हो जाए तो उनसे इतनी नफ़रत होती है कि हम उसके जनाज़े में भी नहीं जाते और वहां तो अपने दुश्मन मुनाफ़िक़ की नमाज़ पढ़ा रहे हे। यह है अख़्लकाक़े-अज़ीमा जिसकी वजह से एक हज़ार मुसलमान हुए। इसलिए इस वाक़िआ से हम इबरत हासिल करें और दूसरी बात यह है कि अगर हम अमीर हैं और कोई साथी हमारी बात ठुकरा कर भाग जाए और वह बुरे हाल में मुलव्विस हो जाए और हमको पता चले तो हम बजाए उसकी फ़िक्र करने के हम क्या करते हैं कि देखो उसने मेरी बात नहीं मानी मैं अमीर था तो अल्लाह ने बता दिया कि अमीर की बात कैसे मानी जाती है हालांकि ऐसे अमीर को अमीर नहीं कहते, ऐसे साथी को दावत का साथी नहीं कहते बल्कि उसको ज़ाजिम कहते हैं दाअ़ई तो उसको कहते हैं जो अपने साथी के बारे में बेचैन हो जाए जैसे हज़रत उमर रज़ि॰ के वाक़िआ से मालूम हुआ कि जबला बिन अबहम जिस ने अमीर की बात न मानी और भाग गया और मुरतिद भी हो गया और वह यों कहता है कि अगर अमीरूल मोमीनीन अपनी बेटी का निकाह मुझसे करें, तो मैं इस्लाम में दाख़िल हो जाऊँ। तो हज़रत उमर रज़ि॰ ने

क्या जवाब दियाः उमर की बेटी की क्या हैसियत है अगर जबला इस्लाम लाता है। ज़रा ग़ौर करने की बात है इस वाक़िआ पर कि हज़रत उमर रज़ि॰ के दिल में अपने साथी की क्या फ़िक्र थी कि वह फिर से मुसलमान बन जाए। इसी का नाम है अख़्लाक़ और इसी का नाम है दावत की फ़िक्र। आज तो हमें दावत में लगे सालहासाल हो गए। लेकिन हमारा पड़ोसी हमारी बात नहीं मानता और कैसे माने जबकि हमने उसके सामने अच्छे अख़्लाक़ पेश ही नहीं किये। हमारा पड़ोसी हमारा साथी हमारी बात से उस वक़्त तक असर नहीं लेगा जब तक कि हम उसके सामने अख़्लाक़े-अज़ीमा न पेश करें। जैसे इमाम अबू हनीफ़ा रह॰ के वाक़िआ से मालूम हुआ कि इमाम साहब ने अपने तकलीफ़ देने वाले पड़ोसी को जेलख़ाना में जाकर छुड़वाया। जिसकी बरकत से वह शराब पीने वाला मोची तौबा करके बहुत बड़ा फ़क़ीह बन गया और आज तो हम अपने पड़ोसी को जेलख़ाना रवाना करने की फ़िक्र में रहते हैं कि कब यह जाए और हम को राहत मिले फिर हमारी दावत बिना अख़्लाक़ के कैसे असर करेगी। इसलिए हम अपने अख़्लाक़ दुरूस्त करने की फ़िक्र करें। अगर अख़्लाक़ अज़ीमा और अख़्लाक़ करीमा का मुज़ाहिरा न करें तो कम से कम अख़्लाक़े-हस्ना का मुज़ाहिरा ज़रूर करें। जितना नुक़सान किया उतना ही बदला लें, उससे ज़्यादा न लें वर्ना ज़ुल्म हो जाएगा। अल्लाह हम सबको अमल की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

आठवीं सिफ़त

तवक्कल यानी अल्लाह पर भरोसा करना

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि अल्लाह पर तवक्कल का मतलब यह है कि अल्लाह के अलावा ग़ैर से कोई उम्मींद न रखी जाए। *(दर्रे मंशूर)*

इसलिए अल्लाह पर तवक्कल करने वालों के लिए ज़रूरी है कि वह हर मुसीबत और हर हालत में सिर्फ़ उसी को पुकारें। उसी से मदद चाहें। उसी पर नज़र रखें अल्लाह के सिवा किसी के सामने हाथ न फैलाएं। बल्कि दिल में भी किसी दूसरे का ख़्याल न लाएं जब यह बात पैदा हो जाएगी तो फिर ग़ैब से रोज़ी का वादा और अपनी किफ़ालत का वादा अल्लाह पूरा करके दिखाएगा।

हदीस शरीफ़

हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि अगर तुम लोग अल्लाह से ऐसा तवक्कल करो जैसा कि उसका हक़ है, तो अल्लाह तुम को इस तरह से रोज़ी अता करेगा जिस तरह से कि परिंदों को अता करता है। और एक हदीस में है कि जो शख़्स अल्लाह की तरफ़ बिल्कुल मुतवज्जोह हो जाए तो अल्लाह तआ़ला उसकी हर ज़रूरत पूरा करते

हैं और इस तरह रोज़ी पहुंचाते है कि जिसका उसको गुमान भी नहीं होता। *(अहयाउल उलूम जिल्द 4)*

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का अल्लाह पर तवक्कल

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को जब नमरूद बादशाह ने आग में डाला था तो हज़रत जिब्राइल ने आकर दरख़्वास्त की कि मेरे क़ाबिल कोई ख़िदमत हो तो हुक्म फ़रमाईये। आप ने फ़रमाया नहीं तुम से मेरी कोई हाजत वाबस्ता नहीं है, मेरा अल्लाह मुझको काफी है। *(अहया उल उलूम)*

आप सल्ल॰ का अल्लाह पर तवक्कल

हज़रत जाबिर रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल॰ क़बीला मुहारिब और ग़तफ़ान से नख़्ला मुक़ाम पर जंग कर रहे थे जब उन लोगों ने मुसलमानों को ग़फ़लत में देखा तो उनमें एक आदमी जिसका नाम ग़वास बिन हारिस था वह आया और तलवार लेकर हुज़ूर सल्ल॰ के सिर पर खड़ा होकर कहने लगा आप को मुझसे कौन बचाएगा? हुज़ुर सल्ल॰ ने फ़रमाया अल्लाह! यह सुनते ही उसके हाथ से तलवार नीचे गिर गई। हुज़ूर सल्ल॰ ने तलवार उठाकर उससे पूछा कि अब तुम को मुझसे कौन बचाएगा? उसने कहा आप तलवार के बेहतरीन लेने वाले बन जाईये यानि मुझे माफ़ कर दीजिए। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि क्या तुम उसकी गवाही देते हो कि अल्लाह के सिवा कोई माअ़बूद नहीं है। उसने कहा नहीं अलबत्ता मैं आप से अहद करता हूँ कि मैं कभी आप से नहीं लड़ूँगा

और जो लोग आप से लड़ेंगे उनका भी साथ नहीं दूँगा। चुनाँचे हुज़ूर सल्ल. ने उसे छोड़ दिया। उसने अपने साथियों से जाकर कहा कि मैं तुम्हारे पास ऐसे आदमी के पास से आ रहा हूँ जो लोगों में से बेहतरीन हैं। *(अलबदाया व अलनिहाया)*

हज़रत अबू-बक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ का अल्लाह पर तवक्कल

ग़ज़वा-ए-तबूक मशहूर ग़ज़वा है और नबी-ए-करीम सल्ल॰ का आख़िरी ग़ज़वा है। इस ग़ज़वा में आप सल्ल॰ ने चंदा फ़रमाया तो हज़रत अबू-बक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ अपने घर का सारा सामान ले आए तो आप सल्ल॰ ने फ़रमाया कि अबू-बक्र! घर वालों के लिए क्या छोड़ा? तो हज़रत अबू-बक्र रज़ि॰ ने फ़रमाया कि अल्लाह और उसके रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को छोड़ आया। *(इस्लाम ख़र्मी)*

हज़रत अली रज़ि॰ का अल्लाह पर तवक्कल

हज़रत अबू मजलू रह॰ कहते हैं क़बीला मुराद के एक आदमी हज़रत अली रज़ि॰ के पास आए। हज़रत अली रज़ि॰ नमाज़ पढ़ रहे थे। नमाज़ के बाद हज़रत अली रज़ि॰ की ख़िदमत में उसने अर्ज़ किया कि क़बीला मुराद के कुछ लोग आप को क़त्ल करना चाहते हैं इसलिए आप अपनी हिफ़ाज़त का इंतिज़ाम कर लें। हज़रत अली रज़ि॰ ने फ़रमाया कि हर आदमी के साथ दो फ़रिश्ते मुक़र्रर हैं जो हर बला से उसकी हिफ़ाज़त करते हैं जो उसके मुक़द्दर में लिखी हुई

न हो और तक़दीर का जब वक़्त आ जाता है तो यह फ़रिश्ते उसके और तक़दीर के दरम्यान से हट जाते हैं। बेशक मुक़र्रराह वक़्त एक मज़बूत ढाल है। *(कंज़ुल आमाल जिल्द 1 सफ़हा 88)*

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद का अल्लाह पर तवक्कल

हज़रत अबू ज़बिया कहते हैं कि अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि॰ मर्ज़ उल वफ़ात में मुब्तिला हुए तो हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ि॰ उनकी अयादत के लिए तशरीफ़ लाए और फ़रमाया आप को क्या शिकायत है। हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि॰ ने कहा अपने गुनाहों की शिकायत है। हज़रत उस्मान रज़ि॰ ने फ़रमाया आप क्या चाहते हैं? हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद ने कहा मैं अपने रब की रहमत चाहता हूँ। हज़रत उस्मान रज़ि॰ ने कहा क्या मैं आप के लिए तबीब को न बुला लाऊँ? हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि॰ ने कहा तबीब ने ही यानि अल्लाह ही ने मुझे बीमार किया है। हज़रत उस्मान रज़ि॰ ने कहा क्या मैं आपके लिए बैतुलमाल में से अतिया मुक़र्रर न कर दूँ? हज़रत अब्दुलाह रज़ि॰ ने कहा मुझे उसकी ज़रूरत नहीं है। हज़रत उस्मान रज़ि॰ ने फ़रमाया वह अतिया आप के बाद आप की बेटियों को मिल जाएगा। हज़रत अब्दुल्ला ने कहा क्या आप को मेरी बेटियों पर फ़ुक़र का डर है। मैंने अपनी बेटियों को कह रखा है कि वह हर रात को सूराः वाक़िआ पढ़ लिया करें। मैंने हुज़ूर सल्ल॰ को यह फ़रमाते हुए सुना है कि जो आदमी हर रात सूराः वाक़िआ पढ़ेगा उसपर कभी फ़ाक़ा नहीं आएगा। लिहाज़ा अतिया की कोई ज़रूरत नहीं है। *(तफ़सीर इब्ने कसीर जिल्द 4 सफ़हा 281)*

हज़रत हसन बिन सुफ़ियान रज़ि॰ का अल्लाह पर तवक्कल करना और गवर्नर की तरफ़ से दीनार का हदिया मिलना

हज़रत हसन इब्ने सुफ़ियान रह॰ एक बुज़ुर्ग थे एक मर्तबा वह और उनके दो साथी इल्मे हदीस और दीन की तलब में निकले। एक शहर में क़याम किया जो थोड़ा बहुत अपने पास था सब ख़त्म हो गया। उसके बाद जब फ़ाक़ों पर फ़ाक़े आने लगे तो उन्होंने तय किया कि हम ऐसी हालत में हैं कि हमारे लिए सवाल जायज़ है। मश्विरा से तय हुआ कि हसन बिन सुफ़ियान जाएं और किसी से कुछ मांग कर लाएं। यह बेचारे निकले लेकिन उन्हें शर्म आई कि किसी मख़्लूक़ से सवाल करें। तन्हाई का गोशा तलाश किया और सलातुल हाजत पढ़कर अल्लाह से दुआ की और वापिस आ गए और साथियों से कहा कि मैं तो किसी से सवाल न कर सका। मैंने दुआ की है और तुम लोग भी अल्लाह से दुआ करो। अल्लाह के करम से रात को उसी शहर के गर्वनर ने ख़्वाब में देखा कि कोई शख़्स उसको आसमान की तरफ़ से बड़े गुस्से में भरे हुए नेज़ा उसके हाथ में है और वह नेज़े का रूख़ गर्वनर की तरफ़ करके डांट कर कह रहा है: हसन बिन सुफ़ियान और उसके साथियों की ख़बर ले इससे पहले कि उन बेचारों का ख़ात्मा हो जाए। ख़्वाब में यह भी इशारा मिला कि वह शहर की किसी मस्जिद में हैं। गर्वनर ने उठते ही शहर में उनकी तलाश शुरू कराई और जब हुकूमत के बाअज़ कारकुनों ने उन लोगों को तलाश कर लिया और पा लिया और गर्वनर की तरफ़ से कुछ दीनार उन को पहुंचाए और उनसे कहा कि

गर्वनर साहब आप से मिलना चाहते हैं। तो यह अल्लाह के बंदे ख़ामोशी से ग़ायब हो गया। *(तज़्किराह मौलाना यूसुफ़ सफ़्हा 168)*

एक बुज़ुर्ग का अल्लाह पर तवक्कल और लालच करने की वजह से हलाल रोज़ी से महरूम हो जाना

एक बुज़ुर्ग कहते हैं कि मैं और मेरा एक साथी पहाड़ में रहते थे इबादत ही मशग़ला था। मेरे साथी का गुज़र घास वग़ैरह पर था और मेरे लिए हक़तआला ने यह इंतिज़ाम फ़रमा रखा था कि एक हिरनी रोज़ाना मेरे क़रीब आकर टाँगे चीर कर ख़ड़ी हो जाती मैं उसका दूध पी लिया करता। वह चली जाती। बहुत ज़माना इसी तरह गुज़र गया कि वह हिरनी रोज़ आ जाया करती और मैं उसका दूध पीता था। मेरे साथी के क़याम की जगह उस पहाड़ में मुझ से दूर थी एक दिन वह मेरे पास आया और कहने लगा कि एक क़ाफ़िला यहाँ क़रीब आकर ठहरा है चलो क़ाफ़िला वालों के पास चलें वहां शायद कुछ दूध और उसके अलावा कुछ खाने की चीज़ें मयस्सर आ जाएं। मैंने अव्वल तो बहुत इंकार किया लेकिन जब उसने बहुत इसरार किया तो मैं भी उसके साथ हो लिया। हम दोनों क़ाफ़िला में पहुंचे उन लागों ने हमें खाना खिलाया। हम खाने से फ़ारिग़ होकर अपनी अपनी जगह वापिस आ गए। उसके बाद मैं हमेशा उस हिरनी के वक़्त पर उसका इंतिज़ार करता मगर उसका आना बंद हो गया। कई दिन के इंतिज़ार के बाद मैं समझा कि उस गुनाह की नहूसत से वह हलाल रोज़ी जिसकी वजह से मैं बेफ़िक्र था बंद हो गई। *(रोज़ अर रियाहीन)*

फ़ायदा

तवक्कल के मायने में बहुत सारे अक्वाल हैं। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि अल्लाह पर तवक्कल का मतलब है कि उसके ग़ैर से कोई उम्मीद न रखी जाए। बाअज़ के नज़दीक तवक्कल तक़दीर ख़ुदावंदी पर राज़ी और ख़ुश होने का नाम है। बाअज़ के नज़दीक तवक्कल सब दरों को छोड़ कर दरबारे ख़ुदावंदी का फ़क़ीर बन जाने का नाम है। लेकिन मुल्ला अली क़ारी रह॰ ने शरह मिश्कात में लिखा है कि असबाब का इख़्तियार करना तवक्कल के मनाफ़ी नहीं है और अगर कोई ख़ालिस तवक्कल का इरादा करे तो उसमें भी कोई मज़ायक़ा नहीं है बशर्ते कि मुस्तक़ीम अलहाल हो असबाब छोड़कर परेशान न हो बल्कि अल्लाह के सिवा किसी दूसरे का ख़्याल भी उसको न आए और जिन हज़रात ने असबाब के छोड़ने की मज़म्मत फ़रमाई उसकी वजह यह है कि लोग उसका हक़ अदा नहीं करते बल्कि दूसरे लोगों के तोशादानों पर निगाह रखते है। इसलिए अल्लाह पर तवक्कल करने वालों के लिए बहुत सी चीज़ें ज़रूरी हैं सबसे पहले तवक्कल में कामिल ईमान होना ज़रूरी है। जैसे हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम और आप सल्लललाहू अलैहि व सल्लम और हज़रत अबू-बक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ और हज़रत अली रज़ि॰ और हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि॰ के वाक़िआत से मालूम हुआ कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने फ़रिश्तों की मदद न ली बल्कि कह दिया कि मेरा अल्लाह मुझ को काफ़ी है। इसी तरह आप सल्ल॰ ने भी कहा है कि मेरा अल्लाह मुझको बचाएगा इसी तरह हज़रत अबू-बक्र सिद्दीक़ ने भी कहा था कि मैं घर में अल्लाह को छोड़ कर आया हूँ यानि मेरा अल्लाह मुझको काफ़ी है इसी तरह हज़रत अली रज़ि॰ ने भी कहा था कि मुक़द्दर में

अगर कोई चीज़ अल्लाह ने तय कर रखी है तो उसको कोई हटा नहीं सकता और अगर मुक़द्दर में कोई तकलीफ़ नहीं लिखी है तो अल्लाह के सिवा कोई तकलीफ़ पहुँचा नहीं सकता। इसी तरह अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि॰ ने भी हज़रत उस्मान रज़ि॰ से कह दिया था कि तुम को मेरी बेटियों का डर है मुझे यक़ीन है कि अल्लाह मेरे घर में कभी फ़ाक़ा नहीं लाएगा। इसलिए कि मैंने अपनी बेटियों को सूराः वाक़िआ सिखा दी है। इस लिए कामिल ईमान होना ज़रूरी है। क्योंकि जितना ईमान ज़्यादा मज़बूत होगा उतना ही अल्लाह पर तवक्कल ज़्यादा होगा और दूसरा तवक्कल करने वालों के अंदर सबर और क़नाअत का माद्दा ज़रूरी है जैसे हसन बिन सुफ़ियान के वक़िआ से मालूम हुआ कि जब खाना ख़त्म हो गया तो फ़ाक़ों पर फ़ाक़ा किये लेकिन किसी से सवाल नहीं किया बल्कि सलातुल हाजत पढ़कर अल्लाह से मांगा हालांकि उनके लिए सवाल करना जायज़ भी था इस के बरख़िलाफ़ आज हमारा हाल यह है कि हम तवक्कल तो करते हैं लेकिन ज़रा तकलीफ़ आने पर या ज़रा भूख लगने पर सबर नहीं करते बल्कि लोगों से सवाल करने लगते हैं। जिसकी वजह से अल्लाह की मदद से महरूम हो जाते हैं और लोगों से सवाल करने पर सूरत के एतबार से उस वक़्त कुछ मिल जाता है लेकिन उसकी नहूसत से अल्लाह तआला के उस ईनाम से महरूमी हो जाती है जो हदीस में हमारे नबी सल्ल॰ ने फ़रमाई है कि जो शख़्स भूखा हो या मोहताज हो और लोगों से उसको छिपाए और अल्लाह तआला से मांगे तो अल्लाह तआला एक साल के लिए हलाल रोज़ी का दरवाज़ा उस पर खोल देते है। (कंजुलआमाल) और एक दूसरी हदीस में हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि॰ हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद नक़ल करते है कि जो शख़्स भूखा हो या हाजतमंद

हो और वह लोगों से अपनी हाजत को पोशिदा रखे तो अल्लाह तआला पर यह हक है कि उसको एक साल की रोज़ी हलाल माल से अता फरमाए। (मिश्कात) तो इन दोनों हदीसों से मालूम हुआ कि जो भूखा हो या किसी मुसीबत में मुब्तिला हो या किसी चीज़ की हाजत हो और वह शख़्स लोगों से छिपाए और सिवाए अल्लाह की ज़ात के किसी पर नज़र न करे और सिर्फ उसी अल्लाह से मांगे तो अल्लाह एक साल की हलाल रोज़ी का वादा फरमाते हैं। जैसे हसन बिन सुफियान के वाक़िआ से मालूम हुआ कि भूख लगने पर सबर किया और दो रकअत पढ़कर अल्लाह से मांगा तो अल्लाह ने किस तरह उनकी रोज़ी का इंतिज़ाम किया कि गर्वनर के ख़्वाब में बताया कि हसन बिन सुफियान और उनके दो साथियों की ख़बर ले इससे पहले कि उन बेचारों का ख़ात्मा हो जाए, तो गर्वनर ने उनको कुछ दीनार पहुंचा दिए। तो हम भी अल्लाह के दीन की मेहनत करते करते अगर हमारे घरों में फाक़ा आ जाए या हम किसी इलाक़ा या किसी मुल्क में दावत की बुनियाद पर गए हों और वहां जाकर हमारा ख़र्चा ख़त्म हो जाए या चोरी हो जाए या किसी वजह से गुम हो जाए तो हम सब से पहले दो रकअत पढ़कर अल्लाह ही से मांगें और उस पर भरोसा करें तो इंशाल्लाह ज़रूर ग़ैब से मदद होगी। जैसे सहाबा की एक जमाअत को जिस में तीन सौ सहाबी थे। अल्लाह के नबी सल्ल० ने साहिल समुंद्र की तरफ भेजा था और उनको खजूरों को एक थैला ज़ादे-सफर के लिए दिया था जब वह खजूर ख़त्म हो गई तो सहाबा ने फाक़ा शुरू किया। सबर किया और दरख़्तों के पत्ते तोड़कर पानी में भिगो कर खाना शुरू किया। तो अल्लाह ने उनके लिए ग़ैब से रोज़ी का ऐसा इंतिज़ाम किया कि एक मछली जिसको अंबर कहते हैं और वह भी एक टीले जैसी बड़ी

थी अल्लाह ने भेजी जिसका गोश्त सहाबा ने एक महीना तक खाया। सहाबा ने उसके टुकडे बैल जितने बड़े काटते थे और उसकी आंख इतनी बड़ी थी कि सहाबा रज़ि० बड़े बड़े मटके भरकर चर्बी निकालते थे और हज़रत अबू-उबैदा रज़ि० जो इस जमाअत के अमीर थे उन्होंने उस मछली की आंख के हलक़ा से चरबी निकालने के लिए तेरह आदमी दाख़िल किए थे। *(कंज़ुल आमाल जिल्द 8 सफ़हा 52)*

इसलिए तवक्कल करने वालों के लिए दूसरी चीज़ सबर और क़नाअत ज़रूरी है और तीसरी चीज़ तवक्कल करने वालों के अंदर जो ज़रूरी है वह यह है कि उसके दिल में हिर्स और लालच नाम को भी न होनी चाहिए। वर्ना लालच करने वाला हमेशा महरूम होता है जैसे बुज़ुर्ग के वाक़िआ से मालूम हुआ कि रोज़ाना अल्लाह की तरफ़ से एक हिरनी आया करती थी और बिना मेहनत के रोज़ी मिलती थी लेकिन दिल में लालच पैदा हो गया कि चलो क़ाफ़िला वालों के पास दूध के अलावा कुछ और खाने की चीज़ मिल जाएगी तो अल्लाह की दी हुई रोज़ी पर क़नाअत न की बल्कि लालच पैदा हुआ तो अल्लाह ने वह रोज़ी भी बंद कर दी। जो बिना मेहनत के मिलती थी। इसी तरह हम भी अल्लाह की तरफ़ से जो रोज़ी मिलती है उस पर क़नाअत करें। ज़्यादा रोज़ी की फ़िक्र में अगर चले गए तो फिर जो मिलती है वह भी ख़त्म हो जाएगी। जैसे अरबी का एक मक़ूला है:-***तलबुल कुल्लि फ़ोतुल कुल्लि*** यानि सब की तलब करना सब को फ़ौत कर देता है। तो तवक्कल करने वालों के लिए लालच से बचना बहुत ज़रूरी है। अल्लाह पाक सब को सही तवक्कल करने वाला बना दे और जो रोज़ी अल्लाह ने हम को दी है उसी पर क़नाअत की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और लालच से हमारी हिफ़ाज़त फ़रमाए। आमीन।

नौवी सिफ़त

दूसरों के ऐब छिपाना

हदीस शरीफ़

हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि जो शख़्स किसी मुसलमान की पर्दापोशी करता है (यानि ऐब को छिपाता है) तो अल्लाह तआला क़यामत के दिन उसकी पर्दापोशी फ़रमाएगा यानि उसके ऐब को छिपाएगा और जो शख़्स किसी मुसलमान की पर्दादरी करता है यानि उसके ऐब को ज़ाहिर करता है तो अल्लाह जल्लेशान्हू उसकी पर्दादरी फ़रमाता है यानि उसके ऐब को ज़ाहिर करते हैं। हत्ताकि घर बैठे उसको रूसवा कर देता है। *(अलतरग़ीब व अलतरहीब)*

हज़रत उमर रज़ि0 का एक बूढ़े मियां के ऐब को छिपाना और बूढ़े मियाँ का दोबारा उस काम को न करना

हज़रत साअ़दी रह॰ कहते हैं कि एक मर्तबा हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि॰ बाहर तश्रीफ़ ले गए उनके साथ हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि॰ भी थे उन्हें एक जगह आग की रौशनी नज़र आई। यह उस रौशनी की तरफ़ चल पड़े। यहाँ तक कि एक घर में

दाख़िल हो गए। यह आधी रात का वक़्त था अंदर जाकर देखा कि घर में चिराग़ जल रहा है, वहाँ एक बूढ़े मियां बैठे हुए हैं और उनके सामने कोई पीने की चीज़ रखी हुई है और एक बांदी उन्हें गाना सुना रही है। उन बूढ़े मियां को उस वक़्त पता चला जब हज़रत उमर रज़ि॰ उनके पास पहुँच गए। हज़रत उमर रज़ि॰ ने फ़रमाया आज रात जैसा बुरा मंज़र मैंने कभी नहीं देखा कि एक बूढ़ा अपनी मौत का इंतिज़ार कर रहा है। उस बूढ़े ने सिर उठाकर कहा आप की बात ठीक है लेकिन अमीरूल मोमीनीन आप ने जो किया है वह इससे भी ज़्यादा बुरा है। आप ने घर में घुस कर तजस्सुस किया है। हालांकि अल्लाह ने तजस्सुस से मना फ़रमाया है और आप इजाज़त के बिना घर के अंदर आ गए हैं। हज़रत उमर रज़ि॰ ने कहा आप ठीक कह रहे हैं। फिर हज़रत उमर रज़ि॰ ने दांत से कपड़ा पकड़ कर रोते हुए उसके घर से बाहर निकले और फ़रमाया अगर उमर को उसके अल्लाह ने माफ़ न फ़रमाया तो उसे उसकी माँ गुम करे। वह बूढ़ा यह समझता था कि वह अपने घर वालों से छिप कर यह काम करता है, अब तो हज़रत उमर रज़ि॰ ने मुझे यह काम करते हुए देख लिया है लिहाज़ा अब वह बिला झिझक यह काम करता रहेगा। उस बूढ़े ने एक अर्सा तक हज़रत उमर रज़ि॰ की मजलिस में आना छोड़ दिया। एक दिन हज़रत उमर रज़ि॰ बैठे हुए थे वह बूढ़ा छिपता हुआ आया और लोगों के पीछे बैठ गया। हज़रत उमर रज़ि॰ ने उसे देख लिया तो फ़रमाया उस बूढ़े को मेरे पास लाओ। एक आदमी ने जाकर उस बूढ़े से कहा जाओ अमीरूल मोमीनीन बुला रहे हैं वह बूढ़ा खड़ा हुआ उसका ख़्याल था कि हज़रत उमर रज़ि॰ ने उस रात जो मंज़र देखा था। आज उसकी सज़ा देंगे। हज़रत उमर रज़ि॰ ने फ़रमाया मेरे क़रीब आ जाओ। हज़रत उमर रज़ि॰ उसे अपने क़रीब

करते रहे यहां तक कि उसे पहलू में बिठा लिया। फिर फ़रमाया ज़रा अपना कान मेरे नज़दीक करो। हज़रत उमर रज़ि॰ ने उसके कान के साथ मुँह लगाकर कहा ग़ौर से सुनो उस ज़ात की क़सम जिसने मुहम्मद सल्ललाहु अलैहि व सल्लम को हक़ देकर और रसूल बना कर भेजा हैं मैंने उस रात तुम्हें जो कुछ करते हुए देखा वह मैंने किसी को नहीं बताया हत्ताकि हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि॰ जो उस रात मेरे साथ थे लेकिन मैंने उनको भी नहीं बताया। उस बूढ़े ने कहा ऐ अमीरूल मोमीनीन ज़रा अपना कान मेरे क़रीब करें। फिर उस बूढ़े ने हज़रत उमर के कान के साथ मुँह लगाकर कहा उस ज़ात की क़सम जिसने मुहम्मद सल्ललाहू अलैहि व सल्लम को हक़ देकर और रसूल बनाकर भेजा है मैंने भी वह काम अब तक दोबारा नहीं किया। यह सुनकर उमर रज़ि॰ ज़ोर-ज़ोर से अल्लाहु अकबर कहने लगे और लोगों को पता नहीं था कि हज़रत उमर रज़ि॰ किस वजह से अल्लाहु अकबर कह रहे हैं। *(कंज़ुल आमाल जिल्द 2 सफ़्हा 141)*

हज़रत उमर रज़ि॰ का एक साथी के ऐब को छिपाने की वजह से पूरे मजमाअ को वज़ू करवाना

हज़रत शाअबी रह॰ कहते हैं कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि॰ एक घर में थे उनके साथ हज़रत जरीर बिन अब्दुल्लाह रज़ि॰ भी थे इतने में किसी को हवा ख़ारिज हो गई। जिसकी बदबू हज़रत उमर रज़ि॰ ने महसूस की तो फ़रमाया में ताकीद करता हूँ कि जिस आदमी की हवा ख़ारिज हुई वह खड़ा हो और जाकर वज़ू कर ले। इस पर हज़रत जरीर बिन अब्दुल्लाह ने फ़रमाया ऐ अमीरूल

मोमीनीन क्या तमाम लोग वज़ू ने कर लें। इससे मक़सद भी हासिल हो जाएगा और जिसकी हवा निकली हुई है उसके ऐब पर पर्दा भी पड़ा रहेगा। हज़रत उमर रज़ि॰ ने फ़रमाया अल्लाह आप पर रहम फ़रमाए आप जाहिलियत में भी बहुत अच्छे सरदार थे और इस्लाम में भी बहुत अच्छे सरदार हैं आप ने पर्दापोशी की कैसी अच्छी तरकीब बताई। *(कंज़ुल आमाल जिल्द 2 सफ़हा 151)*

फ़ायदा

मौलाना इल्यास साहिब रह॰ के मल्फ़ूज़ात में लिखा है कि अल्लाह ने हर इंसान को दो आँखे दी हैं एक आँख अपने ऐबों को देखने के लिए दूसरी आँख दूसरों की ख़ूबियों को देखने के लिए। इस के बरख़िलाफ़ आज हमारी दोनों आँखें दूसरों के ऐबों को देखने में इस्तेमाल होती हैं जिसकी वजह से ग़ीबत वाली बीमारी ज़्यादा हो गई। क्योंकि जब आदमी किसी का ऐब देखेगा तो उसको दूसरों के सामने बयान करेगा। यह ग़ीबत बन जाएगी। इसलिए कि ग़ीबत कहते हैं किसी की ऐसी चीज़ को दूसरों के सामने बयान करना जो अगर उसके सामने बयान की जाए तो उसको बुरी लगे। इसलिए अपनी आँख को दूसरों के ऐब के देखने से बचाए और अगर कभी किसी का ऐब देख भी लिया जैसे दावत की मेहनत के लिए चार माह का चिल्ला लगाने गए थे तो किसी साथी की बुरी हरकत देख ली तो उसको अपनी बस्ती में आकर बयान न करे बल्कि उसको छिपाए। जैसे हज़रत उमर रज़ि॰ के वाक़िआ से मालूम हो गया कि जब एक साथी को शराब पीते हुए देख लिया तो उसको किसी को भी नहीं बताया बल्कि अपने साथी अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि॰ को भी नहीं बताया। उसके बरख़िलाफ़ आज हम अपने साथी की

इस्लाह उसके ऐब को सबके सामने ज़ाहिर करके करते हैं जिसकी वजह से वह साथी सब साथियों के बीच में ज़लील हो जाता है और वह आहिस्ता आहिस्ता दावत की मेहनत से कट जाता है। इसलिए ऐब को छिपाओगे तो इंशाल्लाह वह साथी दावत की मेहनत को नहीं छोड़ेगा जैसे हज़रत उमर रज़ि॰ के वाक़िआ से मालूम हुआ कि उन बूढ़े मियां ने मौत तक उस बुरे काम को नहीं किया और काम में जुड़े रहे। इस तरह अगर किसी पर हमारे साथी का ऐब खुल जाए और बेइज़्ज़ती होती हो तो उसके ऐब को छिपाने की फ़िक्र करे। जैसे हज़रत जरीर बिन अब्दुल्लाह के वाक़िआ से मालूम हुआ कि अपने साथी के ऐब को छिपाने के लिए उन्होंने हज़रत उमर रज़ि॰ को कैसी राय दी कि सब लोगों को वज़ू के लिए कहो ताकि साथी का ऐब छिप जाए। उसके बरख़िलाफ़ आज हम सब के बीच में ज़लील करने की कोशिश करते हैं और कहते हैं कि ज़लील करो ताकि दूसरी मर्तबा ऐसा न करे। इसलिए अगर हम दूसरों की इस्लाह की फ़िक्र में दूसरों के ऐबों को उछालेंगे तो अल्लाह हमें घर बैठे बदनाम और ज़लील कर देंगे। अल्लाह दूसरों के अयूब को छिपाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

आमीन।

दसवीं सिफ़त

दूसरों को अपने से अफ़ज़ल समझना और अपनी तारीफ़ करने वाले पर गुस्सा हो जाना

हज़रत उमर रज़ि॰ का हज़रत अबू-बक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ को मश्क से ज़्यादा ख़ूशबू वाला और अपने आप को घर वालों के ऊँट से ज़्यादा बिचला हुआ समझना

हज़रत जबीर बिन नफ़ीर रह॰ कहते हैं कि कुछ लोगों ने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि॰ को से कहा ऐ अमीरूल मोमीनीन हम ने आप से ज़्यादा इंसाफ़ का फ़ैसला करने वाला और हक़ बात कहने वाला और मुनाफ़िक़ों पर आप से ज़्यादा सख़्त आदमी कोई नहीं देखा। लिहाज़ा हुज़ूर सल्ल॰ के बाद आप तमाम लोगों से ज़्यादा बेहतर हैं। हज़रत औफ़ बिन मालिक रह॰ ने कहा कि तुम लोग ग़लत कह रहे हो हमने भी वह आदमी देखा है जो हुज़ूर सल्ल॰ के बाद हज़रत उमर रज़ि॰ से बेहतर है। हज़रत उमर रज़ि॰ ने पूछा ऐ औफ़! वह कौन है? उन्होंने कहा अबू-बक्र रज़ि॰। हज़रत उमर रज़ि॰ ने फ़रमाया हज़रत औफ़ ठीक कह रहे हैं तुम सब ग़लत कह रहे हो। अल्लाह की क़सम हज़रत अबू-बक्र मश्क से ज़्यादा पाकीज़ा ख़ूशबू वाले थे और मैं तो अपने घरों के ऊँट से ज़्यादा बिचला हुआ हूँ। *(कंज़ुलआमाल जिल्द 4 सफ़हा 350)*

हज़रत ज़ियाद बिन अलाक़ा रह० कहते हैं हज़रत उमर रज़ि० ने देखा कि एक आदमी कह रहा है यह (यानि हज़रत उमर रज़ि०) हमारे नबी सल्ल० के बाद इस उम्मत में सबसे बेहतरीन हैं यह सुनकर हज़रत उमर रज़ि० उसे कोड़े से मारने लगे और फ़रमाने लगेः यह मनहूस ग़लत कह रहा है, हज़रत अबू-बक्र रज़ि० मुझसे मेरे बाप से तुझ से तेरे बाप से बेहतर हैं। *(कंज़ुल आमाल जिल्द 4 सफ़हा 350)*

हज़रत अली रज़ि० का अपनी तारीफ़ करने वाले पर ग़ुस्सा हो जाना

हज़रत अबू-ज़नाद रह० कहते हैं कि एक आदमी ने हज़रत अली रज़ि० से कहा ऐ अमीरूल मोमीनीन क्या बात है कि मुहाजिरीन और अंसार ने हज़रत अबू-बक्र को आगे कर दिया हालांकि आप उनसे ज़्यादा फ़ज़ाईल वाले और उनसे पहले इस्लाम लाने वाले हैं और आप को बड़ी सबक़त हासिल है? हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया अगर तू क़ुरैश क़बीला का है तो मेरे ख़्याल में तू क़ुरैश क़बीला की शाख़ हिस्सा है। उसने कहा जी हाँ। हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया अगर मोमिन अल्लाह की पनाह में न होता तो मैं तुझे क़त्ल ज़रूर कर देता और अगर तू ज़िंदा रहा तो तुझे इस तरह डराऊँगा कि तुझे उससे बच निकलने का रास्ता नहीं मिलेगा। तेरा नास हो हज़रत अबू-बक्र सिद्दीक़ को चार सिफ़ात में मुझ से सबक़त हासिल है। एक यह कि उन्हें हुज़ूर सल्ल० की ज़िंदगी में इमाम बनाया गया। दूसरी यह कि उन्होंने मुझसे पहले हिजरत की और तीसरी यह कि हिजरत के मौक़ा पर वह हुज़ूर सल्ल० के साथ ग़ार में थे और चौथी यह कि उन्होंने मुझसे पहले इस्लाम को ज़ाहिर फ़रमाया। तेरा नास हो! अल्लाह ने क़ुरआन में तमाम लोगों की मज़म्मत की है और हज़रत अबू-बक्र सिद्दीक़ रज़ि० की तारीफ़ बयान

की है। अल्लाह ने फ़रमाया कि अगर तुम अल्लाह की मदद न करोगे तो अल्लाह आप की मदद उस वक़्त कर चुका है जब आप को काफ़िरों न जिलावतन कर दिया था जबकि दो आदमियों में एक आप थे जिस वक़्त कि दोनों ग़ार में थे जब आप सल्ल॰ अपने हमराही से फ़रमा रहे थे कि तुम कुछ ग़म न करो यक़ीनन अल्लाह हमारे हमराह है। *(कंजुल आमाल जिल्द 4 सफ़हा 355)*

हज़रत उम्मे मूसा रज़ि॰ फ़रमाती हैं कि हज़रत अली रज़ि॰ को यह खबर मिली कि इब्ने सबा उन्हें हज़रत अबूबक्र और हज़रत उमर रज़ि॰ से अफ़ज़ल क़रार देता है तो हज़रत अली रज़ि॰ ने उसे क़त्ल कर देने का इरादा किया तो लोगों ने उनसे कहा क्या आप ऐसा आदमी को क़त्ल करना चाहते हैं जो आपकी ताज़ीम करता है और आपको दूसरों से अफ़ज़ल क़रार देता है। हज़रत अली रज़ि॰ ने फ़रमाया अच्छा इतनी सज़ा तो ज़रूरी है कि मैं जिस शहर में रहता हूँ वह उसमें नहीं रह सकता। चुनाँचे उसे मुल्क बदर करके मुल्क शाम भेज दिया। *(हुलियातुल औलिया जिल्द 8 सफ़हा 253)*

फ़ायदा

आज हमारी आदत बन चुकी है कि जो लाग हमारी तारीफ़ करते हैं वह हम को अच्छे लगते हैं और जो हमारी बुराई करते हैं वह हम को अच्छे नहीं लगते। लेकिन सहाबा के अंदर यह सिफ़त थी कि जो उनकी तारीफ़ करता था या उनको दूसरों से अफ़ज़ल बताता था तो वह उस पर गुस्सा हो जाते थे। जैसे हज़रत उमर रज़ि॰ के वाक़िआ से मालूम हुआ कि कुछ लोगों ने उनकी तारीफ़ की कि हुज़ूर सल्ल॰ के बाद इंसाफ़ का फ़ैसला करने वाले हक़ बात कहने वाले मुनाफ़िक़ों पर सख़्त हज़रत उमर रज़ि॰ के सिवा कोई आदमी नहीं होगा लिहाज़ा हुज़ूर सल्ल॰ के बाद हज़रत उमर रज़ि॰ सबसे बेहतर हैं तो उसपर औफ़ बिन मालिक रज़ि॰ ने कहा कि नहीं

हुज़ूर सल्ल. के बाद हज़रत अबू-बक्र सिद्दीक़ बेहतर हैं। तो हज़रत उमर रज़ि. बजाए औफ़ बिन मालिक रज़ि. पर गुस्सा होने के उन लोगों पर गुस्सा हो गए जो उनको अफ़ज़ल बताते थे। लेकिन आज हमारा हाल यह है कि जो हमारे ख़िलाफ़ कहता है हम उससे नफ़रत करते हैं और जो हमारी तारीफ़ करता है चाहे वह झूठी ही तारीफ़ क्यों न हो हम उससे मुहब्बत करते हैं यह इसलिए है कि आज हम अपनी तारीफ़ को अच्छी चीज़ समझते हैं और सहाबा रज़ि. अपनी तारीफ़ को अच्छी चीज़ नहीं समझते थे। बल्कि अपने आपको कमतर और छोटा समझते थे और दूसरों को अपने से अफ़ज़ल समझते थे इसलिए हज़रत उमर रज़ि. ने उन लोगों के सामने कहा कि हज़रत अबू-बक्र सिद्दीक़ तो मश्क से ज़्याद खुशबू वाले और मैं तो अपने घरों के ऊँट से बिचला हूँ। इसी तरह अगर हमको कोई हमारे बड़ों से अफ़ज़ल बताए कि अमीर के लायक़ तो तुम थे जैसे हमारी बस्ती में अमीर ज़िम्मादार बनाने का मसला आया और हमारी बस्ती में हम पुराने माने जाते हैं और हमारी कुर्बानियां भी ज़्यादा हैं और दूसरों की कम हैं और लोगों ने मशिवरा से दूसरे को अमीर बना दिया तो आदमी की शक्ल में शैतान बनकर हमारे पास आएगा और हमको दूसरों से अफ़ज़ल बताएगा और हमारी तारीफ़ के पुल बांधेगा और कहेगा कि अमीर के लायक़ तुम थे लेकिन फ़लां को अमीर बना दिया। तो उस वक़्त हमें उन लोगों की बातों में आकर इमारत का ओहदा लेने के लिए झगड़े की सूरत नहीं बनानी चाहिए बल्कि अपने आप को छोटा समझते हुए हमें उनके सामने अपने अमीर के फ़ज़ाइल बयान करने चाहिए ताकि उनके दिलों में वक़्त के अमीर की क़द्र आए और हमारी तारीफ़ के बजाए हमारे अमीर की तारीफ़ करे। जैसे हज़रत अली रज़ि. के वाक़िआ से मालूम हुआ कि एक आदमी ने हज़रत अली रज़ि. से कहा मुहाजिरीन व अंसार ने हज़रत अबू-बक्र को कैसे आगे बढ़ा दिया, हालांकि आप उनसे

ज़्यादा फ़ज़ाईल वाले हैं, आप उनसे पहले इस्लाम लाने वाले हैं। तो इसपर हज़रत अली रज़ि॰ ने बजाए ख़ुश होने के क्या कहा? कि अगर मोमिन अल्लाह की पनाह में न होता तो मैं तुझ को क़त्ल कर देता तेरा नास हो हज़रत अबू-बक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ को चार सिफ़ात में मुझसे सबक़त हासिल है। चार चीज़ों में मुझ से बड़े हुए हैं पहली यह कि उनको हुज़ूर सल्ल॰ की ज़िंदगी में इमाम बनाया गया। दूसरी यह कि उन्होंने मुझसे पहले हिजरत की, तीसरी यह कि वह हिजरत के मौक़ा पर हुज़ूर सल्ल॰ के साथ ग़ार में मौजूद थे और चौथी यह कि उन्होंने मुझसे पहले इस्लाम ज़ाहिर फ़रमाया। तेरा नास हो अल्लाह ने क़ुरआन में तमाम लोगों की मज़म्मत बयान की है और हज़रत अबू-बक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ की तारीफ़ की है। लेकिन आज हमारा हाल यह है कि जहाँ लोग हमारी तारीफ़ करने लगते हैं तो हम यों समझते हैं कि चलो लोग तो हमारे साथ हैं बड़ा अच्छा मौक़ा है इमारत हासिल करने का और बजाए अपने साथियों को समझाने के हम उनका ज़ेहन ख़राब कर देते हैं। जिसकी वजह से झगड़े की सूरत बन जाती है और इसकी वजह से दीन का बहुत बड़ा नुक़सान हो जाता है। इसलिए जो लोग हम को दूसरों से अफ़ज़ल बताते हैं तो हम बजाए ख़ुश होने के और उनकी हाँ में हाँ मिलाने के हम उन पर ग़ुस्सा हो जाएं। तो इंशाल्लाह कभी वह ऐसी बातें नहीं करेंगे। जैसे हज़रत अली रज़ि॰ को यह ख़बर मिली कि इब्ने सबा मेरी तारीफ़ करता है और मुझ को हज़रत अबू-बक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ और हज़रत उमर रज़ि॰ से ज़्यादा अफ़ज़ल क़रार देता है, तो हज़रत अली रज़ि॰ ने उसे क़त्ल कर देने का इरादा किया तो लोगों ने उनसे कहा कि आप ऐसे आदमी को क़त्ल करना चाहते हैं जो आप की ताज़ीम करता है और आप को दूसरों से अफ़ज़ल क़रार देता है तो हज़रत अली रज़ि॰ ने क्या फ़रमाया? अच्छा उसे इतनी सज़ा तो ज़रूर मिलनी चाहिए कि जिस शहर में मैं रहता हूँ वह उसमें नहीं रहेगा।

चुनाँचे उसे मुल्क बदर करके मुल्क शाम भेज दिया। बस अल्लाह तआ़ला हम सब को और पूरी उम्मत को इन बातों पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। (आमीन)

बंदा अबू अलकलाम पालनपुरी (वाधना)
ख़ादिम मदरसा मदीनतुलइस्लाम, बोटाड (गुजरात)

दाई की रूहानी सिफ़ात

मौलाना अबुल कलाम साहब पालनपुरी

نصیر بک ڈپو حضرت نظام الدین نئی دہلی

NASIR BOOK DEPOT (Regd.)

1-Aziza Building, Hazrat Nizamuddin, New Delhi-13 (India)

Ph:- (S) 64543342, 65652620 Tele Fax : 011-26827731

E-mail : nasirbookdepot@yahoo.com

visit us at : www.nasirbooks.com

Rs. 35/=